

गिरिकङ्गणयोनीनां नरमुण्डघटस्य च ।

करे वै यस्य चिह्नानि राजमन्त्री भवेन्नरः ॥ ३४ ॥

जिसके करतल में पर्वत, कङ्गण, योनि, नरमुण्ड और घट (घड़ा) इन्हों के निपतीत हों तो वह प्राणी राजमन्त्री होता है ॥ ३४ ॥

सूर्यचन्द्रलतानेत्रमष्टकोणत्रिकोणकम् ।

मन्दिराश्वगजेन्द्राणां चिह्ने स्यात्स सुखी नरः ॥ ३५ ॥

जिसके करतल में सूर्य, चन्द्र, लता, नेत्र, अष्टकोण, त्रिकोण, मन्दिर, घोड़ा और राज इन्हों का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी सुखी रहता है ॥ ३५ ॥

तर्जनीमूलपर्यन्तमूर्धरेखा च दृश्यते ।

राजदूतो भवेत्तस्य धर्मनाशो हि जायते ॥ ३६ ॥

जिसके करतल में ऊर्धरेखा (फेटलाइन) तर्जनी की मूल में देखी जावे तो प्राणी राजों का दूत होता है और उसके धर्म का विनाश भी होजाता है ॥ ३६ ॥

मध्यमामूलपर्यन्तमूर्धरेखा च दृश्यते ।

पुत्रपौत्रादिसम्पन्नो धनवान्स सुखी नरः ॥ ३७ ॥

जिसके करतल में ऊर्धरेखा (भाग्यरेखा) मध्यमा अङ्गुली की मूलपर्यन्त देखी जावे तो वह प्राणी पुत्र पौत्रादिकों से संपन्न होकर धनवान् होता हुआ सुखी रहता है ॥ ३७ ॥

अनामिकोर्धरेखायां व्यवसायधनागमः ।

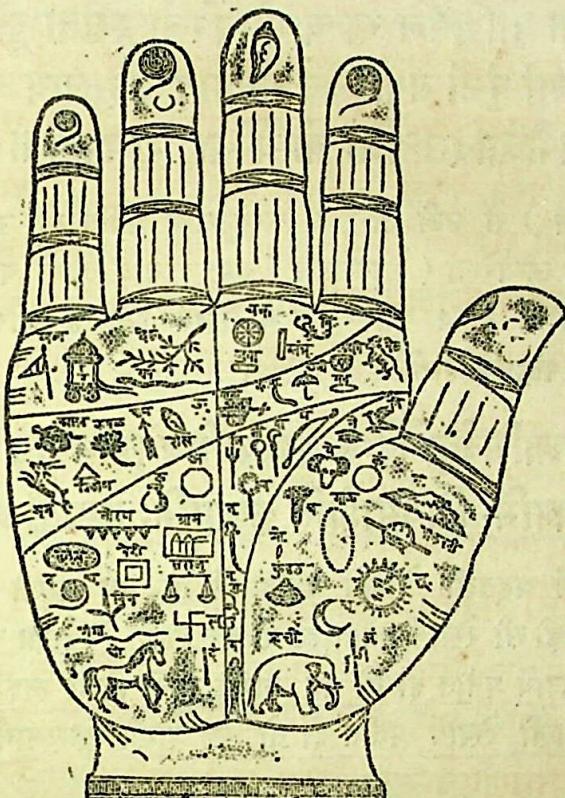
सुखदुःखेन जीवेत पुत्रपौत्रगृहादिमान् ॥ ३८ ॥

जिसके करतल में ऊर्धरेखा (भाग्यरेखा) अनामिका की मूल में प्रतीत हो तो प्राणी रोकागर से धन को पाता है और पुत्रों व पौत्रों से सम्पन्न होता हुआ गृहादिवा होकर सुख व दुःख से जीता है ॥ ३८ ॥

करमध्ये स्थिता रेखा पितुर्वशसमुद्धवः ।

पूर्णरेखा पितुर्वशोऽर्धरेखा परवंशकः ॥ ३९ ॥

जिसके करतल में पितुरेखा पूर्णरूप से अङ्कित हो तो वह प्राणी पिता के वंश से हुआ जानना चाहिये और जिसके करतल में पितुरेखा आधेरूप से प्रतीत हो तो वह प्राणी वंश से उपजा हुआ होता है ॥ ३९ ॥



मातृरेखा करे चैव एकैकं युग्ममेव च ।
एकैकमंशमादाय युग्मरेखा च दृश्यते ॥ ४० ॥

करतल के मध्य में मातृरेखा व पितृरेखा ये दो रेखायें एक में या अलग होकर विद्य-
मान रहती हैं मातृरेखा तर्जनी से उतरती हुई आयुरेखा के निचले भाग में प्रतीत होती है
और पितृरेखा तर्जनी की मूल से उतरती हुई धृगूडा की मूल के मध्यभाग में रहती है
एक एक का अंश लेकर दो रेखायें देखी जाती हैं यानी माता का रज व पिता का वीज
इन दोनों से सारा संसार उपजा है इसलिये माता व पिता की दोनों रेखायें एकही
पास रहती हैं ॥ ४० ॥

बहुरेखा भवेत्क्षेत्रः स्वल्पाभिर्धनहीनता ।
रेखायां वा मनःसौख्यं सामुद्रवचनं यथा ॥ ४१ ॥

यदि करतल के मध्य में यानी मातृरेखा व पितृरेखा के बीच में बहुतसी रेखायें प्रतीत
हों तो क्लेश होता है और यदि थोड़ीसी रेखा प्रतीत हों तो धन की हीनता होती है और
यदि साधारण रेखा यानी न बहुत बड़ी न बहुत छोटी अथवा न बहुत ज्यादः न बहुत
कमती रेखायें प्रतीत हों तो मनको सुख होता है यह सामुद्रिकशास्त्र का वचन है ॥ ४१ ॥

गता पाणितले या च सोर्ध्वरेखा स्मृता बुधैः ।
 स्त्रीणां पुंसां तथा चैव राज्याय च मुखाय च ॥
 पुत्रपौत्रादिसम्पन्ना चोर्ध्वरेखा शुभप्रदा ॥ ४२ ॥

मणिवन्ध (कब्जे) से उठी जो रेखा करतल में प्रतीत हो उसको सामुद्रिकश
 वेत्ता पणितगणों ने ऊर्ध्वरेखा (फेटलाइन) कहा है यदि स्त्रियों व पुरुषों के करतल
 ऊर्ध्वरेखा देखी जावे तो राज्य और सुख के लिये होती है और पुत्र पौत्रादिकों
 सम्पन्न करती हुई शुभदायक होती है ॥ ४२ ॥

रेखाभिर्बहुभिर्दुःखं स्वल्पाभिर्धनहीनताम् ।
रक्ताभिः श्रियमाप्नोति कृष्णाभिः प्रेष्यतां ब्रजेत् ॥ ४३ ॥

जिसके करतल में बहुतसी रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी दुःखको पाता है
 जिसके करतल में थोड़ी सी रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी निर्धनता को पाता है व जिसके
करतल में रक्तवर्ण रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी सुखी होकर लक्ष्मी को पाता है
जिसके करतल में काली रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी क्लेशभागी होकर दासत्व
पाता है ॥ ४३ ॥

अङ्गशं कुलिशं छत्रं यस्य पाणितले भवेत् ।
 तस्यैश्वर्यं विनिर्दिष्टमशीत्यायुर्भवेद्ध्रुवम् ॥
 पुत्रं प्रमूयते नारी नरेन्द्रं लभते पतिम् ॥ ४४ ॥

जिसके करतल में अङ्गश, वज्र और छाते का निशान प्रतीत हो तो उस प्राणी
 ऐश्वर्य मिलता है और निश्चय कर वह प्राणी अस्सीवर्ष की उमरवाला होता है
 यदि स्त्रीके करतल में पूर्वोक्त निशान प्रतीत हों तो वह नरेन्द्रपति को पाती हुई राजकु
 को उपजाती है ॥ ४४ ॥

धनुर्यस्य भवेत्पाणौ पङ्कजं वाथ तोरणम् ।
 तस्यैश्वर्यं च राज्यं च अशीत्यायुर्भवेद्ध्रुवम् ॥ ४५ ॥

जिसके करतल में धनुष, कमल और तोरण का निशान प्रतीत हो तो उस प्राणी
 ऐश्वर्य व राज्य प्राप्त होता है और वह प्राणी निश्चय कर अस्सीवर्ष की उमरवा
 होता है ॥ ४५ ॥

कनिष्ठायां स्थिता रेखा संख्या यावतिकाः स्मृताः ।
तावत्यः पुरुषाणां च नार्यः सन्ति विनिश्चितम् ॥ ४६ ॥

जिसके करतल में कनिष्ठा अङ्गुली के नीचे जितनी संख्यावाली रेखायें प्रतीत हों उतनी ही उन पुरुषों की स्त्रियां निश्चय होती हैं और यदि स्त्रियों की कनिष्ठा में जितनी रेखायें प्रतीत हों तो उतनेही पुरुष होते हैं ॥ ४६ ॥

करमध्यगता रेखा ध्रुवा ऊर्ध्वम्भवेद्यादि ।

नृपो वा नृपतुल्यो वा चिरस्वातोर्थवान्भवेत् ॥ ४७ ॥ आण्डरेत्व

जिसके करतल में मणिवन्ध (कब्जे) से उठी रेखा ध्रुव (पूर्ण) होकर ऊपरले भाग में चली जावे तो वह प्राणी राजा व राजा के समान तथा बहुत कालपर्यन्त विस्त्रियात होकर धनवान् होता है ॥ ४७ ॥

मत्स्यपुच्छप्रकीर्णेन विद्यावित्तसमन्वितः ।

पितुः पितामहादीनां धनं स लभते नरः ॥

पितामहस्य वा किञ्चिद्धनं च लभते ध्रुवम् ॥ ४८ ॥

जिसके करतल में मछली की पूँछ का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी विद्या व धन से संयुक्त होकर पिता वा पितामहादिकों का धन पाता है अथवा निश्चय कर पितामह के ही कुछेक धन को पाता है ॥ ४८ ॥

अयवस्य कुतो विद्या मत्स्यहीने कुतो धनम् ।

अपुच्छस्य कुतो विद्या अयवस्य कुतो धनम् ॥

ऊर्ध्वरेखाविहीनस्य कुतो राज्यं कुतो यशः ॥ ४९ ॥

जिसके करतल में यव का निशान नहीं प्रतीत हो तो उस प्राणी को विद्या कहां से मिलसक्ती है व जिसके करतल में मत्स्यरेखा न हो तो उसको कहां से धन मिलसक्ता है व जिसके करतल में मछली की पूँछ का निशान नहीं प्रतीत हो तो उसको कहां से विद्या मिलसक्ती है व जिसके करतल में यव (जौ) का निशान नहीं हो तो उसको कहां से धन मिलसक्ता है और जिसके करतल में ऊर्ध्वरेखा नहीं प्रतीत हो तो उसको कहां से राज्य व कहां से यश मिल सक्ता है ॥ ४९ ॥

एकमुद्रो भवेद्राजा द्विमुद्रो धनवान्नरः ।

त्रिमुद्रो रोगसंपन्नो बहुमुद्रो बहुप्रजः ॥ ५० ॥

जिसके करतल में एक मुद्रा का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी राजा होता है जिसके करतल में दो मुद्राओं का चिह्न प्रतीत हो तो वह प्राणी धनवान् होता है जिसके करतल में तीन मुद्रायें प्रतीत हों तो वह प्राणी रोगों से सम्पन्न होता है जिसके करतलमें बहुतसी मुद्रायें प्रतीत हों तो वह प्राणी धनी सन्तानोंवाला होता है।

तर्जनीमूलगामिन्यां रेखायां छिद्रता यदि ।

श्वाविन्मूषिकमार्जारसर्पदष्टो भविष्यति ॥ ५१ ॥

जिसके करतल में तर्जनी की मूल में गमन करती रेखा में यदि छेदसा प्रतीत हो वह प्राणी शाही, मूसा, विलार व सांप से डसा जाता है ॥ ५१ ॥

यस्य पाणितले रेखा पीवरा दृश्यते यदि ।

अविच्छिन्ना पादसौख्यं संपूर्णा च सुशोभनम् ॥ ५२ ॥

जिसके करतल में रेखा मोटी होकर यदि छिन्न भिन्न नहीं प्रतीत हो तो वह पादसौख्य (पदोन्नति) को पाता है और यदि सम्पूर्ण रेखा प्रतीत हो तो वह प्राणी सुख व सम्पन्न को पाता है ॥ ५२ ॥

कनिष्ठाङ्गलिमूले तु रेखा यावतिकाः स्थिताः ।

तावद्विवाहं जानीयाद् यथोक्तं दानिभाषिनम् ॥ ५३ ॥

जिसके करतल में कनिष्ठा अँगुली के मूल में जितनी रेखायें स्थित हों उतनेही प्राणी के व्याह होते हैं यह दानिभाषित सामुद्रिकशास्त्रवेता परिषिद्धतने कहा है ॥ ५३ ॥

कनिष्ठाङ्गलिमूले तु रेखा चोद्वाहनिश्चिता ।

कनिष्ठाधौरेखासंख्या यावती युवती तथा ॥

तावती तेन तस्यैव नारीणां स्वज्यते ध्रुवम् ॥ ५४ ॥

कनिष्ठा अँगुली के मूलदेश में विवाहरेखा निश्चित है इसलिये जिसकी कनिष्ठा अँगुली के मूलदेश से अधोभाग में जितनी रेखायें स्थित हों उतनीही उस प्राणी की स्त्रियां हैं ऐसेही स्त्रियों के करतल में कनिष्ठा के नीचे जितनी रेखायें प्रतीत हों उतनेही उन स्त्रियों के पति होते हैं ॥ ५४ ॥

कनिष्ठामूलरेखायाः परतश्च तथाहि वै ।

भवन्ति रेखास्तावत्यः पुत्राः कन्याश्च निश्चिताः ॥

कन्या द्विसुखरेखायां एकास्यायां तथात्मजः ॥ ५५ ॥

कनिष्ठा की मूल के अधोभाग में (यानी व्याह रेखा के अधोदेश में) जितनी रेखायें **पुर्णतीत हों उतनेही पुत्र व कन्यायें निश्चित होती हैं द्विसुखी रेखाओं में कन्या उपजती हैं व **पुर्णकमुखी रेखा में पुत्र पैदा होते हैं ॥ ५५ ॥****

मत्स्यपुच्छे शतं झेयं कुलिशो तु सहस्रकम् ।
पञ्चे लक्षेश्वरश्चेति शङ्खे कोटीश्वरो भवेत् ॥
मत्स्ये शतं विजानीयान्मकरे तु सहस्रकम् ॥ ५६ ॥

जिसके करतल में मब्ली की पूँछ का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी शतपति होता है व यदि वज्र का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी सहस्रपति (हजारिया) होता है यदि पद्मका निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी लक्षपति (लखपती) होता है यदि शंख का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी कोटिपति (करोड़पती) होता है यदि मब्ली का निशान प्रतीत हो तो उस प्राणी को शतपति जानना चाहिये और यदि मगर का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी हजारिया होता है ॥ ५६ ॥

रेखाभिर्बहुभिः क्लेशो रेखाहीनैर्दरिद्रिता ।
रक्षाभिः सुखमाप्नोति कृष्णाभिः क्लेशतां ब्रजेत् ॥ ५७ ॥

जिसके करतल में बहुतसी रेखायें प्रतीत हों तो उस प्राणी को क्लेश होता है यदि रेखायें हीन हों यानी बहुतही कम रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी दरिद्री होता है यदि लाल रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी सुख को पाता है और यदि काली रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी पीड़ा को पाता है ॥ ५७ ॥

अङ्कुशं कुण्डलं चक्रं यस्य पाणितले भवेत् ।
चामरं पुण्डरीकं च तस्य राज्यं विनिर्दिशेत् ॥ ५८ ॥

जिसके करतल में अङ्कुश, कुण्डल, चक्र, चमर और कमल इन्होंके निशान प्रतीत हों तो उस प्राणी को राज्य कहना चाहिये यानी वह प्राणी राज्य को पाता है ॥ ५८ ॥

ज्ञानरेखा च प्रथमा अङ्गुष्ठादनुवर्तते ।
मध्यमायां करे रेखा आयूरेखा प्रकीर्तिता ॥ ५९ ॥

आङ्गूठां के मूलदेश में टिकी हुई पहली ज्ञान रेखा होती है इसके बाद कनिष्ठा की मूल से चली मध्यमामूलपर्यन्त जो रेखा विस्तीर्ण प्रतीत होती है उसको पण्डितों ने आयुरेखा कहा है ॥ ५९ ॥

घनाङ्गुलिश्च सधनस्तिसो रेखाश्च यस्य वै ।
नृपतेः करतलगा मणिवन्धे समुत्थिताः ॥ ६० ॥

जिसकी अङ्गुलियां घनी प्रतीत हों तो वह प्राणी घनी होता है और जिसके करतल मणिवन्ध (कब्जे) से उठी तीन रेखायें प्रतीत हों यानी तीन ऊर्ध्वरेखायें देखपड़ते हों तो वह प्राणी नरपाल (राजा) होता है ॥ ६० ॥

युगमीनाङ्कितो यो वै भवेन्मन्त्रप्रदो नरः ।
वज्राकाराश्च धनिनां मत्स्यपुच्छनिभा बुधैः ॥ ६१ ॥
शङ्खातपत्रशिविकागजपद्मोपमा नृपे ।
कुम्भाङ्कुशपताकाभा मृणालाभा निधीश्वरे ॥ ६२ ॥

जिसके करतल में दो मछलियों की रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी मन्त्रों का पद्म अथवा याङ्किक होता है व जिनके करतल में वज्राकार निशान प्रतीत हों तो वे प्राणी होते हैं व जिनके करतल में मछली की पूँछ का निशान प्रतीत हो तो वे प्राणी पद्म होते हैं व जिसके करतल में शङ्ख, ब्राता, पालकी, हाथी और पद्मका निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी राजा होता है व जिसके करतल में घट (घड़), अङ्कुश, पताका (झण्डा) और कमलनाल का निशान प्रतीत हो तो वह खजांची होता है ॥ ६१ । ६२ ॥

दामाभाश्च गवाद्यानां स्वस्तिकाभा नृपेश्वरे ।
चक्रासितोमरधनुर्दन्ताभा नृपतेः करे ॥ ६३ ॥
उदूखलाभा यज्ञाद्या वेदीभाश्चाग्निहोत्रिणि ।
दापिकादेवकुल्याभास्त्रिकोणाभाश्च धार्मिके ॥ ६४ ॥

जिनके करतल में माला के आकार निशान प्रतीत हो तो वे प्राणी गोधन से होते हैं व जिसके करतल में त्रिकोणाकार निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी राजेश्वर होते हैं व जिसके करतल में चक्र, तलवार, गुर्ज, धनुष और दन्त के आकार रेखा प्रतीत हो तो वह प्राणी राजा होता है व जिनके करतल में उखली के समान रेखायें प्रतीत हों प्राणी याङ्किक होते हैं व जिसके करतल में वेदी के समान रेखा प्रतीत हो तो वह अग्निहोत्री होता है और जिसके करतल में वावली, देवनदी तथा त्रिकोणाकार निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी धार्मिक होता है ॥ ६३ । ६४ ॥

अङ्गुष्ठमूलगा रेखाः पुत्रदाः सुखदायिकाः ।

निस्स्वाश्च बहुरेखाः स्युर्निद्रव्याश्चित्तुकैः कृशैः ॥ ६५ ॥

यस्य पाणितले रेखा दीर्घकारद्धयं भवेत् ।

युग्मे मुखे सुजातश्च अयुग्मे जारजो ध्रुवम् ॥ ६६ ॥

जिसके करतल में अँगूठा की मूल में रेखायें प्रतीत हों तो उस प्राणी के लिये पुत्रदायक होकर सुखदायक होती हैं व जिसके करतल में बहुतसी रेखायें प्रतीत हों तो वे प्राणी धनहीन होते हैं व जिनकी दाढ़ी पतली प्रतीत हो तो वे प्राणी निर्धनी होते हैं व जिसके करतल में मातृरेखा व पितृरेखा ये दोनों दीर्घकार होकर आपस में जुड़ीसी प्रतीत हों तो वह प्राणी निजबंश से उपजा हुआ होता है और जो दोनों रेखायें भिन्न प्रतीत हों तो वह प्राणी निश्चय कर जारजात कहाता है ॥ ६५ । ६६ ॥

रेखास्वधःस्थिता रेखा संख्या यावतिकाः स्मृताः ।

तावांस्तु पुरुषाणान्तु पुत्रो भवति निश्चितम् ॥ ६७ ॥

रेखास्वधःस्थिता रेखा संख्या यावतिकाः स्मृताः ।

तावती पुरुषाणान्तु कन्या भवति निश्चितम् ॥ ६८ ॥

जिनके करतल में कनिष्ठा अँगुली की मूल के अधोभाग में जितनी रेखायें बड़ी व सोटी होकर प्रतीत हों उतनेही निश्चयकर उन प्राणियों के पुत्र होते हैं और जिनके करतल में कनिष्ठा अँगुली की मूल के निचलेभाग में जितनी छोटी छोटी रेखायें प्रतीत हों उतनीही उन पुरुषों की कन्यायें निश्चयकर होती हैं ॥ ६७ । ६८ ॥

करमध्यस्थितारेखा त्रयादूर्ध्वं भवेद्यदि ।

नृपो वा नृपतुल्यो वा चिरं ख्यातोर्थवान्भवेत् ॥ ६९ ॥

जिसके करतल में आयुरेखा, मातृरेखा और पितृरेखा की अपेक्षा एक दीर्घकार ऋर्धवरेखा प्रतीत हो तो वह प्राणी राजा व राजा के समान तथा बहुत कालपर्यन्त विख्यात होकर धनवान् होता है ॥ ६९ ॥

अथ पुनरपि स्त्रीकरलक्षणमाह—

मृदुमध्योन्नतं रक्तं तलं पाणयोररन्ध्रकम् ।

प्रशस्तं शस्तरेखाद्यमल्परेखं शुभप्रदम् ॥ ७० ॥

१ “अङ्गुष्ठमूलगा रेखा भ्रातृदाः सुखदायिका” (इति समीचीनःपाठः) कनिष्ठांगुलिमूलाधो-
मागे वृहत्यः पुत्ररेखाः प्रतीयन्ते श्रुदाः कन्यारेखाक्ष दृश्यन्ते तस्मान्मदुक्षपाठपवादर्तव्य इति ॥

विधवा बहुरेखेण विरेखेण दरिद्रिणी ।

भिक्षुकी सुशिराद्व्येन नारीकरतलेन वै ॥ ७१ ॥

जिसका करतल कोमल, वीचमें ऊँचा, लालबर्ण व छेदरहित होकर प्रशस्त रेखा से संयुक्त हो तो उस नारी का करतल प्रशस्त होता है और जो अल्परेखाओं से पित हो तो शुभदायक होता है व जिसके करतल में बहुतसी रेखायें प्रतीत हों तो वही विधवा होती है व जिसके करतल में रेखायें न प्रतीत हों तो वह वही दरिद्रिणी है और जिसका करतल बहुतसी नसों से घिरा हो तो वह वही भिक्षुकी (भीत वाली) होती है ॥ ७० । ७१ ॥

मत्स्येन सुभगा नारी स्वस्तिकेन च सुप्रजाः ।

पद्मेन भूपतेः पत्नी जनयेद्भूपतिं सुतम् ॥ ७२ ॥

चक्रवर्तिस्त्रियाः पाणौ नन्दावर्तप्रदक्षिणः ।

शङ्खातपत्रकमठा राजमातृत्वसूचकाः ॥ ७३ ॥

जिसके करतल में मध्यलीका चिह्न प्रतीत हो तो वह वही बड़े भागवाली होती है जिसके करतल में त्रिकोणाकार निशान प्रतीत हो तो वह वही अच्छे सन्तानों का होती है व जिसके करतल में पद्मका निशान प्रतीत हो तो वह वही रानी होकर पालक पुत्रको उपजाती है व जिसके करतल में दक्षिणावर्त मण्डल प्रतीत हो तो वही चक्रवर्ती (शाहांशाह) की रानी होती है व जिसके करतल में शङ्ख, छाता धनुष का निशान प्रतीत हो तो वह वही राजकुमारों की माता कहाती है ॥ ७२ । ७३ ॥

कुषीबलस्य पत्नी स्याच्छकटेन युगेन वा ।

चामराङ्गुशकोदण्डै राजपत्नी भवेद्ध्रुवम् ॥ ७४ ॥

अङ्गुष्ठमूलान्त्रिगत्य रेखा याति कनिष्ठिकाम् ।

यदि स्यात्पतिहन्त्री सा दूरतस्तां त्यजेत्सुधीः ॥ ७५ ॥

जिसके करतल में गाढ़े व जुवें की रेखा प्रतीत हो तो वह वही किसान की पत्नी है और यदि करतल में चमर, अंकुश और धनुष का निशान प्रतीत हो तो वह वही शचयकर रानी होती है और जिसके करतल में अँगूठा की मूल से निकलकर एक कनिष्ठाके समीप चली जाने तो वह वही पतिके मारनेवाली होती है इसलिये पण्डित उसको दूरसही त्याग करें ॥ ७४ । ७५ ॥

त्रिशूलासिगदाशक्तिदुन्दुभ्याकृतिरेखया ।

नितम्बिनी कीर्तिमती करेण पृथिवीतले ॥ ७६ ॥

जिसके करतल में त्रिशूल, तलवार, गदा, शेल और नगाड़े की आकार रेखा प्रतीत हो तो वह स्त्री पृथिवीतलमें कीर्तिवाली यानी बड़ी यशस्विनी होती है ॥ ७६ ॥

वाजिकुञ्जरश्रीवृक्षयूपेषुयवतोमरैः ।

ध्वजचामरमालाभिः शैलकुण्डलवेदिभिः ॥ ७७ ॥

शङ्खातपत्रपद्मैश्च मत्स्यस्वस्तिकसदधैः ।

लक्षणैरङ्कुशाद्यैश्च स्त्रियः स्यू राजवंज्ञभाः ॥ ७८ ॥

जिसके करतल में घोड़ा, हाथी, विलवृक्ष, यज्ञस्तम्भ, यव, गुर्ज, ध्वजा, चमर, माला, द्रपर्वत, कर्णभूषण, वेदी, शङ्ख, छाता, कपल, मद्ली, त्रिकोणाकाररेखा, उत्तमरथ और अंकुशादि ये लक्षण प्रतीतहों तो वे स्त्रियाँ राजाओं की रानियाँ होती हैं ॥ ७७।७८॥

अल्पायुषे लघुच्छन्ना दीर्घच्छन्ना महायुषे ।

शुभं तु लक्षणं स्त्रीणां प्रोक्तं तु शुभमन्यथा ॥ ७९ ॥

अङ्कुशं कुण्डलं चक्रं यस्याः पाणितले भवेत् ।

पुत्रं प्रमूर्यते नारी नरेन्द्रं लभते पतिम् ॥ ८० ॥

अँगूठा के निचले भाग में छोटी २ रेखा छिन्न भिन्न प्रतीत हों तो अल्पायु करती हैं और यदि दीर्घ रेखायें छिन्न भिन्न प्रतीत हों तो दीर्घायु करती हैं स्त्रियों का शुभदायक लक्षण कहा गया अन्यथा लक्षण अशुभ होता है व जिसके करतल में अंकुश, कुण्डल और चक्र का निशान प्रतीत हो तो वह स्त्री राजपति को पाकर राजकुमार को उपनाती है ॥ ७९ । ८० ॥

यस्याः पाणितले रेखाप्राकारतोरणं भवेत् ।

अपि दासकुले जाता राज्ञीत्वमधिगच्छति ॥ ८१ ॥

रक्षा व्यक्ता गभीरा च स्निग्धा पूर्णा च वर्तुला ।

कररेखाङ्गनायाः स्याङ्कुभा भाग्यानुसारतः ॥ ८२ ॥

जिसके करतल में प्राकार (घेर) व तोरण के आकार रेखा प्रतीत हों तो वह स्त्री दासकुल में उपजी हो तो भी रानी होती है व जिस स्त्री के करतल में रेखा लाल,

प्रकट, गंभीर, चिकनी व पूर्ण होकर गोलाकार प्रतीत हो तो भाग्यालुसार शुभदायक होती है ॥ ८१ । ८२ ॥

तुलामानाकृतीरेखा वणिकपत्रीत्वहेतुका ।

गजवाजिवृष्टाकारा करे वामे मृगद्विशाम् ॥ ८३ ॥

पाणिपादतले रेखा ताम्रवर्णा नखानि च ।

जीववत्सा चिरंजीविपुत्रपौत्रसमन्विता ॥ ८४ ॥

यदि मृगनयनियों के करतल में तुला (तराजू) तथा दण्डाकृति रेखा प्रतीत हों और वायें करतल में हाथी, घोड़ा तथा बैलके आकार रेखा प्रतीत हों तो वे ज्ञियां विना कारण वनियों की रमणियां होती हैं और जिसके करतल व पादतल में तांवे समान रेखा व नख प्रतीत हों तो वह ही जीवद्वत्सा होकर चिरजीवी पुत्र पौत्रों से संयुत होती है ॥ ८३ । ८४ ॥

रेखा प्रासादवज्राभा सूते तीर्थकरं सुतम् ।

कृषीबलस्य पत्री स्याच्छकटेन मृगेन वा ॥ ८५ ॥

यस्याः करतले पद्मं पूर्णकुम्भं तथैव च ।

राजपत्रीत्वमाप्नोति पुत्रपौत्रः प्रवर्तते ॥ ८६ ॥

जिसके करतल में देवमन्दिर, राजमहल व वज्राकार निशान प्रतीत हो तो वह ही तीर्थकारी पुत्र को उपजाती है और जिसके करतल में गाड़ा व हिरन का निशान प्रतीत हो तो वह ही किसान की पत्री होती है व जिसके करतल में पद्म व पूर्णकुम्भ का निशान प्रतीत हो तो वह ही राजपत्री होकर पुत्र पौत्रों को पाती है ॥ ८५ । ८६ ॥

वृद्धामूले च या रेखा भ्रातृभग्नीप्रदायिकाः ।

कृषणाः सूक्ष्माः क्रमेणैव हीनाशिङ्दप्रदायिकाः ॥ ८७ ॥

अङ्गुशं कुण्डलं यानं यस्याः पाणितले भवेत् ।

दीर्घायुषं पतिं प्राप्य पुत्रवृद्धिर्भवेदध्यवम् ॥ ८८ ॥

अङ्गूठा की मूल में जो रेखायें प्रतीत हों वे भाई व वहिनियों को देती हैं और जो काली व क्रम से पतली होकर हीन रेखा प्रतीत हों तो भाई व भगिनियों को विनाशती हैं और जिसके करतल में अङ्गुश, कुण्डल और यानका निशान प्रतीत हो तो वह ही दीर्घायु पति को पाकर निश्चय कर पुत्रवृद्धि को पाती है ॥ ८७ । ८८ ॥

अङ्गुष्ठमूलाद्यदिवैतु रेखा स्थूला तथा चक्रकृता च नारी ।

अवारिता घण्डप्रचण्डता च परान्विता शून्यहृदा च खण्डिता ॥ ८६ ॥

जिसके करतल में अङ्गूठा की मूल से मध्यभाग पर्यन्त रेखा मोटी होकर चक्राकार प्रतीत हो तो वह स्त्री कुलटा, नष्ट स्वभाववाली व परपुरुषों में आसक्त व सांड के नाईं प्रचण्डा होकर अपने आधीन रहती है ॥ ८६ ॥

यस्याः करतले पादे चोर्ध्वरेखा च हृश्यते ।

यदि नीचकुले जाता राजपत्री भवेद् ध्रुवम् ॥ ६० ॥

जिसके करतल या पादतल में ऊर्ध्वरेखा (फेटलाइन) प्रतीत हो तो वह स्त्री यदि नीच कुल में उपजी हो तो भी निश्चयकर राजपत्री होती है ॥ ६० ॥

अनामिका भवेच्छन्ना सा भवेत्कलहप्रिया ।

मध्यमा च भवेच्छन्ना सा नारी कुलटा स्मृता ॥ ६१ ॥

तर्जनी च भवेच्छन्ना विधवा सा प्रकीर्तिता ।

कनिष्ठा च भवेच्छन्ना सा नारी दुःखभागिनी ॥ ६२ ॥

जिसके करतल में अनामिकास्थित रेखा छिन्न प्रतीत हो तो वह स्त्री बड़ी लड़का होती है व मध्यमास्थित रेखा कटीसी प्रतीत हो तो वह स्त्री व्यभिचारिणी होती है व यदि तर्जनी स्थित रेखा टूटीसी प्रतीत हो तो वह स्त्री विधवा कहाती है और यदि कनिष्ठास्थित रेखा भिन्नसी प्रतीत हो तो वह स्त्री दुःखभागिनी होती है ॥ ६१ । ६२ ॥

अथ पुनरपि पुरुषकरलक्षणमाह—

अङ्गष्टोदरमध्ये तु यवो यस्य विराजते ।

उत्पन्नावधिभोगी स्यात्स नरः सुखमेधते ॥ ६३ ॥

मध्यमातर्जनीमूले यवो यस्य प्रदृश्यते ।

धनवान्सुखभोगी स्यात्पुत्रदारगृहादिमान् ॥ ६४ ॥

जिसके करतल में अङ्गूठा के मध्यभाग में जव का निशान विराजता हो तो वह प्राणी जन्मपर्यन्त भोगी होकर सुख को पाता है तथा मध्यमा व तर्जनी अङ्गुली की मूल में जव का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी धनी व सुखभोगी होकर पुत्र, स्त्री व घरवाला होता है ॥ ६३ । ६४ ॥

अङ्गष्टोदरमध्ये तु रेखा यस्य यवाकृतिः ।

पद्मरेखा भवेद्यस्य स नरः सुखमेधते ॥ ६५ ॥

अङ्गुष्ठोदरमध्ये तु कुण्डलं यस्य दृश्यते ।

भोज्यमुत्पाद्यते तस्य प्रचुरं च सुखं भवेत् ॥ ६६ ॥

जिसके करतल में अङ्गूठा के बीच यवाकार रेखा प्रतीत हो या कमल का निशान देखा जावे तो वह प्राणी सुख को पाता है और अङ्गूठा के बीच में कुण्डलका निशान प्रतीत हो तो उस प्राणी को भोग भिलता व बड़ा सुख होता है ॥ ६५ । ६६ ॥

दीक्षादानं यथाधर्मं पदवीसुखमेव च ।

विद्यामानोपमानं च अङ्गुल्यामूलसंस्थिताः ॥ ६७ ॥

कनिष्ठामूलसंयुक्ता त्रिरेखा यस्य दृश्यते ।

एकं युग्मं तृतीयं च चतुर्थं बाणसम्मितम् ।

युग्मं वापि पृथग्वापि विपुलं भोगदायकम् ॥ ६८ ॥

जिसके करतल में कनिष्ठा के मूलदेशमें जितनी रेखायें प्रतीत हों उनका फल यह है कि जो एक रेखा प्रतीत हो तो वह प्राणी दीक्षा देता है व जो दो रेखा हों तो दानी व तीन रेखों से धर्मी चार रेखों से चौधरी, पांच रेखों से सुखी, छः रेखों से विद्रान्, सात रेखों से मानी और आठ रेखों से साधारण जन होता है और जिसके करतल में कनिष्ठा की मूल से संयुक्त आयुरेखा के बाम भाग में तीन रेखा हों या एक, दो, तीन, चार व पांच तथा दो ही रेखा प्रतीत हों यानी जितनी रेखायें देखी जावें उतनी ही रमणियों के साथ वह प्राणी विहार करता है ऐसेही यदि स्त्रियों के करतल में जितनी रेखायें प्रतीत हों उतने ही पुरुषों के साथ वे स्त्रियां भोग कराती हैं ॥ ६७ । ६८ ॥

अङ्गुष्ठानां पृथग्रेखा त्रितयं गणयते पृथक् ।

रेखादादशकं सौख्यं धनधान्यप्रदायकम् ॥ ६९ ॥

अङ्गुलीनां पृथग्रेखा गणने चेत्त्रयोदशा ।

महादुःखं मनौक्लेशं सामुद्रवचनं यथा ॥ १०० ॥

अङ्गूठे की रेखाओं को अलग कर अङ्गुलियों की पर्वोंकी तीन २ रेखायें गिनी जावें यदि गिनने में वारह रेखा प्रतीत हों तो उस प्राणी को सौख्य, धन व धान्य को देती हैं और अङ्गुलियों की पर्वों की रेखा गिनने में तेरह प्रतीत हों तो वह प्राणी महादुःख को पाता है और यदि चौदह रेखा प्रतीत हों तो वह प्राणी क्लेश को भोगता है यह सामुद्रिक शास्त्रका वचन है ॥ ६९ । १०० ॥

रेखापञ्चदशे चौरः पौडशे धूतवञ्चकः ।

पापी सप्तदशे ज्ञेयो धर्मात्माषादशे भवेत् ॥ १ ॥

ऊनविंशे भवेन्मान्यो गुणज्ञो लोकपूजितः ।

तपस्वी विंशतौ ज्ञेयो महात्मा चैकविंशतौ ॥ २ ॥

यदि पन्द्रह रेखा प्रतीत हों तो वह प्राणी चोर होता है यदि सोलह रेखा प्रतीत हों तो वह जुवारी होकर छलकारी होता है यदि सत्रह रेखा प्रतीत हों तो वह प्राणी पापी जानना चाहिये यदि अद्वारह रेखा प्रतीत हों तो वह प्राणी धर्मात्मा होता है यदि उन्नीस रेखा प्रतीत हों तो वह प्राणी मान्य व गुणज्ञ होकर लोक में पूजित होता है यदि बीस रेखा प्रतीत हों तो वह प्राणी तपस्वी जानना चाहिये और यदि अङ्गुलियों की पोराँ की रेखायें इक्कीस प्रतीत हों तो वह प्राणी महात्मा होता है ॥ १ । २ ॥

ताम्रैभूपो धनाद्यश्च अङ्गुष्ठैः सयवैस्तथा ।

अङ्गुष्ठमूलजैः पुत्री स्यादीर्घाङ्गुलिपर्वकः ॥ ३ ॥

दीर्घायुः सुभगश्चैव सधनो विरलाङ्गुलिः ।

घनाङ्गुलिश्च अधनस्तिस्रो रेखाश्च यस्य वै ।

अङ्गुष्ठमूलगा रेखाः पुत्राश्च सुखदायकाः ॥ ४ ॥

जिसके करतल में जबों समेत अङ्गूठा ताम्रवर्ण प्रतीत हो तो वह प्राणी धनशाली हो-
कर राजा होता है व जिसके करतल में अङ्गुलियों की पोरैं दीर्घकार प्रतीत हों तो वह प्राणी घनशाली व उनमें तीन २ रेखायें देखी जावें तो वह प्राणी निर्धनी होता है और यदि अङ्गूठा की मूल में जितनी बड़ी २ रेखायें प्रतीत हों तो पुत्रदायक व सुखदायक होती हैं ॥ ३ । ४ ॥

अङ्गुष्ठोदरमध्ये तु यवो यस्य विराजितः ।

उन्नतं शोभनं तस्य शतं जीवति मानवः ॥ ५ ॥

मध्यमायां यदि जवा दृश्यन्तेत्यन्तशोभनाः ।

तदान्यसंचितं वित्तं प्राप्नोत्यङ्गुष्ठगे यवे ॥ ६ ॥

जिसके करतल में अङ्गूठा के बीच जव का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी ज्ञान,

ध्यान व मान आदिकों में ऊँचा व शोभन होकर सौ बरस जीता है और जिसके करतल में मध्यमा व अँगूठे में जव के निशान अत्यन्त सोहते हों तो वह प्राणी आन के जोरे हु धन को पाता है ॥ ५ । ६ ॥

यस्याथ चक्रमङ्गुष्ठे यवः पद्मं च दृश्यते ।

तदा पितामहादीनामर्जितं धनमाप्नयात् ॥ ७ ॥

जिसके अँगूठा में चक्र, जव और पद्म का निशान देखा जावे तो वह प्राणी पितामह दिकों के जोरे हुए धन को पाता है ॥ ७ ॥

तर्जन्यामथ चक्रं च पितृद्वारा धनं लभेत् ।

तेनैव विपरीतन्तु व्ययो भवति निश्चितम् ॥ ८ ॥

जिसके करतल में तर्जनी की पहली पर्व में चक्र का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी मित्रद्वारा वा पितृद्वारा धनको पाता है और यदि तर्जनी में चक्र का निशान नहीं प्रतीत हो तो उस प्राणी के धन का खर्चा पितृद्वारा या मित्रद्वारा निश्चयकर होता है ॥ ८ ॥

मध्यमायां स्थिते चक्रे देवद्वारा धनं लभेत् ।

तेनैव विपरीतं तु व्ययो भवति निश्चितम् ॥ ९ ॥

अनामिकायां चक्रे तु सर्वद्वारा धनं लभेत् ।

तेनैव विपरीतं तु व्ययो भवति निश्चितम् ॥ १० ॥

जिसके करतल में मध्यमा की पहली पोर में चक्र का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी देवद्वारा धन को पाता है और यदि चक्र का निशान नहीं प्रतीत हो तो उस प्राणी के धन का खर्चा देवद्वारा निश्चयकर होता है और यदि अनामिका में चक्र का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी सर्वजन द्वारा धनको पाता है और यदि चक्र का निशान नहीं प्रतीत हो तो उस प्राणी के धन का खर्चा सर्वजन द्वारा निश्चय कर होता है ॥ ९ । १० ॥

कनिष्ठायां भवेचक्रं वाणिज्येन धनं लभेत् ।

तेनैव विपरीतन्तु व्ययो भवति निश्चितम् ॥ ११ ॥

अङ्गुष्ठे कुलिशं चिह्नं यस्य पाणितले भवेत् ।

तोरणं पुण्डरीकं च राज्यं तस्य भविष्यति ॥ १२ ॥

जिसके करतल में कनिष्ठा की पहली पर्व में चक्र का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी

वाणिज्य (वनियों के व्यापार) से धनको पाता है और यदि चक्र का निशान नहीं प्रतीत हो तो उस प्राणी के धन का खर्चा वाणिज्य से निश्चय कर होता है और जिसके करतल में अङ्गूठा के बीच बज्र, तोरण व कमल का निशान प्रतीत हो तो उस प्राणी को राज्य मिलता है यानी वह प्राणी राजा होता है ॥ ११ । १२ ॥

मत्स्येनैकेन चैश्वर्यं सहस्रं लाभसंपदम् ।

पद्मं शङ्खं विजानीयाद् व्यजनं चक्रमेव च ॥ १३ ॥

पद्मे कोटिर्भवेच्छत्रे शङ्खे कोटिशतानि च ।

लक्षाधिपश्च व्यजने चक्रे राजा न संशयः ॥ १४ ॥

जिसके करतल में एकमात्र मछली का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी ऐश्वर्य को पाता है ऐसेही पद्म, शङ्ख, व्यजन (पंखा) और चक्रका निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी हजारों की संपदा पाता है यदि आता व पद्म का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी 'कोटी-श्वर' होता है यदि शङ्खका निशान प्रतीत हो तो वह 'शतकोटीश्वर' होता है यदि व्यजन का निशान प्रतीत हो तो वह 'लक्षेश्वर' होता है और यदि चक्र का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी निस्सन्देह राजा होता है ॥ १३ । १४ ॥

समस्ताङ्गुलिकानान्तु कोष्ठरेखा भवेद्यदि ।

तदा स्वर्णाङ्गुर्णि दिव्यां चिरं स लभते ध्रुवम् ॥ १५ ॥

पञ्चभिः सव्यकरणा नृपाक्षैः पूरिताङ्गुलीः ।

नृपाधिकारमाप्नोति बहुलाभकरः पुमान् ॥ १६ ॥

जिसके करतल में सारी अङ्गुलियों के बीच यदि प्रकोष्ठ रेखा प्रतीत हो तो वह प्राणी बहुत समय तक दिव्य, स्वर्णमयी मुँदरी को निश्चय कर पाता है जिसके बायें हाथ की अङ्गुलियों में पांच नृपाक्ष चिह्न प्रतीत हों तो वह प्राणी राजाधिकारको पाता हुआ बहुत सा लाभ करता है ॥ १५ । १६ ॥

अथ नरनारीणां पदावङ्गादिलक्षणं व्याख्यायते—

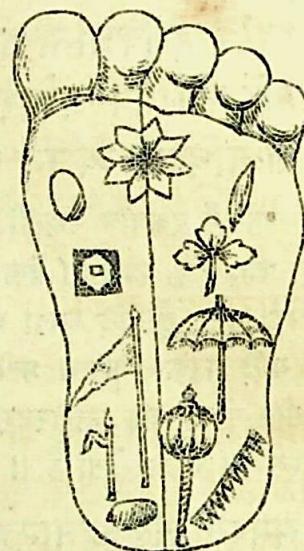
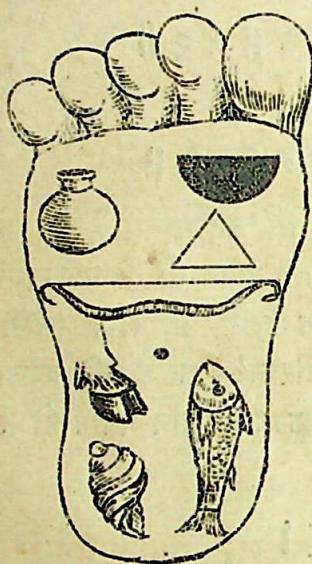
चन्द्रार्धं कलशं त्रिकोणधनुषी खं गोष्ठदं प्रोष्ठिकं

शङ्खं सव्यपदेऽथ दक्षिणपदे कोणाष्टकं स्वस्तिकम् ।

चक्रं छत्रयवाङ्गुशं ध्वजपवीजम्बूर्धरेखाम्बुजं

बिभ्राणो हरिरूनविंशति महालक्ष्म्यार्चिताङ्गिर्भवेत् ॥ १७ ॥

जिसके वामपाद में अर्धचन्द्र, कलश, त्रिकोण, धनु, शून्य, गोष्ठद, मत्स्य और शङ्ख ये आठ चिह्न प्रतीत हों और दक्षिणपाद में अष्टकोण, स्वस्तिक, चक्र, व्राता, जव, अङ्कुश, ध्वज, वज्र, जामुन, ऊर्ध्वरेखा और कमल ये ग्यारह चिह्न प्रतीत हों तो वह प्राणी महालक्ष्मी सेवित चरणोंवाला होता है जैसेकि इन्हीं उन्नीस लक्षणों को धारे हुए श्रीहरि (नारायणजी) महालक्ष्मीजी से पूजित चरणोंवाले हुए हैं ॥ १७ ॥



यस्य पादतले पद्मं चक्रं वाप्यथ तोरणम् ।

अङ्कुशं कुलिशं वापि स राजा भवति ध्रुवम् ॥ १८ ॥

जिसके पादतल में पद्म, चक्र, तोरण, अंकुश और वज्र का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी निश्चयकर राजा होता है ॥ १८ ॥

यस्य वृद्धाङ्गुलेर्मूलात्पादे रेखा च दृश्यते ।

स राज्यं लभते नूनं भुङ्गे निष्कण्टकां महीम् ॥ १९ ॥

असमं मूलदेशे तु वज्रं यस्य तु दृश्यते ।

अविच्छिन्नं पदं चैव कुलश्रेष्ठो भवेन्नरः ।

अपरं पर्वरेखायां राज्यं च परिकीर्तिम् ॥ २० ॥

जिसके पैर में अङ्गूष्ठा की मूल से चलकर ऊर्ध्वरेखा पादतल में विस्तीर्ण होकर देखी जावे तो वह प्राणी निश्चयकर राज्य को पाता हुआ निष्कण्टक मही को भोगता है जिसके पादमूल में वज्र का चिह्न जोकि असमानाकार होकर अविच्छिन्न प्रतीत हो तो

वह प्राणी अपने वंश में प्रधान होता है और यदि पैर की पोरों की रेखाओं के बीच अपर रेखा प्रतीत हो तो उसको राज्य मिलता है ऐसा आचार्यों ने कहा है ॥ १६२०॥

अथ पुनरपि स्त्रीपदतललक्षणमाह—

चक्रस्वस्तिकशङ्गाब्जध्वजमीनातपत्रवत् ।

यस्याः पादतले रेखा सा भवेत्क्षितिपाङ्गना ॥ २१ ॥

यस्याः पादतले रेखा सा भवेत्क्षितिपाङ्गना ।

भवेदखण्डभोगा च या मध्याङ्गुलिसंगता ॥ २२ ॥

जिसके पादतल में चक्र, स्वस्तिक, शङ्ग, पत्र, ध्वजा, मबली और छाता का निशान प्रतीत हों तो वह रानी होती है व जिसके पादतल में मध्यमा अङ्गुजी पर्यन्त ऊर्ध्वरेखा विस्तीर्ण होकर प्रतीत हो तो वह स्त्री राजरानी होकर अखण्डित भोगों को भोगती है ॥ २१।२२॥

निगृहूद्गुलफौ चरणौ पद्मकान्तितलौ शुभौ ।

अस्वेदिनौ खृदुतलौ मत्स्याङ्गमकराङ्गितौ ॥ २३ ॥

वज्राब्जहलचिह्नं च दास्याः पादे सदा स्थितम् ।

राजपत्नी तु सा ज्ञेया राजभोगप्रदायकम् ॥ २४ ॥

जिसके चरण चिपे हुए गणठोंवाले व पद्मकान्ति के समान तलवाले तथा पसीने से रहित होकर कोमल तलवेवाले प्रतीत होते हुए मबली व मगर के चिह्न से अङ्गिन हों तो उस स्त्री के लिये शुभदायक होते हैं और यदि दासी के पादतल में वज्र, कमल और इलका निशान प्रतीत हो तो भी वह राजपत्नी जानना चाहिये और पूर्वोक्त वज्रादि चिह्न उस स्त्री के लिये राजभोगदायक होते हैं ॥ २३ । २४ ॥

स्त्रिघोञ्चतौ ताम्रनखौ नार्यश्च चरणौ शुभौ ।

मत्स्याङ्गुशाब्जचिह्नौ च चक्रलाङ्गुललक्षितौ ॥ २५ ॥

जिसके चरण चिकने व ऊचे होकर ताम्रसरीखे नखोंवाले प्रतीत हों व जिनमें मबली, अङ्गुश, कमल, चक्र और हल के निशान प्रतीत हों तो उस स्त्री को शुभदायक होते हैं ॥ २५ ॥

भवेदखण्डभोगायोर्ज्ञा मध्याङ्गुलिसंगताः ।

रेखाखुसर्पकाकाभा दुःखदारिद्रिवसूचकाः ॥ २६ ॥

स्त्रिघाःसमुन्नतास्ताम्रा वृत्ताः पादनखाः शुभाः ।

वाणिज्यसूचकं स्त्रीणां पादपृष्ठसमुन्नतिः ॥ २७ ॥
 प्रदेशिनी भवेद्यस्या अङ्गुष्ठादतिरेकिणी ।
 कन्यैव कुलया सा स्यादेष एव विनिश्चयः ॥ २८ ॥

जिसके पादतल में ऊर्ध्वरेखा मध्यमांगुली में मिली हुई प्रतीत हो तो उस स्त्री अखण्डभोग के लिये होती है और यदि मूषक, सर्प और कौवा के समान रेखा प्रतीत हों तो दुःख व दारिद्र्य की जतलानेवाली होती हैं और जिसके पैरों के नख चिकं ऊंचे व ताम्रवर्ण होकर गोलाकार प्रतीत हों तो शुभदायक होते हैं और जिन स्त्रियों पादपीठ ऊंचे प्रतीत हों तो वाणिज्य को बतलाते हैं और जिसके पैर की तर्जनी अङ्गुष्ठा से बड़ी प्रतीत हो तो वह स्त्री कन्याकी दशा में ही व्यभिचारिणी हो जाती है यह सामुद्रिकशास्त्र ने निर्णय किया है ॥ २६ । २८ ॥

राज्याः स्तिनुभौ समौ पादौ तलौ ताम्रनखौ तथा ।
 शिलष्टाङ्गुली चोन्नताश्रौ तां प्राप्य नुपतिर्भवेत् ॥ २९ ॥
 समपाष्णीं शुभा नारी पृथुपाष्णीं सुदुर्भगा ।
 कुलटोन्नतपाष्णीं स्यादीर्घपाष्णीं च दुःखभाक् ॥ ३० ॥

जिसके पैर चिकने होकर समानाकार प्रतीत हों व पैर के तलवे तथा नख तथा सरीखे लालवर्ण प्रतीत हों व अङ्गुलियां सटीहुई प्रतीत हों व जिनके अग्रभाग ऊंचे दीखते हों तो वह स्त्री रानी होती है उसको पाकर प्राणी राजा होता है व जिसकी एंडी समानाकार प्रतीत हों तो वह स्त्री शुभदायक होती है व जिसकी एंडी ऊंचीसी प्रतीत हों तो वह स्त्री बुरे भागवाली होती है व जिसकी एंडी ऊंचीसी प्रतीत हों तो वह स्त्री जन्मपर्द दुःखको ही भोगती है ॥ २९ । ३० ॥

यस्याः संचार्यमाणाया भूमिशब्दः प्रजायते ।
 सा नारी विधवा ज्ञेया सामुद्रवृत्तनं यथा ॥ ३१ ॥
 यस्याः संसृशते भूमिमङ्गली न कनिष्ठिका ।
 भर्तारं प्रथमं हन्ति द्वितीयं चैव विन्दति ॥ ३२ ॥

जिसके चलते हुए पृथ्वी में धूम धम शब्द प्रतीत हो तो उस नारी को विधवा जाना चाहिये यह सामुद्रिकशास्त्र का वचन है और जिसके पैरकी कनिष्ठा अङ्गुली भूमि को

हूती हो तो वह स्त्री पहले पतिको मारडालती है और दूसरे पतिको पाती है ॥ ३१ ३२ ॥

यस्यास्त्वनामिकाङ्गुल्यौ पृथिव्यां नोपसर्पतः ।

पतिं नाशयते क्षिप्रं सा रक्षा चिरजीविनी ॥ ३३ ॥

यस्या गमनमात्रेण भूमौ कम्पः प्रजायते ।

बद्धाशिनीं प्रतोभां च तां नारीं परिवर्जयेत् ॥ ३४ ॥

जिसके पैर की दोनों अनामिका अँगुलियां भूमिको न छूती हों तो वह स्त्री शीघ्र ही पति को मारती है और यदि अनामिकायें लालवर्ण प्रतीत हों तो वह स्त्री चिरजीविनी होती है और जिसके चलनेप्राप्त से पृथ्वी हिलने लगे तो वह स्त्री बहुत भोजन करती हुई महालोभिनी होती है उसको त्याग देना चाहिये ॥ ३३ । ३४ ॥

चरणानामिका यस्याः क्षितिं न स्पृशते यदि ।

द्वितीया च तृतीया वा सा कन्या मुखवर्जिता ॥ ३५ ॥

कनिष्ठिकानामिका वा यस्या न स्पृशते महीय् ।

अङ्गुष्ठं वागतातीता तर्जनी कुलदा हि सा ॥ ३६ ॥

जिसके पैरकी अनामिका अँगुली यदि भूमिको नहीं स्पर्श करती हो अथवा तर्जनी य मध्यमा अँगुली यदि भूमिको न छूती हो तो वह कन्या सुखसे रहित होती है अथवा जिसके पैर की कनिष्ठिका व अनामिका अँगुली यदि भूमिको न छूती हो अथवा जिसके पैरकी तर्जनी अँगुली अँगूठे पै चढ़ी हो अथवा आगे चढ़ी हो तो वह स्त्री कुलदा (व्यभिचारिणी) होती है ॥ ३५ । ३६ ॥

यस्या अनामिकाङ्गुष्ठौ पृथिव्यां नैव तिष्ठतः ।

पतिं मारयते सापि स्वतन्त्रेणैव वर्तते ॥ ३७ ॥

स्त्रीणां पादतलं स्निदधं मांसलं घृदुलं समय् ।

अस्वेदमुष्णएमरुणं बहुभोगोचितं समृतय् ॥ ३८ ॥

जिसके पैर की अनामिका व अँगूठा पृथिवी में नहीं विक्ते हों तो वह स्त्री पतिको मारती हुई अपनी इच्छा के अनुसार वर्तती है यदि क्षियों के पैर के तलने चिकने, मांसल, कोमल, समानाकार, पसीनारहित व गरम होकर लालवर्ण प्रतीत हों तो घने भोगों के लिये कहाते हैं ॥ ३७ । ३८ ॥

रक्षं विवर्णं परुषं खण्डितं प्रतिविम्बकम् ।
 सूर्पाकारं विशुष्कं च दुःखदौर्भाग्यमूचकम् ॥ ३६ ॥
 उन्नतो मांसलोङ्घो वर्तुलोऽतुलभोगदः ।
 वक्रो हस्वश्च चिपिटः सुखसौभाग्यमञ्जकः ॥ ४० ॥

अथवा जिसके पैर का तलवा रुखा, विवर्ण, कठोर व सापेड़त प्रतिविम्बवाला सूप के आकार होकर विशेषता से सूखासा प्रतीत हो तो वह दुःख व दौर्भाग्य को जलाता है और जिसका अङ्गूठा ऊँचा व मांसल होकर गोलाकार प्रतीत हो तो वह अतुल भोग को देता है और जो अङ्गूठा टेढ़ा व छोटासा होकर चपटा प्रतीत हो तो वह सु व सौभाग्य को विनाशता है ॥ ३६ । ४० ॥

विधवा विपुलेन स्यादीर्घाङ्गुष्ठेन दुर्भगा ।
 मृदवोऽङ्गुलयः शस्ता घना वृत्ताः समुन्नताः ॥ ४१ ॥
 दीर्घाङ्गुलीभिः कुलदा कृशाभिरतिनिर्धना ।
 हस्वायुष्या च हस्वाभिर्भुग्नाभिर्भुग्नवर्तिनी ॥ ४२ ॥

जिसका अङ्गूठा चौड़ा हो तो वह स्त्री विधवा (रांड) होती है व जिसका अङ्गूलम्बा हो तो वह स्त्री बुरे भागवाली होती है यदि अङ्गुलियां घनी व गोलाकार तथा ऊँच होकर कोमलसी प्रतीत हों तो उस स्त्री को शुभदायक होती है व जिसकी अङ्गुलियां लम्ब सी प्रतीत हों तो वह स्त्री व्यभिचारिणी होती है व जिसकी अङ्गुलियां छोटीसी प्रतीत हों तो वह स्त्री थोड़ी उमरवाल होती है और जिसकी अङ्गुलियां टेढ़ी प्रतीत हों तो वह स्त्री कुटिलवर्तिनी यानी टेढ़े घर की वर्तनेवाली होती है ॥ ४१ । ४२ ॥

चिपिटाभिर्भवेहासी विरलाभिर्दिरिणी ।
 परस्परं समारूढः पादाङ्गुल्यो भवन्ति हि ।
 हत्वा वहूनपि पतीन्परप्रेष्या तदा भवैत् ॥ ४३ ॥
 दस्त्रा मध्यनप्रेण शिरालेन सदाध्वगा ।
 रोमाङ्गेन भवेहासी निर्मासेन च दुर्भगा ॥ ४४ ॥

जिसके पैर की अँगुलियाँ चपड़ी हों तो वह स्त्री दासी होती है व यदि अँगुलियाँ विरल प्रतीत हों तो वह स्त्री दरिद्रिणी होती है और यदि पैरों की अँगुलियाँ परस्पर चढ़ी हों तो वह स्त्री बहुतसे पतियों को मारकर पराई दासी होती है व जिसका पैर नसों से विरा हो तो वह स्त्री सदैव मार्गगमिनी होती है व जिसका पैर रोमों से युत हो तो वह स्त्री दासी होती है और जिसका पैर निर्मास प्रतीत हो तो वह स्त्री बुरे भागवाली होती है ॥ ४३ । ४४ ॥

गट्टौ गुल्फौ शिवायोक्तावशिरालौ सुवर्तुलौ ।

सुपुट्टौ शिथिलौ दृश्यौ स्यातां दौर्भाग्यसूचकौ ॥ ४५ ॥

यस्या न सृष्टाते भूमिमङ्गलिश्च कनिष्ठिका ।

भर्तारं प्रथमं हन्ति मृतो भवति पुत्रकः ॥ ४६ ॥

जिसके पैर के गणे (टखने) नसों से रहित, गोलाकार व अच्छे पुटोंवाले होकर अपेसे प्रतीत हों तो उस स्त्री को कल्पणादायक होते हैं और जिसके गणे ढीलेसे देख पड़े तो बुरे भाग को बतलाते हैं और जिसके पैर की कनिष्ठा अँगुली भूमि को नहीं छूती हो तो वह पहले पति को मार डालती है पीछेसे उसका पुत्रभी मरजाता है ॥ ४५ । ४६ ॥

नखारुणाश्च या नार्यो भोगिन्यः सुखसंयुताः ।

श्यामनख्यः स्त्रियो या वै कुशीलाः पापसंगताः ॥ ४७ ॥

श्वेतनख्यः स्त्रियो या वै महादुःखसमन्विताः ।

पीतनख्यः प्रवासिन्यः पापिन्यश्च धनोजिभताः ॥ ४८ ॥

हरिनख्यो हृतधना दुराचारपरायणाः ।

सुखसंतानरहिताः सामुद्रेण यथोदितम् ॥ ४९ ॥

जिनके नख रक्तवर्ण प्रतीत हों तो वे स्त्रियां भोगिनी होकर पुत्रपौत्रादि सुखों से संयुत होती हैं व जिनके नख काले प्रतीत हों तो वे स्त्रियां बुरे स्वभाववाली होकर पापकर्म में परायण रहती हैं व जिनके नख सफेद प्रतीत हों तो वे स्त्रियां बड़े दुःखों से संयुत होती हैं व जिनके नख पीले प्रतीत हों तो वे स्त्रियां परदेशिनी व पापिनी होकर निर्धन रहती हैं और जिनके नख हरे प्रतीत हों तो वे स्त्रियां दुराचारों में परायण होकर सुखों व सन्तानों से रहित होती हैं यह सामुद्रिकरणात्म का वचन है ॥ ४७ । ४९ ॥

अथ ललाटरेखालक्षणं व्याख्यायत—

ललाटे यस्य दृश्यन्ते तिस्रो रेखाः समाहिताः ।

सुखी पुत्रसमायुक्तः स षष्ठिं जीवते नरः ॥ ५० ॥

जिसके ललाट में तीन रेखा अच्छिन्न होकर प्रतीत हों तो वह प्राणी सुखी व पुत्रों से संयुत होकर साठिवर्ध पर्यन्त जीता है ॥ ५० ॥

चत्वारिंशत्र्च वर्षाणि द्विरेखादर्शनाभ्यरः ।

विंशत्यब्दमेकरेखा आकर्णा च शतायुपः ॥ ५१ ॥

सप्तत्यायुर्द्विरेखे तु पष्ट्यायुस्तिसूभिर्भवेत् ।

व्यक्ताव्यक्ताभिरेखाभिर्विशत्यायुर्भवेन्नरः ॥ ५२ ॥

जिसके ललाट में दो रेखायें देखीजावें तो वह प्राणी चालीस वर्ष पर्यन्त जीता है व जिसके ललाट में एकमात्र रेखा प्रतीत हो तो वह प्राणी बीस वर्ष पर्यन्त जीता है व जिसके ललाट में एक रेखा कानों पर्यन्त चलीगई हो तो वह प्राणी सत्तर वर्ष पर्यन्त जीता है व जिसके ललाट में दो रेखा प्रतीत हों तो वह प्राणी साठि वर्ष पर्यन्त जीता है और जिसके ललाट में तीन रेखा प्रतीत हों तो वह प्राणी साठि वर्ष पर्यन्त जीता है और जिसके ललाट में व्यक्त व अव्यक्त होकर बहुतसी रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी बीस वर्ष पर्यन्त जीता है ॥ ५१ । ५२ ॥

चत्वारिंशत्र्च वर्षाणि हीनरेखस्तु जीवति ।

भिन्नाभिश्चैव रेखाभिरपमृत्युर्नरस्य हि ॥ ५३ ॥

त्रिशूलं बडिशं वापि ललाटे यस्य दृश्यते ।

धनपुत्रसमायुक्तस्स जीवेच्छरदःशतम् ॥ ५४ ॥

जिसके ललाट में रेखायें नहीं प्रतीत हों तो वह प्राणी चालीस वर्ष पर्यन्त जीता है व जिसके ललाट में रेखायें छिन्न भिन्न होकर प्रतीत हों तो उस प्राणी की अपमृत्यु होती है यानी वह प्राणी अपमौत से मरता है और जिसके ललाट में त्रिशूल व मबली पकड़नेवाली वंसीका निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी धनों व पुत्रों से संयुक्त होकर सौ वर्ष पर्यन्त जीता है ॥ ५३ । ५४ ॥

उन्नतौर्विपुलैः शङ्खैर्ललाटैर्विषमैस्तथा ।

निर्धना धनवन्तश्च अर्धेन्दुसदृशैर्नरः ॥ ५५ ॥

आचार्याः शुक्रिविशालैः शिरालैः पापकारिणः ।

उन्नताभिः शिराभिश्च स्वस्तिकाभिर्धनेश्वराः ॥ ५६ ॥

जिनके ललाट ऊंचे, विशाल, शङ्खाकार व विषम होकर अर्थचन्द्राकार प्रतीत हों तो वे प्राणी निर्धनी होकर धनवान् होते हैं और जिनके ललाट सीपियों के निशानों से विशाल प्रतीत हों तो वे प्राणी आचार्य (अध्यापक) होते हैं व जिनके ललाट नसों से व्यास हों तो वे प्राणी पापकारी होते हैं और जिनके ललाट में ऊंची नसैं प्रतीत हों या स्वस्तिक (त्रिकोणाकार) निशान देखे जावें तो वे प्राणी धनेश्वर (महाधनवान्) होते हैं ॥ ५५ । ५६ ॥

निम्नैर्ललाटैर्वधार्हाः कूरकर्मरतास्तथा ।

संवृतैश्च ललाटैश्च कृपणा उन्नतैर्नृपाः ॥ ५७ ॥

ललाटोपसृतास्तिक्षो रेखाः स्युः शतवर्षिणाम् ।

नृपत्वं स्याच्चतसृभिरायुः पञ्चनवत्यथ ॥ ५८ ॥

जिनके ललाट निचले प्रतीत हों तो वे प्राणी वधके योग्य होकर कूरकमों में परायण रहते हैं व जिनके ललाट गोलाकार प्रतीत हों तो वे प्राणी कृपण होते हैं व जिनके ललाट ऊंचेसे प्रतीत हों तो वे प्राणी राजा होते हैं व जिनके ललाट में तीन रेखायें प्रतीत हों तो वे प्राणी सौ वर्ष पर्यन्त जीते हैं और जिनके ललाट में चार रेखायें प्रतीत हों तो वे प्राणी राजा होकर पंचानवे वर्ष पर्यन्त जीते हैं ॥ ५७ । ५८ ॥

केशान्तोपगताभिश्च अशीत्यायुर्नरो भवेत् ।

नवतिः स्यादरेखाभिर्विच्छन्नाभिश्च पुंश्चलः ॥ ५९ ॥

पञ्चभिः सप्ततिः पद्मभिः पञ्चाशद्वहुभिस्तथा ।

चत्वारिंशत्त्र रक्ताभिस्त्रिशत्तलगामिभिः ।

विंशतिर्वामवक्राभिरायुः क्षुद्राभिरत्पकम् ॥ ६० ॥

जिसके ललाट में रेखायें विस्तीर्ण होकर केशोपर्यन्त चली गई हों तो वह प्राणी अस्सी ८० वर्ष की उमरवाला होता है व जिसके ललाट में रेखा नहीं प्रतीत हों तो वह प्राणी नब्बे १० वर्ष की उमरवाला होता है व जिसके ललाट में रेखायें छिन्नभेन होकर प्रतीत हों तो वह प्राणी व्यभिचारी होता है व जिसके ललाट में पांच रेखा प्रतीत हों तो वह प्राणी सत्तर वर्षपर्यन्त जीता है व जिसके ललाट में बी, सात, आठ या बहुतसी रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी पचास ५० वर्ष पर्यन्त जीता है व जिसके

ललाट में रेखायें रक्षणी प्रतीत हों तो वह प्राणी चालीस वर्ष पर्यन्त जीता है व जिस ललाट में रेखाओं ने भौंहों तक आगमन किया हो तो वह प्राणी तीस वर्ष पर्यन्त जीता है व जिसके ललाट में वाईं तरफ रेखायें टेढ़ीसी प्रतीत हों तो वह प्राणी थीस व पर्यन्त आयु को पाता है और जिसके ललाट में दूटी फूटी छोटीसी रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी अल्पायु होजाता है ॥ ५६ । ६० ॥

ललाटे दृश्यते यस्य चक्ररेखाचतुष्टयम् ।

अशीत्यायुः समाप्नोति पञ्चरेखाः शतं समाः ॥ ६१ ॥

यस्योन्नतं ललाटं च ताम्रवर्णं च दृश्यते ।

रेखाहीनं च रुक्षं च स चोन्मत्तो मर्हीं भ्रमेत् ॥ ६२ ॥

जिसके ललाट में चार रेखा टेढ़ी होकर प्रतीत हों तो वह प्राणी अस्सी वर्ष की आयु को पाता है और जिसके ललाट में पांच रेखा प्रतीत हों तो वह प्राणी सौ वर्ष की आयु को पाता है व जिसका ललाट ऊंचा होकर ताम्रसरीखे बाला देखा जावे अथवा रेखाएँ से हीन होकर रुखासा प्रतीत हो तो वह प्राणी पागल होकर पृथ्वी में घूमता हुआ फिरता है ॥ ६३ । ६२ ॥

शुभमर्धेन्दुसंस्थानमत्तुङ्गं स्यादलोमशम् ।

नृपतीनां भवेत्तिल्लं ललाटे शुभदर्शनम् ॥ ६३ ॥

उन्नतेन ललाटेन धनाद्यो जायते नरः ।

विषमेन ललाटेन दुःखितो दुर्जनो नरः ।

ललाटे चार्धचन्द्राद्यैर्जायते पृथिवीपतिः ॥ ६४ ॥

जिसके ललाट में उच्चतारहित, लोमों से विहीन, शुभदायक दर्शनोवाला होकर अर्धचन्द्राकार चिह्न चपकता हो तो वे प्राणी राजा होते हैं व जिसका ललाट ऊंचासा प्रतीत हो तो वह प्राणी धनवान् होता है व जिसका ललाट विषम (कहीं ऊंचा व कहीं खालीसा) प्रतीत हो तो वह प्राणी दुर्जन होकर दुःखित रहता है और जिसके ललाट अर्धचन्द्राकार आदि निशान प्रतीत हों तो वह प्राणी पृथिवीपालक होता है ॥ ६३।६४ ॥

त्रिशूलं कुलिशं चापं ललाटे यस्य दृश्यते ।

ईश्वरं तं विजानीयात्प्रमदाजनवल्लभः ॥ ६५ ॥

रेखाः पञ्चललाटस्थाः समाः कर्णान्तलोचनः ।

भवेत्तं यस्य गंभीरं तं विद्यात्सफलायुषम् ॥ ६६ ॥

जिसके ललाट में त्रिशूल, बज्र व धनुष का निशान प्रतीत हो तो उस प्राणी को सबों का स्वामी जानना चाहिये और वह प्रमदाजनों (लुगाइयों) का प्यारा होता है व जिसके ललाट में समानाकार होकर पांच रेखायें प्रतीत हों व जिसके दोनों लोचन कानपर्यन्त चलते हुए गहरेसे प्रतीत हों तो उस प्राणी को सफल आयुताला जानना चाहिये ॥ ६५ । ६६ ॥

पञ्चभिः शतमादिष्टौ व्यशीतिः षड्भिरेव च ।

भवेत्सप्ततिस्तसृभिर्द्वाभ्यां वै विंशतिद्वयम् ॥ ६७ ॥

रेखैकेन ललाटेन विंशत्यायुः प्रकीर्तितम् ।

अरेखैण ललाटेन विज्ञेयं पञ्चविंशतिः ॥ ६८ ॥

जिसके ललाट में पांच रेखायें प्रतीत हों तो उस प्राणी की आयु सौ वर्ष की आचार्यों ने कही है व जिसके ललाट में छः रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी अस्सी वर्ष की उमर वाला होता है व जिसके ललाट में तीन रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी सत्तर वर्ष की आयु को पाता है व जिसके ललाट में दो रेखायें प्रतीत हों तो वह चालीस वर्ष की आयु को पाता है व जिसके ललाट में एकमात्र रेखा प्रतीत हो तो उस प्राणी की बीस वर्ष की आयु कही है और जिसके ललाट में रेखा नहीं प्रतीत हों तो उस प्राणी को पचीस वर्ष की उमरवाला जानना चाहिये ॥ ६७ । ६८ ॥

रेखाचतुष्टयं यस्य ललाटे च प्रदृश्यते ।

चिरायुश्चापि विद्वांश्च सुखभोगादिभिर्युतः ॥ ६९ ॥

पञ्चरेखा भवेद्यस्य सुतसौख्यस्य कारणम् ।

हीनायुश्च त्रिरेखायां रेखैकेन नृपो भवेत् ॥ ७० ॥

जिसके ललाट में चार रेखायें देखी जावें तो वह प्राणी चिरजीवी, विद्वान्, सुखी व भोगी होकर सम्पत्तिशाली होता है व जिसके ललाट में पांच रेखा प्रतीत हों तो वह प्राणी सुत व सौख्य का कारण होता है यानी वह प्राणी पुत्र पौत्रादिकों से संपन्न होकर सुखी रहता है व जिसके ललाट में तीन रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी आयुर्दैय से हीन होता है और जिसके ललाट में एक रेखा प्रतीत हो तो प्राणी राजा होता है ॥ ६९ । ७० ॥

विपुलेन ललाटेन धनाद्यो जायते नरः ।

अल्पेन च ललाटेन चाल्पायुर्जयते नरः ।

४८

१८

खरक्रयकरो नित्यं प्राप्नोति वधवन्धनम् ॥ ७१ ॥

जिसका ललाट विशाल प्रतीत हो तो वह प्राणी धनवान होता है व जिसका ललाट छोटासा प्रतीत हो तो वह प्राणी अल्पायु होजाता है और गर्दभादिक्र्य विक्र्य द्वारा अपने जीवन का निर्वाह करता हुआ वध बन्धन को पाता है ॥ ७१ ॥

ललाटे दृश्यते यस्य समरेखाचतुष्टयम् ।

श्रीवारेखाः पञ्च यस्य शुभं तस्य विनिर्दिशेत् ॥ ७२ ॥

दृश्यन्ते भालगा रेखाश्रतसः पाण्डुरूपिकाः ।

अविच्छिन्नाविवर्णस्युशीत्यायुःप्रकीर्तिः ॥ ७३ ॥

जिसके ललाटमें चार रेखायें समानाकार प्रतीत हों और जिसकी श्रीवारेखायें प्रतीत हों तो उस प्राणी को शुभफल कहना चाहिये व जिसके ललाटमें चार रेखायें पीली व आर्द्धचिन्न होकर मैलीसी प्रतीत हों तो वह प्राणी अस्सी वर्षकी उमरवाला कहाता है ॥ ७२ ॥

अथ स्त्रीणां ललाटलक्षणं व्याख्यायते—

भालगेन त्रिशूलेन निर्मितेन स्वयंभुवा ।

नितम्बिनीसहस्राणां स्वामित्वं योषिदामुयात् ॥ ७४ ॥

जिसके ललाट में ब्रह्माजी के रचेहुए त्रिशूलका निशान प्रतीत हो तो वह स्त्री हजारों लिंगों के स्वामित्व को पाती है यानी उस स्त्री को हजारों लिंगां हाथ जोड़े हुए से करती हुई आज्ञा को मानती हैं ॥ ७४ ॥

एकरेखा भवेद्यस्या ललाटे शोभना भवेत् ।

श्रीवत्सं स्वस्तिकं चैव ललाटे दृश्यते सदा ॥ ७५ ॥

प्रलम्बिनि ललाटे तु देवरं हन्ति चाङ्गना ।

स्मिते कूपे गण्डयोश्च सा ध्रुवं व्यभिचारिणी ॥ ७६ ॥

जिसके ललाट में एकमात्र रेखा प्रतीत हो अथवा श्रीवत्स या स्वस्तिक (त्रिकोण कार) निशान प्रतीत हो तो सदैव शुभदायक होता है और जिसका लम्बा प्रतीत हो वह स्त्री देवर को निश्चय कर विनाशती है और जिस स्त्री के हसने पर गालों में गड़व देखेजावें तो वह स्त्री निश्चयकर व्यभिचारिणी (त्रिनारि) होती है ॥ ७५ । ७६ ॥

ललाटे दृश्यते यस्यास्त्रिशूलं कृष्णपिङ्गलम् ।

सा पञ्च जनयेत्पुत्रान्धनधान्यं विवर्धयेत् ॥ ७७ ॥

न पृथू बालेन्दुनिमे झुवौ चाथ ललाटकम् ।

शुभमधेन्दुसंस्थानमतुङ्गं स्यादलोमकम् ॥ ७८ ॥

जिसके ललाट में काला व पीला त्रिशूलाकार निशान प्रतीत हो तो वह खीं पांच पुत्रों को उपजाती हुई धन, धान्य को बढ़ाती है और जिसकी भौंहें चौड़ी न होकर बालचन्द्रमा के समान प्रतीत हों व जिसका ललाट उच्चतारहित व लोमों से विहीन होकर अर्धचन्द्राकार प्रतीत हो तो उस खीं को शुभदायक होता है ॥ ७७ । ७८ ॥

भालः शिराविरहितो निलोमार्धेन्दुसन्निभः ।

अनिष्टस्त्रयङ्गुलो नार्याः सौभार्यारोग्यकारणम् ॥ ७९ ॥

व्यक्तस्वस्तिकरेखं च ललाटं राज्यसम्पदे ।

रोमशेन शिरालेन प्रांशुना रोगिणी स्मृता ॥ ८० ॥

जिसका ललाट नसों से रहित व लोमों से विहीन व अर्धचन्द्राकार व गहिरा न हो कर तीन अङ्गल प्रतीत हो तो वह खीं सुहागिल होकर आरोग्य रहती है व जिसके ललाट में स्वस्तिक (त्रिकोणाकार) रेखा विशेष प्रकट होती हो तो राज्यसंपदा के लिये कहाती है यानी वह खीं रानी होकर संपदा को भोगती है और जिसका ललाट रोमों से संयुत होकर नसों से घिरा हुआ ऊंचासा प्रतीत हो तो वह खीं रोगिणी (रोगवाली) कहीजाती है यानी उस खीं को हमेशा रोगही घेरे रहता है ॥ ७९ । ८० ॥

अथ ललाटे सप्तस्वराणां विचारमाह—

श्रुतिभाः स्युः स्वराः पद्मर्जर्भमगान्धारमध्यमाः ।

पञ्चमो धैवतश्चाथ निषाद इति सप्त ते ॥ ८१ ॥

कानों में प्रकाशित होते हुए वे सात स्वर होते हैं जिनमें पहला पद्म, दूसरा ऋषभ, तीसरा गान्धार, चौथा मध्यम, पांचवां पञ्चम, छठा धैवत और सातवां निषाद कहाता है वहां पहले ' पद्म ' का व्याख्यान करते हैं कि, " नासा कण्ठमुरस्तालु जिहा दन्तांश संस्पृशन । पद्मभ्यः संजायते यस्मात्तस्मात्पद्म इति स्मृतः " नाक, कण्ठ, वक्षःस्थल, तालु, जिहा और दांत इनको स्पर्श करता हुआ जो छहों से पैदा होता है इसलिये उसको पद्म कहते हैं और (ऋषति बलीवर्द्दस्वरसादृशं गच्छतीति ऋषभः) जो बैलके स्वर के समान चलता है उसे ' ऋषभ ' कहते हैं और (गन्धारदेशे भवः गान्धारः) जो गन्धार देश में हुआ है उसे ' गान्धार ' कहते हैं और (तद्वदेवोत्थितो वायुरुरः कण्ठसमाहतः । नाभिं प्राप्तो महानादो मध्यस्थस्तेन मध्यमः) उसी प्रकार उठा वायु वक्षःस्थल व कण्ठ से ताड़ित होता हुआ नाभि में पहुँचकर महानादवाला होकर बीच में रहता है इसलिये मध्यम कहा जाता है और (वायुः समुहतो नाभेरुरोहत्कण्ठपूर्वम् । विचरन्पञ्चमस्थान-

प्राप्त्या पञ्चम उच्यते) नाभि से उठा हुआ पवन वक्षःस्थल, हृदय, कण्ठ और मस्तक में विचरता हुआ रहता है इसलिये पांच स्थानों की प्राप्ति से 'पञ्चम' कहाता है और (धीमता-मर्यं धैवतः) धीमानों का जो यह शब्द है उसे धैवत कहते हैं और (निषीदिति मनो-यस्तिन्निति निषादः) जिसमें मन लगता है उसे 'निषाद' कहते हैं ये सातो स्वर ललाच की रेखाओं से जाने जाते हैं यह सांगीत शास्त्रवालों ने कहा है अब पूर्वोक्त स्वरों को कौन कौनसे प्राणी बोलते हैं उसको कहते हैं ॥ ८१ ॥

षड्जं रौति मयूरस्तु गावो नर्दन्ति चर्षभम् ।

अजाविकौ च गान्धारं क्रौञ्चो नदति मध्यमम् ॥ ८२ ॥

पुष्पसाधारणे काले कोकिलो रौति पञ्चमम् ।

अश्वस्तु धैवतं रौति निषादं रौति कुञ्जरः ॥ ८३ ॥

मोर षड्ज स्वरको बोलता है व गौवें ऋषभ स्वरको बोलती हैं व वकरी तथा भैङ्ग गान्धार स्वरको बोलती हैं और क्रौञ्च (कराकुलनामक) पक्षी मध्यम स्वरको बोलता है व पुष्पों के साधारण काल में कोकिला पञ्चम स्वरको बोलती है व घोड़ा धैवतस्वरको बोलता है और हाथी निषाद स्वरको बोलता है ॥ ८२ । ८३ ॥

अथ पद्जाधिपान्त्रहानाह—

पद्जाधिपः सूर्यमूर्त्रैषमेशो गुरुः स्मृतः ।

गान्धाराधिपतिभौमो रविर्मध्यमनायकः ॥ ८४ ॥

पञ्चमेशोभृगुःप्रोक्तो धैवतेशो बुधः स्मृतः ।

निषादाधिपतिश्चोक्तो निशानायकसंज्ञकः ॥ ८५ ॥

पद्जका स्वामी शनैश्चर, ऋषभका स्वामी बृहस्पति, गान्धारका स्वामी मङ्गल, मध्यम का स्वामी सूर्य, पञ्चम का स्वामी शुक्र, धैवतका स्वामी बुध और निषादका स्वामी चन्द्रमा कहाता है ॥ ८४ । ८५ ॥



अथ पुनरपि विन्दुजनुतिलमशकावर्तादिचिह्नान्याह—

नखेषु विन्दवः श्वेताः प्रायः स्युः स्वैरिणीस्त्रियः ।

पुरुषा अपि जायन्ते दुःखिनः पुष्पितैर्नखैः ॥ ८६ ॥

जिनके नखों में सफेद विन्दु (कौड़ीसी) प्रतीत हों तो वे स्त्रियां प्रायः स्वैरिणी (व्यभिचारिणी) होती हैं और यदि पुरुषों के नखों में सफेद विन्दु प्रतीत हों तो वे भी दुःखी रहते हैं ॥ ८६ ॥

विषमैर्जन्मुभिर्निःस्वा आस्थिनद्वैश्च मानवाः ।

उञ्जतैर्भौगिनो निम्नैर्निःस्वाः पीनैर्धनान्विताः ॥ ८७ ॥

जिनकी हँसुलियां विषम होकर हाड़ों से बँधी हों तो वे प्राणी दरिद्रतासंपन्न होते हैं व जिनकी हँसुलियां ऊंचीसी प्रतीत हों तो वे प्राणी भोगी होते हैं व जिनकी हँसुलियां निचलीसी प्रतीत हों तो वे प्राणी निर्धनी होते हैं और जिनकी हँसुलियां मोटीसी प्रतीत हों तो वे प्राणी घनवान् होते हैं ॥ ८७ ॥

मुखे तिलं यस्य च तस्य लिङ्गे ह्यक्षणोरधस्तस्य च कुक्षिगं स्यात् ।

भुजे भवेत्तस्य च मूलजन्म पूर्वाद्वितीये जटुलं स्वदेहे ॥ ८८ ॥

जिसके मुख में तिलका निशान प्रतीत हो तो उस प्राणी के लिङ्ग देश में अवश्यही तिलका निशान होता है और यदि स्त्रियों के मुख में तिलका निशान प्रतीत हो तो उन स्त्रियों की योनि (भग) में अवश्यही तिल होता है व जिसकी आंखों के नीचे तिलका निशान प्रतीत हो तो उस नर व नारीकी कोखि में अवश्यही तिल होता है व जिसकी मुजों में तिलका निशान प्रतीत हो तो उसका जन्म मूलनक्षत्र में कहाजाता है और जिसको अपनी देह में लसुन का निशान प्रतीत हो तो उसका जन्म पूर्वपाद में जानना चाहिये ॥ ८८ ॥

शुवोरन्ते ललाटे वा मशको राज्यसूचकः ।

पुत्रदो ज्ञानदो भूत्वा दुःखदौर्भाग्यभञ्जकः ॥ ८९ ॥

जिसके खौंहों के बीच या ललाट में मशेका निशान प्रतीत हो तो राज्यसूचक होता है तथा पुत्रदायक व ज्ञानदायक होकर दुःख व दौर्भाग्य को विनाशता है ॥ ८९ ॥

वामे कपोले मशकः शोणो मिष्ठान्वदः स्त्रियाः ।

१ पर्ति त्यक्त्वा तु या नारी गृहादन्यन्त्र गच्छति । अन्येषु रमते नित्यं स्वैरिणी सा क्षीरीयते ॥ १ ॥

तिलकं लाञ्छनं वापि हृदि सौभाग्यकारणम् ॥ ६० ॥

जिसके वायें कपोल (गाल) पैर रक्खवर्णवाले मशे का निशान प्रतीत हो तो उन नारी के लिये शुभकारी होकर मिष्ठान्दायक होता है और जिसके हृदय में तिलक का निशान प्रतीत हो तो सौभाग्य का कारण होता है ॥ ६० ॥

यस्या दक्षिणवक्षोजे भवेत्तिलकलाञ्छनम् ।

कन्याचतुष्टयं सूते सूते सा च सुतत्रयम् ॥ ६१ ॥

तिलकं लाञ्छनं शोणं यस्या वामकुचे भवेत् ।

एकं पुत्रं प्रसूयादौ अन्ते च विधवा भवेत् ॥ ६२ ॥

जिसके दाहिने स्तनमें तिलका निशान प्रतीत हो तो वह स्त्री चार कन्याओं को पैदा कर तीन लड़के या दो लड़कों को उपजाती है और जिसके वायें स्तन (दूध) में तिलक का निशान लालवर्ण होकर प्रतीत हो तो वह स्त्री पहले पुत्र को उपजा कर आखिरी विधवा (रांड) होजाती है ॥ ६१ । ६२ ॥

गुद्यस्य दक्षिणे भागे तिलको यदि शोभते ।

तदा क्षितिपतेः पलीं सूते च क्षितिपं सुतम् ॥ ६३ ॥

नासाश्रे मशकः शोणो महिष्या एव जायते ।

कृष्णः स एव भर्तृवन्याः पुंश्चत्या वा प्रकीर्तिः ॥ ६४ ॥

जिसके गुद्यदेश के दक्षिण भाग में यदि तिलका निशान सोहता हो तो वह स्त्री रान्दे होकर राजकुमार को उपजाती है और जिसकी नासिका के आगे लाल मशा का निशान प्रतीत हो तो वह स्त्री पटरानी होती है और जिसकी नासिका के आगे काले तिलका निशान प्रतीत हो तो वह स्त्री स्वामी को मारती है या व्यभिचारिणी होजाती है ॥ ६३ । ६४ ॥

नाभेरधस्तात्तिलको मशको लाञ्छनं शुभम् ।

मशकस्तिलकश्चिह्नं गुल्फदेशे दरिद्रकृत् ॥ ६५ ॥

करे कर्णे कपाले वा कण्ठे वामे भवेद्यादि ।

एषां त्रयाणामेकं तु प्राग्गर्भो पुत्रदो भवेत् ॥ ६६ ॥

जिसकी नाभि (तोंदी) के नीचे तिल या मशे का निशान प्रतीत हो तो उस स्त्री के शुभदायक होता है व जिसके गुल्फदेश (गर्छों) में मशा व तिलका निशान प्रतीत हो तो दरिद्र को करता है व जिसके हाथ, कान, गाल व कण्ठ के वामभाग में यदि

लहसुन, मशा या तिलका निशान प्रतीत हो और यदि इन तीनों निशानों में से एकभी निशान प्रतीत हो तो उस खी का पहला गर्भ पुत्रदायक होता है ॥ ६५ । ६६ ॥

नासाश्रे दृश्यते यस्यास्तिलको मशकोपि च ।

कृष्णदन्ता कृष्णजिह्वा दशाहेन पतिं हरेत् ॥ ६७ ॥

तिलको वामतो यस्याः कुक्षिदेशे च जायते ।

माषकस्य समो वापि राजपत्री भवेद् ध्रुवम् ॥ ६८ ॥

जिसकी नासिका के अग्रभाग में तिल या मशे का निशान प्रतीत हो व जिसके काले दांत व काली जीभ प्रतीत हो तो वह खी व्याह से दश दिनकी अवधि में ही पति को मारडालती है और जिसके कुक्षिदेश (कोखि) के वामभाग में तिल या मशा के समान निशान प्रतीत हो तो वह खी निश्चय कर राजपत्री (रानी) होती है ॥ ६७ । ६८ ॥

पाश्वे स्यादीर्धतिलको यस्याः स्तिरधश्च जायते ।

वामहस्ते पतिं प्राप्य पुत्रपौत्रं प्रवर्धयेत् ॥ ६९ ॥

जिसके पाश्वदेश में या वार्ये हाथ में चिकना होकर दीर्घाकार तिलका निशान प्रतीत हो तो वह खी पति को पाकर पुत्र पौत्रों को बढ़ाती है ॥ ६९ ॥

यस्या गण्डेधरे वामे हस्ते कर्णे गले तथा ।

माषकं तिलकं विद्यात्सा कन्या सुखमेधते ॥ २०० ॥

जिसके गाल, ओठ, हाथ, कान तथा गला इन्होंके वामभाग में मशा या तिलका निशान प्रतीत हो तो वह कन्या सुखको पाती है ॥ २०० ॥

आरकं वामके यस्याः कुक्षिदेशे च दृश्यते ।

माषकं तिलकं वापि सा कन्या सुखभागिनी ॥ १ ॥

जिसके कुक्षिदेश में वार्येतरफ लालबर्णवाला मशा व तिलका निशान प्रतीत हो तो वह कन्या सुखों की सेवनेवाली होती है ॥ १ ॥

पाणौ प्रदक्षिणावर्तो धर्म्यो वामो न शोभनः ।

नाभौ श्रुतावुरसि वा दक्षिणावर्तं ईडितः ॥ २ ॥

जिसके हाथ में रोमों या रेखाओं का 'दहिनावर्त' प्रतीत हो तो उस खी के लिये धर्मवर्धक होता है व जिसके हाथ में 'वामावर्त' प्रतीत हो तो उस खी को शुभदायक नहीं होता है व जिसकी नाभि, कान व छाती में 'दहिनावर्त' प्रतीत हो तो उस खी को शुभदायक कहाता है ॥ २ ॥

सुखाय दक्षिणावर्तः पृष्ठवंशस्य दक्षिणे ।
अन्तःपृष्ठे नाभिसमो बह्यायुः पुत्रवर्धनः ॥ ३ ॥

राजपत्न्याः प्रदृशयेत् भगमौलौ प्रदक्षिणः ।

सचेच्छकभङ्गः स्याद् बह्यपत्यः सुखप्रदः ॥ ४ ॥

जिसके पृष्ठवंश (पीठके बांस) की दाहिनी ओर दहिनावर्त प्रतीत हो तो सुखने लिये होता है व जिसकी पीठ के बीच में तोंदी के समान दहिनावर्त प्रतीत हो तो वहुत सी आयु को करता हुआ पुत्रों को बढ़ाता है और जिसकी भग (योनि) के ऊपरी भाग में दहिनावर्त निशान प्रतीत हो तो वह स्त्री राजपत्नी (रानी) होती है व जिसकी भग ने ऊपरी भाग में शकटाकार निशान भङ्ग होकर प्रतीत हो तो वहुत संतानों को करता हुआ सुखदायक होता है ॥ ३ । ४ ॥

कण्ठिगो गुह्यवेधेन पत्यपत्यनिपातनः ।

स्यातामुदरवेधेन पृष्ठावर्तो न शोभनौ ॥ ५ ॥

एकेन हन्ति भर्तारं भवेदन्येन पुंश्चली ।

कण्ठिगो दक्षिणावर्तो दुःखवैधव्यसूचकः ॥ ६ ॥

जिसकी कमर में गुदा को वेधन कर दहिनावर्त निशान प्रतीत हो तो उस स्त्री के पति व पुत्रों का मारनेवाला होता है व जिसकी पीठ में पेट को वेधन कर दो दहिनावर्त प्रतीत हों तो उस स्त्री को शुभदायक नहीं होते हैं वरन् वह स्त्री एक निशान से पतिको मारती है और दूसरे निशान से व्यभिचारिणी होजाती है और जिसके कण्ठ में दहिनावर्त निशान प्रतीत हो तो उस स्त्री के लिये दुःख व वैथव्य को जताता है ॥ ५ । ६ ॥

सीमन्तेऽथ ललाटे वा त्याज्या दूरात्प्रयत्नः ।

सा पतिं हन्ति वर्षेण यस्या मध्ये कृकाटिके ॥ ७ ॥

प्रदक्षिणो वा वामो वा रोमणामावर्तकः स्त्रियाः ।

एको वा मूर्धनि द्वौ वा वामे वामगतौ यदि ।

आदशाहं पतिनी सा त्याज्या दूरात्सुबुद्धिना ॥ ८ ॥

जिसके शीश या ललाट में दहिनावर्त निशान प्रतीत हो तो उस स्त्री को बड़े यत्र के साथ त्याग देना चाहिये व जिसकी घांटी के बीच दहिनावर्त निशान प्रतीत हो तो वह स्त्री व्याह से एकही वर्ष में पति को मारडालती है व जिसके मस्तक में एकमात्र रोमों का दहिनावर्त या वामावर्त प्रतीत हो अथवा दो वामावर्त प्रतीत हों तो वह स्त्री व्याहसे दश दिवस मेंही पति को मारती है इसलिये बुद्धिमानों को वह स्त्री दूरसेही त्यागना चाहिये ॥ ७-८ ॥

कव्यावर्ता च कुलटा नाभ्यावर्ता पतित्रता ।
पृष्ठावर्ता च भर्तृग्नी कुलटाप्यथ जायते ॥ ६ ॥

जिसकी कमर में आवर्तरेखा प्रतीत हो तो वह स्त्री व्यभिचारिणी होती है व जिसकी नाभि (तोंदी) में आवर्तरेखा प्रतीत हो तो वह स्त्री पतित्रता होती है व जिसकी पीठ में आवर्तरेखा प्रतीत हो तो वह स्त्री पति को विनाशती है अथवा वेश्या होनाती है ॥ ६ ॥

एकमुद्रो भवेद्राजा दशमुद्रो महाधनी ।

मुद्राहीनस्तु दुःखी स्याद् द्वित्रिकाभ्यां तथैव च ॥ १० ॥

एकमुद्रो भवेद्राजा द्विमुद्रो धनवान्नरः ।

त्रिमुद्रो रोगसम्पन्नो बहुमुद्रो बहुप्रजः ॥ ११ ॥

जिसके करतल में एक मुद्रा प्रतीत हो तो वह प्राणी राजा होता है व जिसके करतल में दश मुद्रायें प्रतीत हों तो वह प्राणी महाधनी होता है व जिसका करतल मुद्रारहित प्रतीत हो तो वह प्राणी दुःखी रहता है और जिसके करतल में दो व तीन मुद्रायें देखी जावें तो भी वह प्राणी दुःखी रहता है अथवा जिसके करतल में एक मुद्रा का निशान प्रतीत हो तो वह राजा होता है व जिसके करतल में दो मुद्रायें प्रतीत हों तो वह प्राणी धनवान् होता है व जिसके करतल में तीन मुद्रायें प्रतीत हों तो वह प्राणी रोगी रहता है और जिसके करतल में बहुतसी मुद्रायें प्रतीत हों तो वह प्राणी घने सन्तानोंवाला होता है ॥ १० । ११ ॥

अथ सामुद्रकीयराजयोगा व्याख्यायन्ते—

जनने प्रबलो यस्य राजयोगो भवेद्यदि ।

करे वा चरणेऽवश्यं राजचिह्नं प्रजायते ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकाल में यदि राजयोग प्रबल हो तो उस प्राणी के करतल या पादतल में अवश्यकी राजचिह्न होता है ॥ १२ ॥

अनामामूलगा रेखा सैव पुण्याभिधा मता ।

मध्यमाङ्गलिमारभ्य मणिबन्धान्तमागता ॥ १३ ॥

सोर्ध्वरेखा विशेषेण राज्यलाभकरी भवेत् ।

खण्डिता दुष्टफलदा क्षीणा क्षीणफला मता ॥ १४ ॥

करतल में जो रेखा अनामिका की मूल में प्राप्त होती है उसको ही पुण्यनामक रेखा सामुद्रिकशास्त्रवेत्तागणों ने माना है और जो मध्यमाङ्गली से चलकर मणिवन्ध (कञ्जा) के पास तक आती है वह ऊर्ध्वरेखा (फेटलाइन) विशेषता से राज्यलाभकारिय होती है व यदि ऊर्ध्वरेखा खण्डित प्रतीत हो तो दुष्टफलदायक होती है और यदि विभिन्न प्रतीत हो तो क्षीणफलों को प्रदान करती है ॥ १३ । १४ ॥

अङ्गुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य विराजते चारु यवो यशस्वी ।

स्ववंशभूषासहितो विभूषा योषाजनैरर्थगणैश्च मर्त्यः ॥ १५ ॥

वैसारिणो वातपवारणो वा चेद्वारणो दक्षिणपाणिमध्ये ।

सरोवरं चाङ्गुश्च एव यस्य वीणा च राजा भुवि जायते सः ॥ १६ ॥

जिसके करतल में अँगठा के बीच मनोहर यवाकार का निशान प्रतीत हो तो वह प्राण विभूषणों, स्त्रीजनों व अर्थगणों समेत होता हुआ यशस्वी होकर अपने वंश में भूषण होते हैं और जिसके दहिने करतल में मछली, छाता, हाथी, सरोवर, अंकुश व वीणा व निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी पृथ्वी में राजा होता है ॥ १५ । १६ ॥

मुकुरशैलकृपाणहलाङ्कितं करतलं किल यस्य स विच्चपः ।

कुमुममालिकया फलमीदृशं नृपतिरेव नृपालभवो यदा ॥ १७ ॥

करतलेपि च पादतले नृणां तुरगपङ्कजचापरथाङ्गवत् ।

ध्वजरथासनदोलिकया समं भवति लक्ष्म रमापरमालये ॥ १८ ॥

जिसका करतल दर्पण, पर्वत, तलवार व हल इन चिह्नों से चिह्नित हो तो वह प्राण धनों का स्वामी होता है व जिसका करतल फूलों की माला से अङ्कित हो तो भी वह प्राणी धनशाली होता है और यदि राजवंश में पेदा हो तो वह प्राणी राजाही होता है और जिनके करतल व पादतल में घोड़ा, कमल, धनुष, चक्र, ध्वजा, रथ, आसन आदि हिंडोले या डोली के समान निशान प्रतीत हो तो उन प्राणियों के घर में महालक्ष्मीजी निवास करती हैं ॥ १७ । १८ ॥

कुम्भस्तम्भो वा तुरङ्गो मृदङ्गः पाणावङ्गो वा द्रुमो यस्य पुंसः ।

चञ्चदण्डोऽखण्डलक्ष्म्या परीतः किंवा सोयं परिणिः शौणिङ्को वा ॥ १९ ॥

विशालभालोम्बुजपत्रनेत्रः सुवृत्तमौलिः क्षितिमण्डले यः ।

आजानुवाहुः पुरुषं तमाहुः क्षोणीभृतां सौख्यतरं महान्तम् ॥ २० ॥

जिसके करतल में घड़ा, खंभा, घोड़ा, मृदङ्ग या दृक्ष अथवा दण्डे का निशान प्रतीत

हो तो वह प्राणी अखण्डलक्ष्मी से परिपूर्ण होता हुआ पण्डित होता है अथवा शौणिडक (कलबार) होता है और जिसका भाल विशाल प्रतीत हो व लोचन कमलदल के समान हाँ व मस्तक गोलाकार प्रतीत हो व जिसकी भुजायें जानुओं पर्यन्त देखी जावें तो उस प्राणी को भूतल में पण्डितों ने राजाओं के बीच बड़ा राजा कहा है जोकि अधिक सौख्यवाला होता है ॥ १६ । २० ॥

नाभिर्गभीरा सरला च नासा वक्षस्थलं रक्षशिलातलाभम् ।

आरक्षवणौ खलु यस्य पादौ मृदू भवेतां स नृपोत्तमः स्यात् ॥ २१ ॥

जिसकी नाभि (तोंदी) गहरी हो वा नासिका सीधी प्रतीत हो व जिसका वक्षः-स्थल (छाती) लालशिलातल के समान प्रतीत हो और जिसके पैर लाल वर्णवाले होकर कोमल से प्रतीत हाँ तो वह प्राणी राजाओं में से उत्तम राजा (शाहंशाह) होता है ॥ २१ ॥

राजते करणो यस्य तिलोऽतुलधनप्रदः ।

तथा पादतले पुंसां वाहनार्थसुखप्रदः ॥ २२ ॥

राजवंशप्रजातानां समस्तफलमीदृशम् ।

अन्येषामल्पतां याति तथा व्यक्तं सुलक्षणम् ॥ २३ ॥

इति ॥

जिसके करतल में तिलका निशान प्रतीत हो तो उस प्राणी के लिये अतुल धनदायक होता है ऐसेही जिनके पादतल में तिलका निशान प्रतीत हो तो उन प्राणियों के लिये सवारी, धन व सुखों का दायक होता है यह सारा फल राजवंश में उपजे हुए महाराजों के लिये कहा है और अन्य साधारण जनों को थोड़ा सा फल प्राप्त होता है उसी प्रकार जिनके करतल या पादतल में पूर्वोक्त निशान साफ जाहिर न होते हाँ तोभी वे प्राणी थोड़ा सा फल पाते हैं ॥ २२ । २३ ॥

इति भावकुत्तहले राजयोगादिः ॥

अथ ग्रन्थान्तरेभ्यस्समुद्धृत्य राजयोगा व्याख्यायन्ते ।

यस्य प्रसूतिसमये प्रबला नृपालयोगा भवन्ति यदि वा पुरुषस्य नूनम् ।

सदाज्यलाञ्छनवराणि पदे तदीये यदा भवन्त्यपि च पाणितलेमलानि ॥ २४ ॥

जिसके जन्मसमय यदि प्रबलराजयोग प्रतीत हाँ तो उस प्राणी के पैर में निश्चयकर ऐष्ट राजचिह्न होते हैं अथवा उस प्राणी के करतल में भी अमल (साफ) राजचिह्न होते हैं ॥ २४ ॥

अनामिकामूलगता रेखा पुरयाद्वया च सा ।

प्राप्ता मध्याङ्गष्टगोर्ध्वा मणिबन्धन्तु राज्यदा ॥ २५ ॥

यवचिह्नं यदा यस्याङ्गष्टमध्ये विराजते ।

विनीतः स्याद्यशस्त्री च स्ववंशाभरणं च सः ॥ २६ ॥

जिसके अनामिका की मूलमें जो रेखा प्राप्त हो उसको पुएयरेखा कहते हैं और जो मध्यमाकी मूल में प्राप्त होकर अङ्गूठा की मूल में पहुँचती हुई कब्जे के पास आती है उसको ऊर्ध्वरेखा (फेटलाइन) कहते हैं वह उस प्राणी के लिये राज्यदायक होती है और जिसके करतल में अङ्गूठा के बीच यदि यवका निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी विनयवाला होता हुआ यशस्त्री होकर अपने बंशमें भूषण होता है ॥ २५ । २६ ।

वैसारिणो वारणो वातपवारणकं सृणिः ।

वीणा पुष्करिणी पाणौ चरणे स्युर्नराधिपाः ॥ २७ ॥

करवालादर्शमालाहलपर्वतवाजि यत् ।

पाणौ वेन्नरनाथो वा मण्डलीको यथाकुलम् ॥ २८ ॥

जिनके करतल या पादतल में मञ्जली, हाथी, छाता, अंकुश, वीणा और पुष्करिणी का निशान प्रतीत हो तो वे प्राणी राजा होते हैं और जिसके करतल में तलवार, शीशमाला, हल, पर्वत और घोड़े का निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी अपने बंश के अनुसार राजा या मण्डलीक राजा होता है ॥ २७ । २८ ॥

चेत्पाणौ चरणे हि यस्य च रथो दोला सरोजध्वजा-

श्चक्रं वा व्यजनासनानि च भवन्त्येतानि चिह्नानि च ।

नूनं तस्य गृहे भवन्ति कमलालीलाविलासो भूशं

शालाः कुञ्जरजास्तुरङ्गमभवाः ख्याता महीमण्डले ॥ २९ ॥

जिसके करतल या पादतल में रथ, दिंडोला, कमल, ध्वजा, चक्र, व्यजन (पंखा) और आसन ये निशान प्रतीत हों तो उस प्राणी के घरमें निश्चयकर लक्ष्मीलीला वे विलास अधिकता से होते हैं तथा गजशाला व अश्वशाला पृथ्वीमण्डल में विख्यात होती हैं ॥ २९ ॥

स्तम्भः कुम्भः पादपो वा मृदङ्गो पाणौ दण्डो घोटको वा यदा चेत् ।

मत्योऽत्यर्थं राजते राजलक्ष्म्या ख्यातो नूनं परिणतानां वरेण्यः ॥ ३० ॥

जिसके करतल में खंभा, घड़ा, दृक्ष, मृदङ्ग, दण्डा या घोड़े का निशान यदि प्रतीत हो तो वह प्राणी निश्चय कर विख्यात होता हुआ पण्डितों में प्रधान पण्डित होकर राजलक्ष्मी से अत्यन्त सोहता है ॥ ३० ॥

विशालभालश्चाकर्णनीलोत्पलदलेक्षणः ।

सुवृत्तमौलिश्चाजानुवाहुःस्यात्पुरुषश्च यः ॥ ३१ ॥

तमाहूर्वे बुधा भूमौ मण्डलाखण्डलं नृपम् ।

नासा तु सरला यस्य शिलातलनिम्नं च हृत् ॥ ३२ ॥

जिसका भाल विशाल हो व जिसके लोचन नीलकमल के समान होकर कानोंपर्यन्त विस्तृत हों व जिसका शीश गोलाकार प्रतीत हो व जिसकी बाहु जानुओं पर्यन्त चली गई हों उस प्राणी को पण्डितों ने पृथ्वीमण्डल में अखण्डमण्डलाधीश कहा है और जिसकी नासिका (नाक) सीधी प्रतीत हो व जिसका हृदय शिलातलके समान हो तो वह प्राणी राजों में राजा होता है ॥ ३१ । ३२ ॥

नाभिगम्भीरातिष्ठू चरणौ रक्षवर्णकौ ।

शजराजः स तु भवेन्नात्र कार्या विचारणा ॥ ३३ ॥

वंशाभिमानः समुदारचेताः प्रसन्नपूर्तिर्गुरुसाधुनग्रः ।

अनीतिभीरुः शुभवाग्विलासः साम्राज्यलक्ष्मीं लभते मनुष्यः ॥ ३४ ॥

जिसकी नाभि (तोंदी) गहिरी हो व जिसके चरण लाल वर्णवाले होकर कोपल से प्रतीत हों तो वह प्राणी राजों में राजा होता है इसमें विचार नहीं करना चाहिये और वह प्राणी अपने वंश में अभिमान रखनेवाला, उदारचित्त, प्रसन्नपूर्ति, गुरु व साधुओं में नग्नभाव रखनेहारा तथा अनीति से डरता हुआ शुभवाग्विलासी होकर साम्राज्यलक्ष्मी को पाता है ॥ ३३ । ३४ ॥

तिलः करतले यस्य विरलः स्याद्धनागमः ।

तिलः पादे नरेशः स्याद्वाहनाङ्गसमन्वितः ॥ ३५ ॥

जिसके करतल में तिलका निशान विरल प्रतीत हो तो उस प्राणी के लिये धन का आगम होता है और जिसके पादतल में तिलका निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी वाहन समूहों से संयुत होकर राजा होता है ॥ ३५ ॥

एतचिह्नं राजवंशोद्धवानां स्यान्मत्यानां तद्विदः संवदन्ति ।

स्वत्पं कल्प्यं वान्यवंशोद्धवानां मत्यानां वा स्वीयवंशानुमानात् ॥ ३६ ॥

सामुद्रिकशास्त्रेता पण्डितगणोंने राजवंश में उपजे हुए प्राणियों का यह चिह्न कहा है और अन्यवंश में उपजे हुए प्राणियों के लिये थोड़ासा फल कहना चाहिये अब जो साधारणवंश में उपजे हैं उन प्राणियों का फल अपने वंश के अनुसार कहा चाहिये ॥ ३६ ॥

चिह्नानि यानि मुनिभिः प्रतिपादितानि व्यक्तानि तानि परिपूर्णफलप्रदानि दक्षेकरेच चरणे खलु मानवानां धन्यानि चेदितरयोश्च सुलोचनानाम् ॥ ३७ ॥

जिनके दाहिने करतल व पादतल में जिन चिह्नों (निशानों) को मुनियों ने कहा वे यदि साफ साफ प्रतीत हों तो उन प्राणियों के लिये निश्चय कर परिपूर्ण फलदाय होते हैं और यदि इन्होंने के बायें करतल व पादतल में पूर्वोक्त निशान प्रतीत हों तो धन्यक होते हैं या प्रशंसनीय कहाते हैं ॥ ३७ ॥

इति शम्भुहोरामकाशे राजयोगादिः ॥

अथ वाल्मीकीयरामायणवालकाएडटीकायाः समुद्दृत्य श्रीमन्महाराजाधिराजरामचन्द्रस्य
सामुद्रिकीयराजलक्षणानि व्याख्यायन्त इत्याह—

**कक्षः कुक्षिश्च वक्षश्च प्राणस्कन्धौ ललाटिका ।
सर्वभूतेषु निर्दिष्टा उज्जतास्ते सुखप्रदाः ॥ ३८ ॥**

[इति वररुचिः]

कांच (‘बगल’) कोषि, वक्षस्थल, नासिका, स्कन्ध और ललाट ये सर्व प्राणियों में निर्दिष्ट हुए ऊंचे से प्रतीत हों तो सुखदायक होते हैं यह महर्षि वररुचि ने कहा है ॥ ३८ ॥

शंखे ललाटश्चरणे श्रीवा वक्षश्च हृतथा ।

उदरं पाणिपादं च पृष्ठं दश महत्सुखम् ॥ ३९ ॥

दीर्घञ्चू बाहुमुष्कश्च चिरंजीवी महीपतिः ।

लोके विख्यातकीर्तिः सन्महाराजो भवेन्नरः ॥ ४० ॥

[इति ब्राह्मे]

जिसके ललाट की हड्डियां, भाल, कान, श्रीवा, वक्षस्थल, हृदय, पेट, हाथ, पैर और पीठ ये दश ऊंचे से प्रतीत हों तो उस प्राणी के लिये महासुखदायक होते हैं और

* भोगी धनी स्यादुदरे विशाले विशालकद्याश्च कटौ विशाले । बहुपुत्रदारोपि विशाल पादो धनान्वितः स्याद्य विशालचक्षुः ॥ १ ॥

ते देव भर्त्र होता है ।

११३

पूर्वार्धः ।

जिसकी भौंहें, बाहें और अण्डकोष दीर्घकार प्रतीत हों तो वह प्राणी पृथ्वी का स्वामी व चिरंजीवी होकर लोक में विख्यात कीर्तिवाला होता हुआ महाराजा होता है यह ब्रह्मपुराण में कहा है ॥ ३६ । ४० ॥

समवृत्तशिराश्वैवच्छ्राकारशिरास्तथा ।

एकच्छ्रां महीं भुङ्गे दीर्घमायुश्च विन्दति ॥ ४१ ॥

[इति नारदः]

जिसका शीश समान होकर गोलाकार प्रतीत हो तथा जिसका शीश छाता के आकार प्रतीत हो तो वह प्राणी एकब्रतवाली पृथ्वी को भोगता हुआ दीर्घायु को पाता है यह नारदजी ने कहा है ॥ ४१ ॥

ललाटे यस्य दृश्यन्ते चतुष्ख्यद्येकरेखिकाः ।

शतद्रयं शतं पष्टिस्तस्यायुर्विशतिस्तथा ॥ ४२ ॥

[इति कात्यायनः]

जिसके ललाट में यदि चार रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी दो सौ वर्ष पर्यन्त जीता है व जिसके ललाट में तीन रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी सौवर्ष की आयु पाता है व जिसके ललाट में दो रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी साति वर्ष पर्यन्त जीता है और जिसके ललाट में यदि एकरेखा प्रतीत हो तो वह प्राणी बीस वर्ष की आयु पाता है यह कात्यायन ने कहा है ॥ ४२ ॥

स्वरोगतिश्च नाभिश्च गम्भीरः स प्रशस्यते ।

षणवत्यङ्गुलोत्सेधो योनांशः स दिवौकसाम् ॥ ४३ ॥

[इति ब्राह्मे]

जिसका स्वर, गमन और नाभि (तोंदी) ये तीनों गंभीरभाव से प्रतीत हों तो वह प्राणी लोक में प्रशस्त होता है और जो व्यानवे अंगुल ऊंचासा प्रतीत हो तो वह प्राणी देवताओं का अंश कहाता है यानी वह देवता का अवतार मानाजाता है यह ब्रह्मपुराण में कहा है ॥ ४३ ॥

१ छत्राकारं नरेन्द्राणां शिरो दीर्घं च दुःखिनाम् । अधमानां च पापानां येषां स्थूलपुरुषैः ॥ स्थूलशीर्षो नरो यस्तु धनवान्परिकीर्तिः । शुलाकारेण शीर्षेण मानवो मानवाधिपः ॥ विषमेण तु शीर्षेण नरेन्द्रः पुण्यहेतुकः । दीर्घशीर्णशिरो यस्तु दुःखिनो नात्र संशयः ॥ गजकुम्भशिरो यस्तु राजा स्यान्नात्र संशयः । शिरालमुन्नतं यस्य प्रशस्तं च शिरो यदि ॥ तराजा पृथिवीं भुङ्गे गजवाजिसमन्वितामिति ॥

श्रुत्वौ नासापुटे नेत्रे कर्णवोष्टौ च चूचुकौ ।
 कूर्परौ मणिबन्धौ च जालुनी वृषणौ कटी ॥ ४४ ॥
 करौ पादौ स्फिजौ यस्य समौ इयः स भूपतिः ।
 दानविख्यातकीर्तिः स्यादात्मज्ञानपरायणः ॥ ४५ ॥

जिसकी भौंहें, नासापुट (नाकके पोर) नेत्र, कान, ओठ, कुचाग्र (चूचियों की उनी) कोहनी , कब्जा, शुदुना, अण्डकोष, कमर, हाथ, पैर और कूले ये समान प्रतीत हों तो वह प्राणी पृथ्वीपाल होता है और दान से खिख्यातकीर्तिवाला हुआ आत्मज्ञान में परायण रहता है ॥ ४४ । ४५ ॥

अथ पुनरपि वाल्मीकीयरामायणयुद्धकाएडेऽपृचत्वारिंशत्सर्गे श्रीमतीमहाराज्ञीसीता नैजानि यानि सामुद्रकीयराजलक्षणानि त्रिजटां प्रत्युक्तवती तान्याह —

इमानि खलु पद्मानि पादयोर्वै कुलस्त्रियः ।

आधिराज्येभिषिच्यन्ते नरेन्द्रैः पतिभिस्मह ॥ ४६ ॥

अहो मातः, त्रिजटे ! पैरों में ये जो पद्मों के निशान प्रतीत होते हैं उनसे कुलीन राज्यासन में नरेन्द्रपतियों के साथ निश्चयकर अभिषिक्त होती हैं यानी उन स्त्रियों पतियों के साथ राज्यासन में अभिषेक किया जाता है ॥ ४६ ॥

वैधव्यं यान्ति यैर्नार्योऽलक्षणैर्भाग्यदुर्लभाः ।

नात्मनस्तानि पश्यामि पश्यन्ती हतलक्षणा ॥ ४७ ॥

जिन अलक्षणों (कुलक्षणों) से दुर्लभ भाग्यवाली (अभागिनियां) स्त्रियां विनेको पाती हैं यानी रांड़े होजाती हैं उनको मैं अपने शरीर में नहीं देखती हूं ऐसा कमूर्चित रामजी को तथा लक्षणोंको भी देखती हुई सीताजी हतलक्षणोंवाली होगई ॥ ४७ ॥

सत्यनामानि पद्मानि स्त्रीणामुक्तानि लक्षणैः ।

तान्यद्य निहते रामे वितथानि भवन्ति मे ॥ ४८ ॥

लक्षणज्ञाता पण्डितों ने या लक्षणप्रतिपादकशास्त्रों ने स्त्रियों के करतल या पाव में जो पद्मों के निशान सचेनामवाले यानी सफल कहे थे वे आज मेरे, रामजीके होजाने पर विफल होते हैं ॥ ४८ ॥

केशाः सूक्ष्माः समा नीला श्रुत्वौ चासंहते मम ।

१ नाभिः स्थूला सूक्ष्मकेशी नातिदीर्घा सुमध्यमा । पीनस्तनी मृगाक्षी च सा नारी स्मेधत इति ॥ १ ॥

वृत्ते चारोमके जड्हे दन्ताश्चाविरला मम ॥ ४६ ॥

मेरे केश (वाल) पतले व समानाकार होकर काले से प्रतीत होते हैं व मेरी भौहैं
मिली हुई नहीं प्रतीत होती हैं व मेरी जाँघें गोलाकार होकर लोमों से रहित देखी जाती
हैं और मेरे दांत अविरल होकर कुन्दकलीं से प्रतीत होते हैं ॥ ४६ ॥

शङ्खे नेत्रे करौ पादौ गुलफावूरु समौ चितौ ।

अनुवृत्तनखाः स्तिनग्धाः समाश्चाङ्गलयो मम ॥ ५० ॥

ललाट की हड्डियां, नेत्र, हाथ, पैर, गंडे और ऊरु ये समानाकार होकर बड़े से
प्रतीत होते हैं व मेरे नख (नह) क्रमसे गोलाकार होकर चिकने से प्रतीत होते हैं और
मेरी अँगुलियां समानाकार देखी जाती हैं ॥ ५० ॥

स्तनौ चाविरलौ पीनौ मामकौ मणनचूचुकौ ।

मण्ना चोत्सेधनी नाभिः पाशवर्गस्कं च मेचितम् ॥ ५१ ॥

मेरे स्तन मिलेहुए व मोटे होकर बुसी ढेपुनियोंवाले देखे जाते हैं व मेरी नाभि
(तोंदी) मण्नहुई ऊँची सी प्रतीत होती है और मेरी पसुरियाँ व छाता ऊँचा सा प्रतीत
होता है ॥ ५१ ॥

मम वैर्णो मणिनिभो मृदून्यज्ञरुहाणि च ।

प्रतिष्ठितां द्वादशाभिर्मामूचुः शुभलक्षणाम् ॥ ५२ ॥

मेरा वर्ण मणि के समान प्रतीत होता है व मेरे रोबां कोमल से प्रतीत होते हैं तथा
वायें पैर की पांचों अँगुलियां व दाहिने पैर की पांचों अँगुलियां व दोनों पैरों के तलवे
इन वारह निशानों से प्रतिष्ठित मुझको मुनियों ने शुभ लक्षणोंवाली कहा है ॥ ५२ ॥

समग्रयवमच्छदं पाणिपादं च वर्णवत् ।

मन्दस्मितेत्येव च मां कन्यालाक्षिणिका विदुः ॥ ५३ ॥

मेरे हाथ व पैरकी सारी अँगुलियां यवों के निशानों से अङ्कित होकर ब्रेद रहित प्र-
तीत होती हैं व मेरे हाथ व पैर वर्णवाले देखे जाते हैं व मेरा हँसना मन्द प्रतीत होता है
इसलिये कन्यालक्षणों के ज्ञाता परिषत्तलोग मुझे शुभलक्षणोंवाली जानते हैं ॥ ५३ ॥

आधिराज्येभिषेको मे ब्राह्मणैः पतिना सह ।

कृतान्तनिपुणैरुक्तं तत्सर्वं वितर्थीकृतम् ॥ ५४ ॥

राज्यासन में पति के साथ मेरा अभिषेक होगा यह जो ज्योतिःशास्त्रवेत्ता व्राह्मण
ने कहा था वह सबही आज श्रीरामजी के न होने पर फ़ूटासा किया गया ऐसा वच
सुनकर त्रिजटानामक राक्षसी ने कहा कि अहो सीते ! ये राम लक्ष्मण दोनों भाई अ-
मृतक नहीं हुए, क्योंकि इनके मुखमण्डलों की प्रभा विनष्ट नहीं हुई है इसलिये जीते
इनको मूर्च्छित जानना चाहिये यह सुनकर सीताजी ने कहा कि अहो मातः ! आपका
चन ऐसाही हो ऐसा कह पुष्पकारूढ़ रामदयिता सीताजी अशोकवाटिका में आप
श्रीरामचन्द्रजी को चिन्तन करने लगीं ॥ ५४ ॥

इति स्त्रीणां राजयोगादिः ।

अथ सामुद्रिकीयायुर्ध्ययोगा व्याख्यायन्ते—

गृदसन्धिशिरास्नायुः संहताङ्गः स्थिरेन्द्रियः ।

उत्तरोत्तरसुक्षेत्रो यः स दीर्घायुरुच्यते ॥ ५५ ॥

गर्भात्प्रभृत्यरोगो यः शनैः समुपचीयते ।

शरीरज्ञानविज्ञानैः स दीर्घायुः समाप्तः ॥ ५६ ॥

जिसके शरीर में सन्धि, शिरा और स्नायु ये छिपे हुए प्रतीत हों व जिसका स-
अङ्ग हड़ (मज्जबूत) व इन्द्रियां स्थिर हों व शरीर उत्तरोत्तर सुदृश्य हो तो वह प्रा-
दीर्घायु कहा जाता है और जो गर्भ से लगाकर आरोग्य रहता हुआ धीरे धीरे बढ़ता
व जिसका शरीर ज्ञान व विज्ञान से पूर्ण बना रहता है वह प्राणी दीर्घायु कहाता है व
संक्षेप से कहागया ॥ ५५ । ५६ ॥

मध्यमस्यायुषो ज्ञानमत ऊर्ध्वं निवोध मे ।

अधस्तादक्षयो यस्य लेखाः स्युर्व्यक्तमायताः ॥ ५७ ॥

द्वे वा तिस्रोऽधिका वापि पादौ कर्णौ च मांसलौ ।

नासाग्रमूर्ध्वं च भवेदूर्ध्वलेखाश्च पृष्ठतः ।

यस्य स्युस्तस्य परममायुर्भवति सप्ततिः ॥ ५८ ॥

अहो प्रिये ! इसके अनन्तर मध्यम आयुका ज्ञान मुझ से सुनिये कि जिसकी आयु
के नीचे व्यक्त व विस्तृत होकर दो या तीन या अनेक रेखायें प्रतीत हों व पैर तथा का
मांसल हों व नासिका का अग्रभाग ऊंचासा प्रतीत हो व जिसकी पीठ में ऊर्ध्वरेखा
तीत हो तो उस प्राणी की परम आयु सत्तरि ७० वर्षकी होती है ॥ ५७ । ५८ ॥

जघन्यस्यायुषो ज्ञानमत ऊर्ध्वं निबोध मे ।
 द्वस्वानि यस्य पर्वाणि सुमहच्चापि मेहनम् ॥ ५६ ॥
 तथोरस्यवलीढानि न च स्यात्पृष्ठमायतम् ।
 ऊर्ध्वश्च श्रवणौ स्थानान्नासा चोच्चा शरीरिणः ॥ ६० ॥
 हसतो जल्पतो वापि दन्तमांसं प्रदृश्यते ।
 प्रेक्षते यच्च विभ्रान्तं स जीवेत्पञ्चविंशतिम् ॥ ६१ ॥

अहो प्रिये ! अब अल्पायु का ज्ञान मुझसे सुनिये कि जिसके करतल में अङ्गुलियाँ की पर्वै छोटीसी हों व लिङ्ग बड़ा भारी प्रतीत हो व वक्षस्थल लोम व मांस से विहीन हो व पीठ चौड़ी न हो व कान यथास्थान स्थित व कुछेक ऊपर को चढ़े से प्रतीत हों व जिसकी नासिका (नाक) ऊंचीसी प्रतीत हो व जिसके हँसते व बात करते हुए दांतों का मांस देखा जाता हो और जो उन्मत्त की नाई दीखता है वह प्राणी पचास २५ वर्ष पर्यन्त जीता है ॥ ५६ । ६१ ॥

पादौ पाणी च पाश्वे च पृष्ठं चैव तु चूचुकम् ।
 रदनावदनं चैव स्कन्धौ चैव ललाटिका ॥ ६२ ॥
 यस्यैतानि च दृश्यन्ते महान्ति च शरीरिणः ।
 अङ्गुलीनां च सर्वासां पर्वारयुच्चानि यस्य वै ॥ ६३ ॥
 विशालौ च भुजौ यस्य नेत्रे स्यातां सुर्दीर्घके ।
 शुकुट्योस्तनयोर्मध्यं वक्षश्चैव तु विस्तृतम् ॥ ६४ ॥
 जड़े च मेहनं चैव ग्रीवादेशश्च द्वस्वकः ।
 नाभिः स्वरश्च बुद्धिश्च गम्भीरा यस्य दृश्यते ॥ ६५ ॥
 स्तनौ चानुन्नतौ स्यातां कर्णै चैव तु रोमशौ ।
 आयतौ विस्तृतौ यस्य मस्तकं चन्दनार्चितम् ॥ ६६ ॥
 विशुष्कं हृदयं यस्य शरीरं शुष्यमाणकम् ।

१ न थीस्त्यजति रक्षाक्षं नार्थः कनकपिङ्गलम् । दीर्घवाहुं न चैश्वर्यं न सौख्यं प्रह-
 सन्मुखमिति ॥ १ ॥

२ स्वरो बुद्धिश्च नाभिश्च त्रिगम्भीरमुदाहृतम् । त्रयं यस्य तु विस्तीर्णं तस्य श्रीः स-
 वंदा सुखी ॥ उरः शिरो ललाटं च त्रिविस्तीर्णं प्रदृश्यत इति ॥

दीर्घायुषं विजानीयात्तं नरं धर्मधारिणम् ॥ ६७ ॥
एतलक्षणहीनो यो ह्यल्पायुः स प्रकीर्तिः ।
मिश्रलक्षणयुक्तो यो मध्यमायुरुदाहृतः ॥ ६८ ॥

जिसके पैर, हाथ, वगल, स्तनाग्र, दांत, मुख, कन्धे और भाल ये अतीव विशाल होकर प्रतीत हों व सारी अङ्गुलियां व उनकी पौरैं वडीसी प्रतीत हों व जिसकी भुविशाल प्रतीत हों व लोचन लम्बे से प्रतीत हों व भौंहें व स्तनों का मध्यभाग तनवक्षस्थल चौड़ासा प्रतीत हो व जांघ, लिङ्ग और ग्रीवा ये छोटे से प्रतीत हों नाभि (तोंदी) स्वर और बुद्धि ये गंभीरभावसे प्रतीत हों व दोनों स्तन ऊंचे न हों व कान लोमोंब होकर लम्बे व चौड़े से प्रतीत हों व जिसका मस्तक चन्दन से चर्चित हो व जिसका हृसूखगया हो व सारा शरीर सूखा हुआ प्रतीत हो तो उस धर्मधारी प्राणी को दीप्तजानना चाहिये और जो प्राणी इन पूर्वोक्त लक्षणों से हीन देखा जावे तो वह अल्प कहाता है और जो प्राणी मिले लक्षणोंवाला प्रतीत हो तो उसको आचार्यों ने मध्यम कहा है ॥ ६२ । ६८ ॥

पुनरायुर्विवोधार्थमङ्गप्रत्यङ्गमुच्यते ।
हस्तपादादिकानीह व्यज्ञानि कथितानि वै ॥ ६९ ॥
तदन्यानि च सर्वाणि प्रत्यङ्गानि विदुर्बुधाः ।
तेषां प्रमाणं वक्ष्यामि शृणुष्वावहिता प्रिये ॥ ७० ॥

अब फिर आयुर्दाय के परिज्ञानार्थ अङ्ग व प्रत्यङ्ग कहेजाते हैं तदां हस्त, पाद व मस्तादि अङ्ग कहे व उनसे अन्य समस्त अवयवों को पहिडतों ने प्रत्यङ्ग जतलाया है उन प्रमाण मैं कहूंगा अहो प्रिये ! सावधान होकर सुनिये ॥ ६९ । ७० ॥

पादाङ्गुष्टप्रदेशिन्योरन्तरं द्वयङ्गुलं मतम् ।
प्रदेशिन्याः कनिष्ठान्तं ज्ञेयं मानं मनीषिभिः ॥ ७१ ॥
यथोक्तरं प्रमाणं तु हीनं पञ्चमभागकैः ।
पादप्रपादतलयोरायतं चतुरङ्गुलम् ॥ ७२ ॥

पैरों का अङ्गूठा व तर्जनी इन दोनों के अन्तर (मध्यस्थल) का प्रमाण दो अं-

१ अतिमेधातिकीर्तिश्च विक्रमश्च सुखानि च । प्रथमे वयसि दृश्यन्ते ह्यल्पायुभवेचारः ॥ १ ॥

माना है, मध्यमा का प्रमाण तर्जनी के पांच भाग का चार भाग कहा है व अनामिकाकी दीर्घता का मान मध्यमा के पांच भाग का चार भाग है व कनिष्ठा की दीर्घता का प्रमाण अनामिका के पांच भाग का चार भाग है व पैरों तथा पदार्थों के तलों की दीर्घता का मान चार अंगुल कहा है ॥ ७३ । ७२ ॥

पञ्चाङ्गुलप्रमाणेन विस्तृतं प्रोच्यते बुधैः ।

पञ्चाङ्गुलप्रमाणेन पाष्ठर्योरायतमुच्यते ॥ ७३ ॥

चतुर्भिरङ्गुलैः प्रोक्तं विस्तृतं बुद्धिमत्तरैः ।

पादयोराततं ज्ञेयं चाङ्गुलैर्मनुसंभितैः ॥ ७४ ॥

पांच अंगुल के प्रमाण से पण्डितलोग विस्तार कहते हैं व एडियों की दीर्घता "पांच अंगुल के प्रमाण से कही जाती है व उनका विस्तार बुद्धिमानों ने चार अंगुल कहा है और पैरों की दीर्घता चौदह अंगुल जानना चाहिये ॥ ७३ । ७४ ॥

पादगुल्फं समारभ्य यावज्जानु प्रदश्यते ।

तन्मध्यविस्तृतं ज्ञेयमङ्गुलैर्मनुसंभितैः ॥ ७५ ॥

अष्टादशाङ्गुलैर्जन्मा चायता मुनिसंमता ।

जानूपरिष्टाद्वार्तिंशदङ्गुलैर्दीर्घमानकम् ॥ ७६ ॥

पैरों के गण्ठों से लेकर जहां तक जानु (बुद्धन्) देखे जाते हैं उनके वीच का विस्तार चौदह अंगुल जानना चाहिये और मुनियों से मानी मोटी जड़ायें चौड़ी अठारह अंगुल दीर्घ कहाती हैं व जानुओं के ऊपर दीर्घता का प्रमाण वर्तीस अंगुल कहा है ॥ ७५ । ७६ ॥

एवं प्रमाणं पञ्चाशदङ्गुलं प्रोच्यते बुधैः ।

ऊरुमानप्रमाणेन तुल्या जन्मा च कीर्तिता ॥ ७७ ॥

वृषणौ चिबुके दन्ता तथैवं कर्णमूलकम् ।

नासापुट्यौ च नयने तेषां मध्यं च द्व्यङ्गुलम् ॥ ७८ ॥

इसप्रकार सामुद्रिकशास्त्रवेत्ता पण्डितलोग पचास अंगुल प्रमाण कहते हैं और जंघायें ऊर्खों के मान के प्रमाण से समान कही जाती हैं व अण्डकोष, चिबुक (बुद्धी), दांत, कर्णमूल, नासापुट और नेत्र इन्हों का मध्यस्थल दो अङ्गुल कहाता है ॥ ७७ । ७८ ॥

मेहनं वदनं चैव नासाकर्णे ललाटिका ।

एषां चैव शिरोधेश्च उच्चता चतुरङ्गुला ॥ ७६ ॥

चक्षुपोरायतं ज्ञेयमङ्गलैर्वेदसंमितैः ।

लिङ्गतो यावती नाभिर्नाभितो हृदयं तथा ॥ ८० ॥

लिङ्ग, मुख, नासिका, कान, ललाट और ग्रीवा इन्हों की उच्चता चार अंगुल कहा है और नेत्रों की दीर्घता चार अंगुल कही जाती है व लिङ्ग से जहां तक तोंदी व तोंडी से जहांतक हृदय रहता है ॥ ७६ । ८० ॥

हृदयाद्यावती ग्रीवा तन्मानं द्वादशाङ्गुलम् ।

मध्यं स्तनद्वयस्यैव दीर्घता वदनस्य च ॥ ८१ ॥

द्वादशाङ्गुलमानेन कथिता च सदा बुधैः ।

प्रकोष्ठान्मणिबन्धान्तं स्थौल्यं स्याद्वादशाङ्गुलम् ॥ ८२ ॥

हृदय से जहां तक ग्रीवा (धींच) रहती है उन सबों का मान प्रत्येक बारह अंगुल कही है व दोनों स्तनों का अन्तर (मध्यभाग) तथा मुख की दीर्घता परिणितों ने बारह अंगुल कही है और प्रकोष्ठ से मणिबन्ध (कञ्जे) पर्यन्त स्थूलता (मोटापन) बारह अंगुल कहाती है ॥ ८१ । ८२ ॥

नाभेर्निम्नतलस्यापि विस्तृतं पोदशाङ्गुलम् ।

कूर्परात्स्कन्धदेशान्तं चान्तरं पोदशाङ्गुलम् ॥ ८३ ॥

हस्तयोर्दीर्घता ज्ञेया चतुर्विंशाङ्गुला बुधैः ।

बाह्वोश्चैव प्रमाणं तु द्वात्रिंशदङ्गुलं स्मृतम् ॥ ८४ ॥

नाभि के निचले भाग (वस्तिदेश) का विस्तार सोलह अंगुल कहाता है व कोहने से कन्धों तक बीच का भाग सोलह अंगुल होता है व हाथों की दीर्घता चौबीस अंगुल परिणितों को जानना चाहिये और बाहुबों (भुजाओं) का प्रमाण बत्तीस अंगुल कहा है ॥ ८३ । ८४ ॥

ऊर्वोश्चैव तथा ज्ञेयं प्रमाणं पूर्वसंमतम् ।

मणिबन्धात्कूर्परान्तं प्रमाणं पोदशाङ्गुलम् ॥ ८५ ॥

दैर्घ्यं पाणितलस्यैव पदङ्गुलमितं स्मृतम् ।

एवन्तु विस्तृतं प्रोक्षमङ्गलैर्वेदसंमितैः ॥ ८६ ॥

अख्यांकों का प्रमाण जो कि पहले संयत होनुका है यानी बत्तीस अंगुल जानना चाहिये व करतल की दीर्घता छः अंगुल कही है ऐसेही करतल का विस्तार चार अंगुल कहा है ॥ ८५ । ८६ ॥

अङ्गुष्ठमूलादारभ्य यावत्स्याञ्च प्रदेशिनी ।

तदन्तरं बुधैर्ज्ञेयमङ्गलद्यमानकम् ॥ ८७ ॥

कर्णतो लोचनोपान्तं पञ्चाङ्गुलमितं स्मृतम् ।

तर्जन्यनामिकाङ्गुल्योरन्तरं सार्धद्यङ्गुलम् ॥ ८८ ॥

अँगूठा की मूल से लेकर जहां तक तर्जनी रहती है उनका मध्यस्थल पण्डितों को देख अंगुल जानना चाहिये व कानों से आंखों की कोरों तक का मान पांच अंगुल कहा है तर्जनी व अनामिका का अन्तर (मध्यभाग) दाईं अंगुल कहाता है ॥ ८७ । ८८ ॥

कनिष्ठाङ्गुष्ठपर्यन्तमन्तरं सार्धत्रयङ्गुलम् ।

ग्रीवाया वदनस्यापि विस्तृतं द्वादशाङ्गुलम् ॥ ८९ ॥

नासाक्षिदप्रमाणन्तु त्रिभागाङ्गुलसंमितम् ।

क्षुषोस्तारकामानं वेदभागत्रिभागकम् ॥ ९० ॥

कनिष्ठा से अँगूठा पर्यन्त के अन्तर (मध्यस्थल) का प्रमाण साडे तीन अङ्गुल कहाता है, ग्रीवा और वदन (मुँह) का विस्तार वारह अंगुल कहाजाता है व नासिका के छेदों का प्रमाण एक अंगुल के चार भाग का तीन भाग कहाता है और नेत्रों के बारा का प्रमाण नेत्र प्रमाण के चार भाग का तीन भाग होता है ॥ ८९ । ९० ॥

तारयोर्नवमो भागः पुत्तल्योर्मानमुच्यते ।

मस्तकन्तु समारभ्य केशान्तं यावदेवहि ॥ ९१ ॥

एकादशाङ्गुलैरुक्मन्तरं बुद्धिमत्तरैः ।

मस्तकात्पृष्ठतो भागे केशान्तं यावदेवहि ॥ ९२ ॥

ताराओं का नववां भाग पुत्तलियों का प्रमाण कहाजाता है मस्तक से सन्मुख केशान्तों का मध्यस्थल बुद्धिमानों ने ग्यारह अंगुल कहा है मस्तक से पीछे की तरफ जहांतक बाल हते हैं ॥ ९१ । ९२ ॥

तन्मानन्तु बुधैरुक्मज्जलैर्दशभिः प्रिये ।

कर्णतो घटिकामध्यं सप्ताङ्गलकविस्तृतम् ॥ ६३ ॥

कान्ताकटिप्रमाणेन पूरुषाणामुरः स्मृतम् ।

अष्टादशाङ्गलैः प्रोक्तं रमणीनामुरो बुधैः ॥ ६४ ॥

उसका प्रमाण परिषिद्धगणां ने दश अंगुल कहा है अहो प्रिये ! कानों से घोंटा पन मध्यस्थल के विस्तार का प्रमाण सात अंगुल कहाजाता है और स्त्रियों के कमर का प्रमाण चौबीस अंगुल माना है उसी प्रमाण से पुरुषों का वक्षःस्थल कहाजाता है परिषिद्धताँ ने स्त्रियों के वक्षःस्थल का प्रमाण अठारह अंगुल कहा है ॥ ६३ । ६४ ॥

नरणां कंटिदेशस्य मानं चाष्टादशाङ्गलम् ।

एवं सर्वशरीस्य मानं विंशाधिकं शतम् ॥ ६५ ॥

पञ्चविंशो ततो वर्षे पुमान्नारी तु षोडशे ।

समत्वागतवीर्यौ तौ जानीयात्कुशलः सुधीः ॥ ६६ ॥

पुरुषों की कमर का प्रमाण अठारह अंगुल कहा है इस प्रकार समस्त शरीर का प्रमाण एकसौ बीस अंगुल मुनियों ने बतलाया है इस प्रमाण का विचार तभी करना चाहिए जब कि पुरुष पच्चीस वर्ष का हो और स्त्री सोलह वर्ष की हो व समानता से वीर्य बल आचुका हो उस समय सामुद्रिकशास्त्र में प्रवीण परिषिद्ध पूर्वोक्त प्रमाण का विचार करें ॥ ६५ । ६६ ॥

देहः स्वैरङ्गुलैरेष यथावदनुकीर्तिः ।

युक्तप्रमाणेनानेन पुमान्वा यदि वाङ्ना ॥ ६७ ॥

दीर्घमायुरवाप्रोति वित्तं च महद्वच्छति ।

मध्यमैर्मध्यमे वायुर्वित्तहीनैस्तथावरम् ॥ ६८ ॥

अपने अंगुलों से यह देह यथावत् कीर्तन किया, गया है स्त्री या पुरुष जो प्रमाणों से संयुक्त हो तो दीर्घायुको भोगता हुआ वडे धनको पाता है और जो स्त्री अपने पुरुष मध्यम प्रमाणों से प्रतीत हो तो वह मध्यमायु को भोगता हुआ मध्यम धनको प्राप्त करती है ॥ ६७ ॥

१ कटिविंशतालात् वहुपुत्रभोगी विशालहस्तो नरपुङ्गवः स्यात् । उरो विशालं धनधारी शिरोविशालं नरपूजितः स्याद्विति ॥ १ ॥

है और जो पूर्वोक्त प्रमाणों से हीनलक्षणवाला प्रतीत हो तो वह अल्पायु को भोगता हुआ थोड़ेसे धनको पाता है ॥ ६७ । ६८ ॥

इत्यायुर्द्वययोगाः ॥

अथ पाण्यादीनां परीक्षाविचारमाह—

आदौ पाणितले रेखा जानौ पादे तथैव च ।

जङ्घयोर्लक्षणं चैव उच्चस्य चिकुकस्य च ॥ ६९ ॥

गण्डयोः पाशर्वयोश्चैव ललाटस्य च लक्षणम् ।

सर्वाङ्गानननासानां दन्तानां लक्षणं तथा ॥ १०० ॥

अब हाथ आदि के देखने का विचार कहते हैं कि अहो प्रिये ! सामुद्रिकशास्त्रवेत्ता पणित को उचित है कि पहले पाणितल की रेखा को देखे तदनन्तर मुझनु, पैर और जङ्घाओं के लक्षण का विचार करे फिर दुड़ी, गाल, बगल और भाल का लक्षण देखेंसेही समस्त अङ्ग, मुख और दांतों के लक्षणों की परीक्षा करे ॥ ६९ । १०० ॥

मयेदमुक्तं सति ! पूरुषाणां तथाङ्गनानां च सुलोचनानाम् ।

पठन्तु सभ्याः सुधियो द्विजेन्द्रा भवन्तु पूज्या नृपसंमताश्च ॥ १ ॥

अहो प्रिये ! पुरुषों तथा सुनयनी नारियों का यह लक्षण मैंने कहा इसको जो ब्राह्मण लोग पढ़ेंगे वे अच्छी बुद्धिवाले व सभा में चतुर तथा सर्वजनों से पूजनीय होकर राजा लोगों से माने जावेंगे ॥ १ ॥

इदं सामुद्रिकं शास्त्रं विष्णुना भाषितं पुरा ।

तत्सर्वं वर्णितं देवि ! किं पुनः श्रोतुमिच्छसि ॥ २ ॥

तच्छ्रुत्वा तु महादेवी महद्वर्षमवाप सा ।

प्रहृष्टवदना देवी शंकरं प्रत्युवाच ह ॥ ३ ॥

अहो देवि ! पुरातन समय विष्णु भगवान्‌जी ने इस सामुद्रिकशास्त्र को कहा है उस समस्त को मैंने तुमसे कहा अब फिर क्या सुनना चाहती हो उस वचन को सुनकर वे महादेवीजी बड़े हर्ष को प्राप्त हुईं व हर्षित वदनवाली होकर भक्तमुखदायक निजनायक शंकरजी से बोलीं ॥ २ । ३ ॥

त्वन्मुखाब्जाच्छ्रुतं नाथ नृनारीलक्षणं समम् ।

य इदं पठन्तु विद्वांसश्चाभ्यसन्तु दिवानिशम् ॥ ४ ॥

धनं धान्यं सुखं सर्वं लभन्तां कीर्तिमुत्तमाम् ।
न तेषां जायते किञ्चिद्दुर्लभं त्वत्प्रसादतः ॥ ५ ॥

अहो नाथ ! आपके नदनारविन्द से समस्त नर नारी लक्षणों को मैंने सुना जो द्वान् लोग इसको पढ़ेंगे व दिन राति अभ्यास करेंगे वे लोग धन, धान्य व सम्पत्ति तथा उत्तम कीर्ति को पावेंगे और आपकी प्रसन्नता से उन लोगों को कुछ दुर्लभ रहता है यानी वे लोग सभी पदार्थ को प्राप्त होते हैं ॥ ४ । ५ ॥

इति श्रीबृहत्सामुद्रिके पण्डितशक्तिधरसंकलितं भाषाभाष्यं समाप्तिमगादिति शास्त्रम् ॥

इति सामुद्रिकशास्त्रस्य पूर्वीर्थं प्रथमोऽङ्कः समाप्तं पफाण ॥





सामुद्रिकशास्त्रम्

पूर्वार्धः
द्वितीयोऽङ्कः सटीकः ।

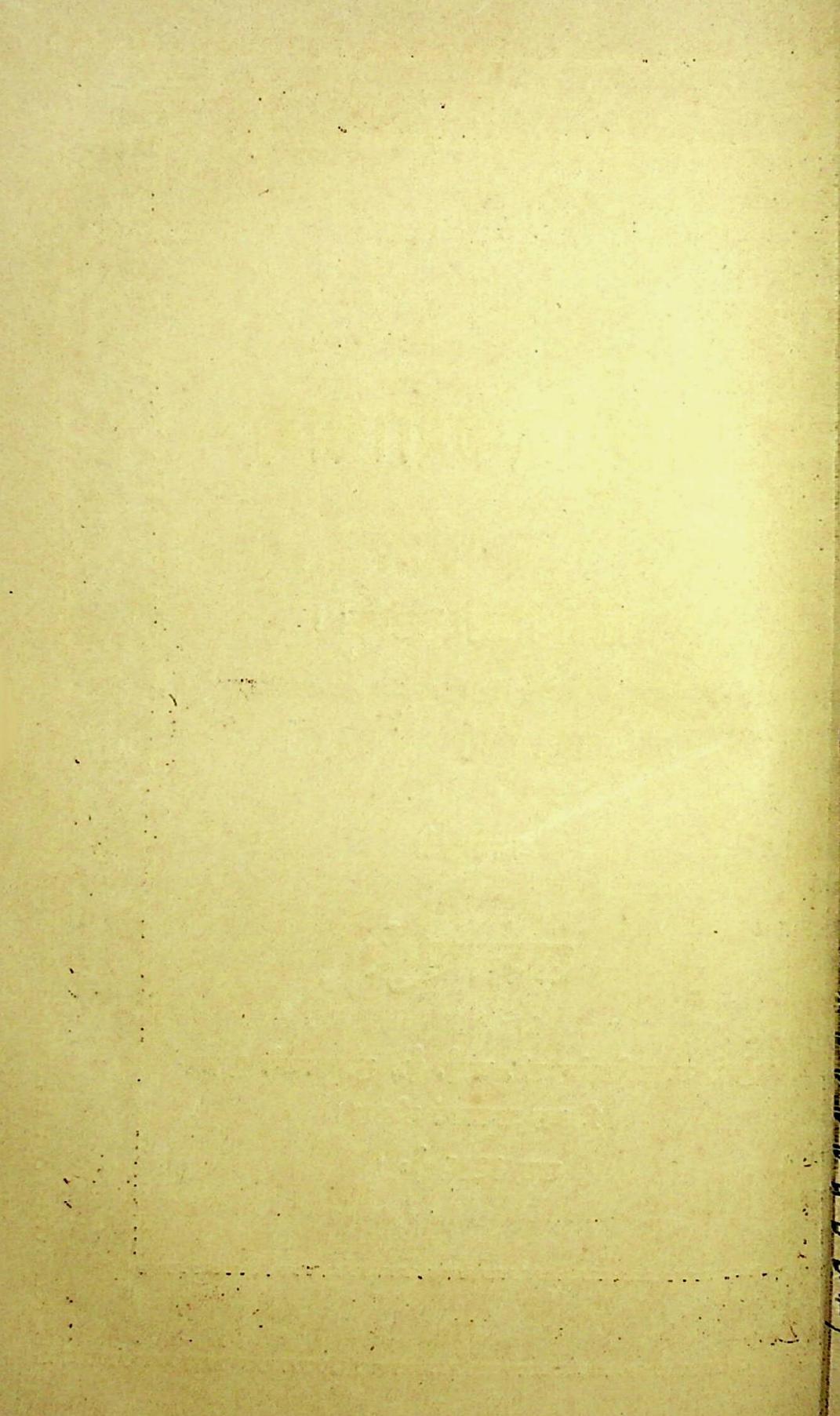
पण्डितवरशक्तिभरशुद्धसंगृहीतम्—श्रीमद्रायवहादुर
प्रयागनारायणभार्गवेण सर्वसुखाय
स्वकीयव्ययेन
प्रथमावृत्तौ

लक्ष्मणपुरे

नाना भगवान्नाच भारतव वी. ए., उपर्युक्तेष्ट इत्युपाधिधारिणः प्रबन्धन
मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., मुद्रणालये मुद्राप-
यित्वा प्राकाश्यं नीतम् ।

सन् १९१६ ई० ।

अस्त्वाधिकारः सर्वधास्त्वाधीन एव रक्षितः ।



अथ सामुद्रिकशास्त्रस्य पूर्वार्द्धे द्वितीयाङ्कस्य सूचीपत्रम् ।

विषयः	पृष्ठाङ्कः	विषयः	पृष्ठाङ्कः
प्रकृताचरणम् १	वालाद्यवस्थानिर्णयम् १४
अंगुलिज्ञानमाह १	जलाशयाद्यधिवासान् १४
करतलग्रहस्थितिज्ञानम् २	धातुमूलादिज्ञानम् १५
ग्रहणां चिह्नानि २	दीप्ताद्यवस्थाक्रमम् १५
करतलद्वादशराशिस्थितिज्ञानम् ३	तात्रादिवर्णज्ञानम् १५
प्रेषादिनामानि ३	द्रव्यादीनि १६
कालाङ्गे मेषादीनां वासमाह ४	माणिक्यादिज्ञानम् १६
उदाहरणम् ५	वस्त्राणि, प्रागाद्यधीशान् १६
मीनादिस्वरूपाएयाह ६	विश्रादिजातिक्रमम् १७
प्रेषादीनामधिवासानाह ६	पुरुषादिज्ञानमाह १७
प्रेषादीनां हस्तादिसंज्ञानि ७	मज्जाद्यधिपानाह १७
घुणोदयादिसंज्ञानि ७	लवणादिरसादीनाह १८
चतुष्पदादिसंज्ञानि ८	उच्चादिज्ञानमाह १८
दिवारात्रिवलम् ८	मूलत्रिकोणानि १८
प्रत्युमूलजीवचिन्ता ८	ग्रहणां फलविचारे विशेषम् १९
प्रेषादिभ्यश्चिन्ताज्ञानम् ९	ग्रहणां विफलत्वमाह १९
वर्णज्ञानम् ९	वालाद्यवस्थाज्ञानम् १९
अन्धवधिरादिज्ञानम् ९	रव्यादिग्रहणां स्वरूपाणि २०
नक्षादिवर्णज्ञानम् ९	चन्द्र-भौम-बुध-गुरुस्वरूपम् २१
वृथाणि १०	भृगुशनिस्वरूपम् २१
प्रेषादिचिह्नानि १०	ग्रहवधमाह २१
प्राधीशानाह ११	ग्रहणां मित्रादीन्याह २१
ग्रहणां शरीरविभागमाह ११	स्थिरादिसंज्ञान्याह २२
वालात्मादिज्ञानमाह ११	ग्रहणामीक्षणमाह २२
उजादिज्ञानम् १२	रव्यादिग्रहेभ्यः फलविचारमाह २३
पूर्णदीनां नामानि १२	कारकानाह २४
रेण्ज्ञानम् १३	अरिष्टदायकानाह २४
काशकादिज्ञानम् १३	ग्रहणां व्रष्णाएयाह २४
प्रापादिज्ञानम् १३	ग्रहणामिरिष्टरत्वमाह २४
घुणोदयादिज्ञानम् १४	शवि-चन्द्र-कुन्ज-बुधकृतदोषानाह २५
वैहगादिस्वरूपाशि १४	गुरुभृगुकृतदुखान्याह २६

विषया:	पृष्ठांकाः	विषया:	पृष्ठांकाः
शनिराहुकेतुशुतदोषानाह २६	चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह ?
पुत्रलाभार्थमुपायमाह २८	पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् १०
आदिपथ्यान्तफलदायकानाह २७	पुनरपि पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतल-	
फलतारतम्बमाह २७	फलमाह ?
करतलरेखाज्ञानमाह २८	पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् १०
करतलभग्नरेखामाह २९	पोडशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ?
परमायुरेखादिफलमाह २६	चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ?
एकादशलक्षणयुतकरतलफलमाह २०	पोडशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ?
त्रयोदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ३२	पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ?
चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ३४	चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ?
त्रयोदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ३७	पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् १८
पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ३८	त्रयोदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् १८
पुनरपि पञ्चदशलक्षणयुतकरतलफलम्	४२	पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ?
पोडशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ४४	चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ?
द्वादशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ४७	पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् १८
सप्तदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ५०	त्रयोदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ?
चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ५३	दशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ?
पुनरपि चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलम्	५५	एकादशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ?
पोडशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ५८	अंग्रेजिमताज्जन्मवारमासादिज्ञानम् १४
द्वादशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ६१	महाराष्ट्राणां मते करतलफलमाह ?
चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ६३	नखफलानि १४
पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ६६	नस्स्थचिद्घृलम् ?
पोडशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह ६८	गुरुस्थानफलम् ?
पुनरपि पोडशलक्षणाङ्कितकरतलफलम्	७१	आयुष्यरेखाफलम् ?
चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ७४	सौभाग्यरेखाफलम् ?
पुनरपि चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलम्	७७	मात्ररेखाफलम् ?
पोडशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ७९	उर्ध्वरेखाफलम् ?
पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ८२	सूर्यरेखाफलम् ?
चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ८५	बलरेखाफलम् ?
सप्तदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ८७	बेलास्किवरेखाफलम् ?
पुनरपि सप्तदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम्	९०	गर्ढलरेखाफलम् ?
द्वादशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ९३	गणिवन्धस्तरेसाफलम् ?
पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलम् ९६	इति सामुद्रिकपूर्वद्वितीयाङ्कस्यसूचीषत्रम् १६

पूर्व

(१)

चित्रनं०१

कान्तिया
अनालिका
वृथमा
तिरुनी

कान्तिया
अनालिका
वृथमा
तिरुनी

देवी

अङ्गस्थ

पाञ्चमी

देविमोहनो
२१४

अं.

मं.

तं.

चित्रनं०२

चित्रनं०२

नू. मू. मू. कू.
बू. मू. मू. बू. हू.
मातृदेवी भास्त्रल
मातृदेवी भास्त्रल
चंद्र चंद्र चंद्र चंद्र
मिल तेल या भास्त्रल
मु.

कं.

अं.

मं.

तं.

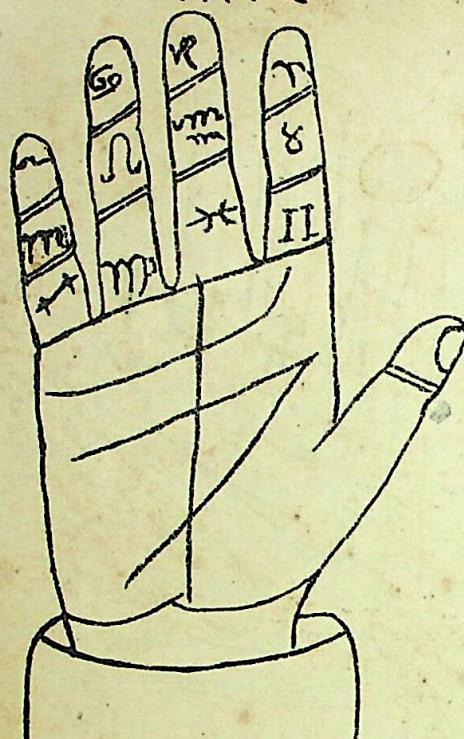
चित्रनं०३

चित्रनं०३

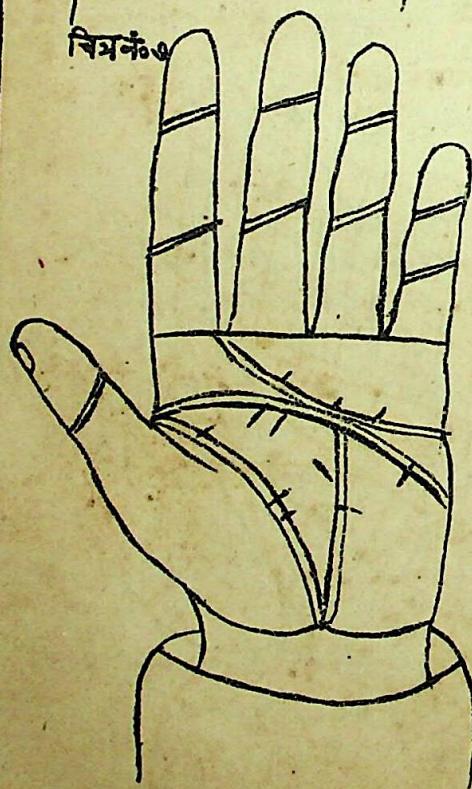
उल्ला
उल्ला
संहं
संहं
जूम
जूम
रुम
रुम
लिप्त
लिप्त

जूवदेवी पा
मातृदेवी.

चित्र नं-५



चित्र नं-६



चित्र नं-७



चित्र नं-८

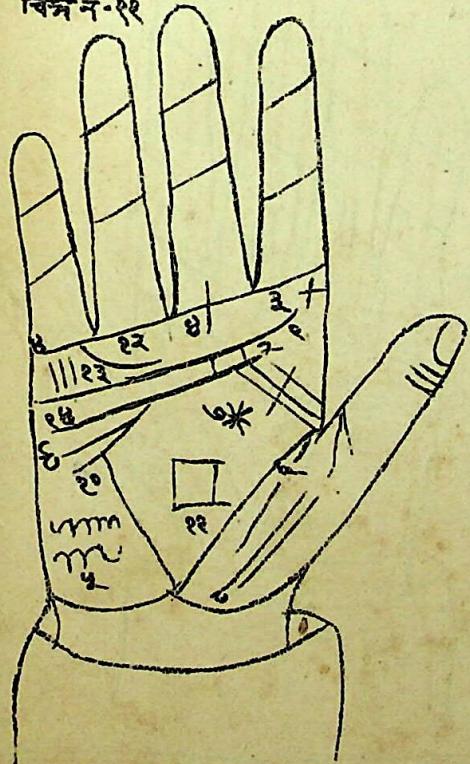


(३)

चित्रनं०६

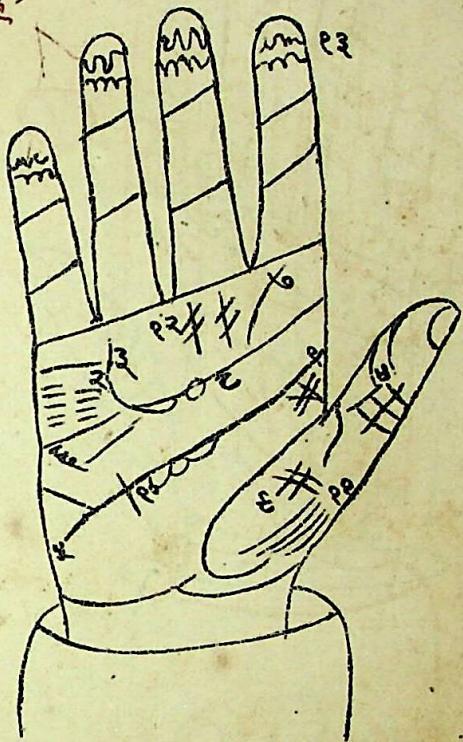


चित्रनं०१

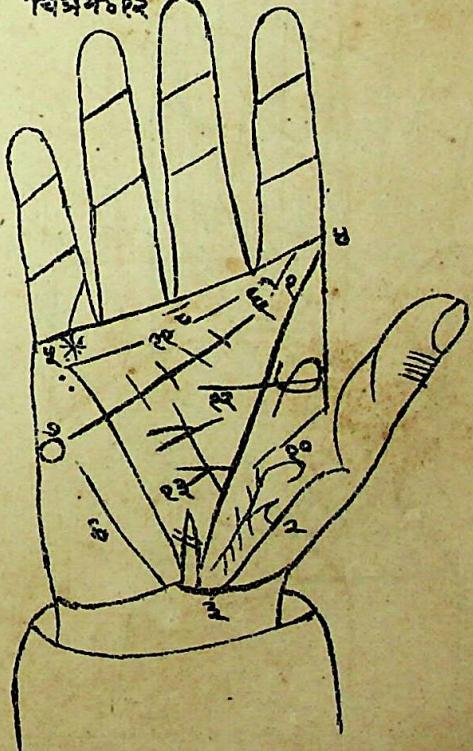


कुमाराश्वरी
विलह-

चित्रनं०१०

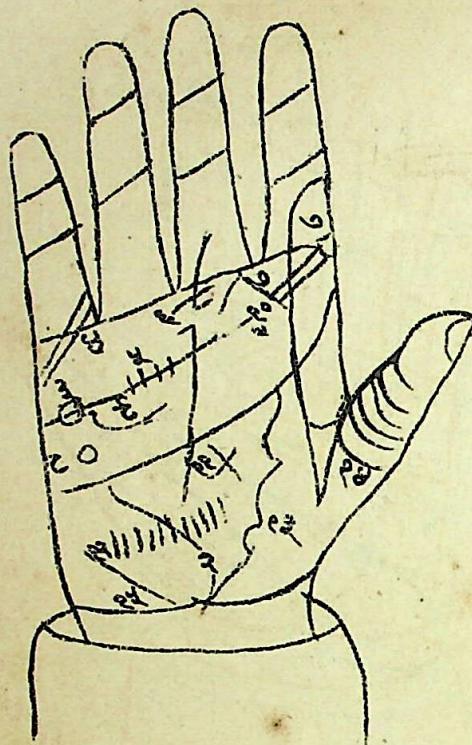


चित्रनं०१२

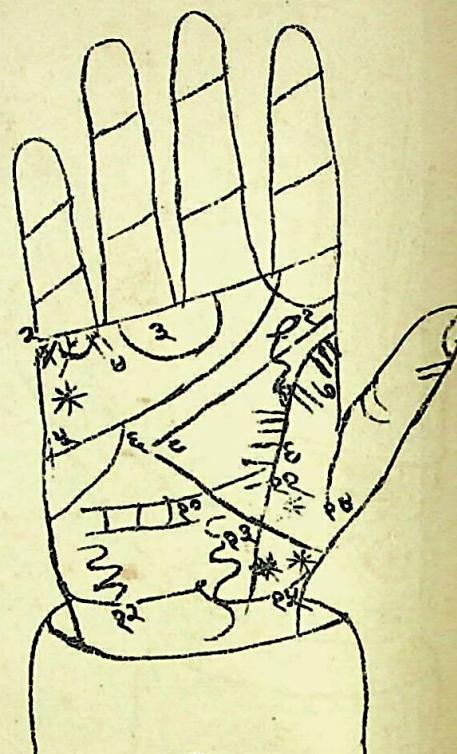


१३

चित्रनं०१३



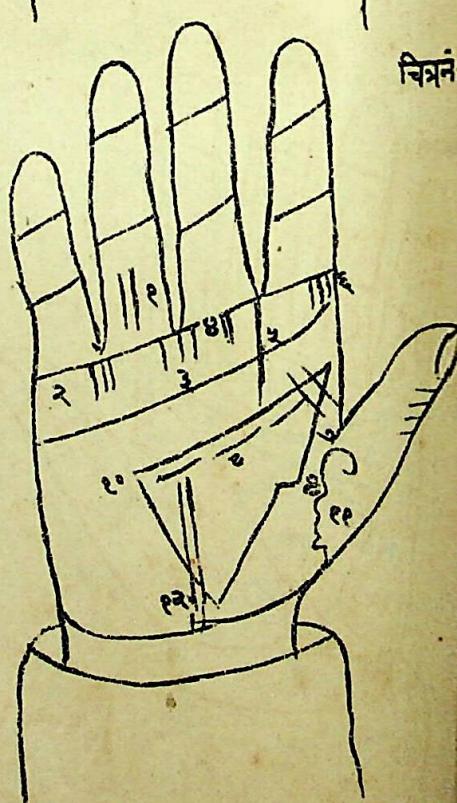
चित्रनं०१४



चित्रनं०१५

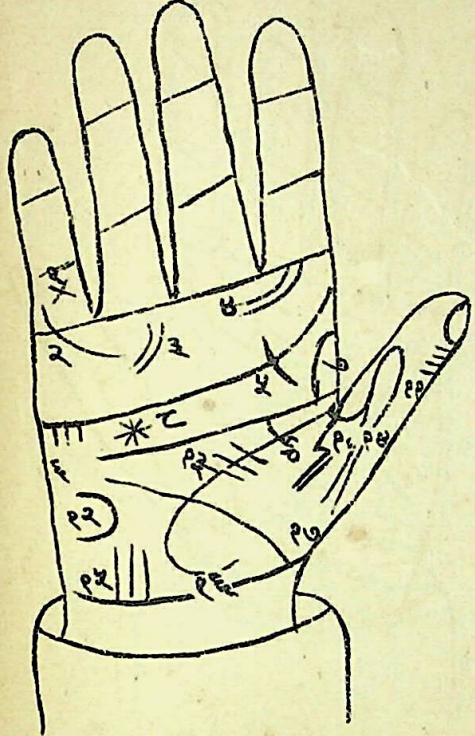


चित्रनं

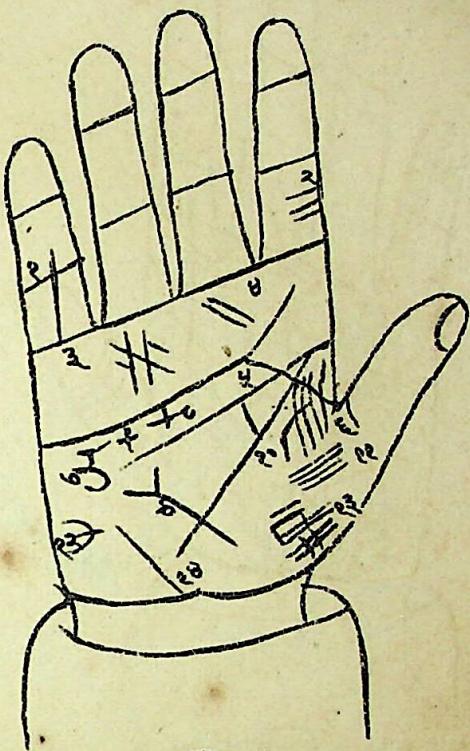


(४)

चित्रनं-१७



चित्रनं-१८



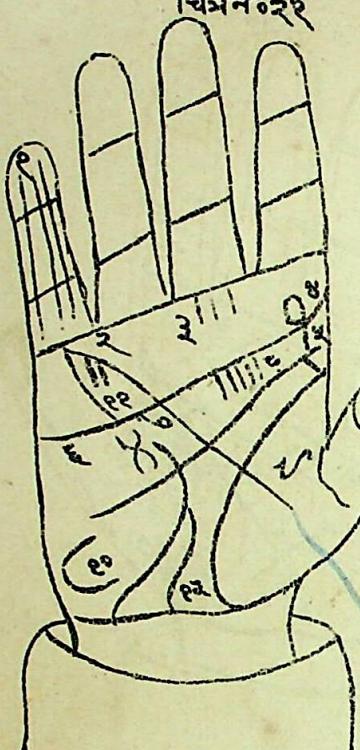
चित्रनं-१९



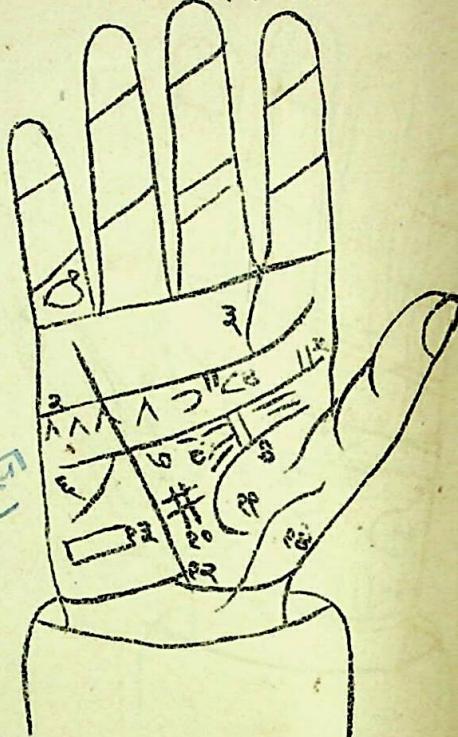
चित्रनं-२०



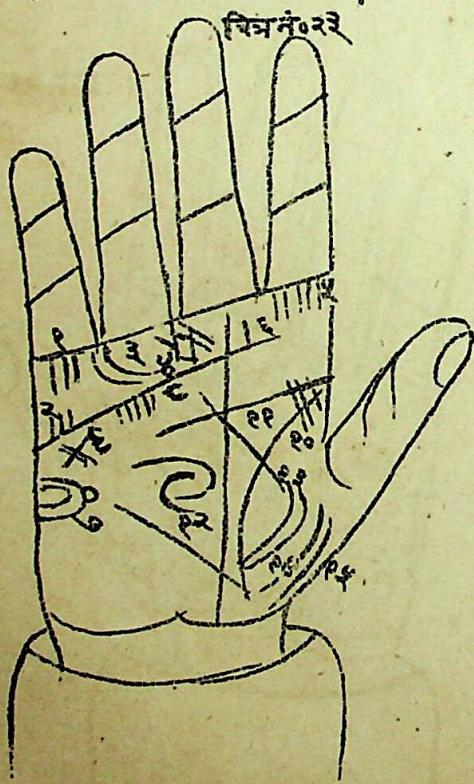
चित्रनं०२१



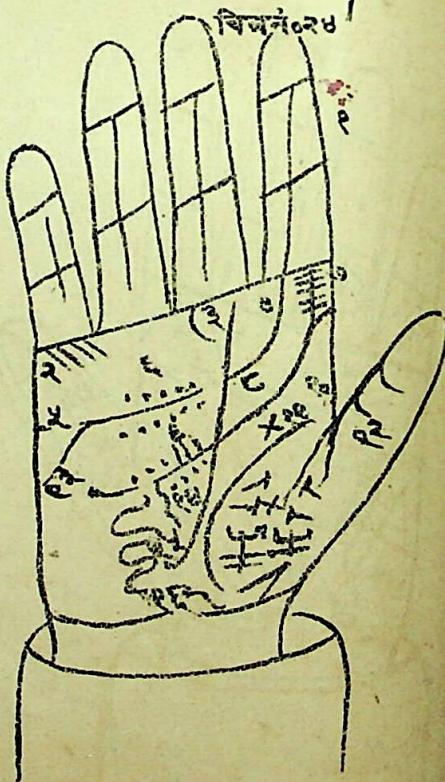
चित्रनं०२२

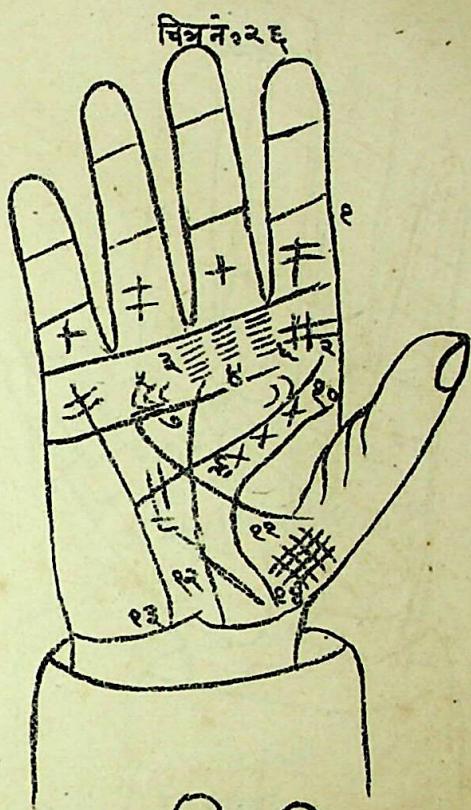
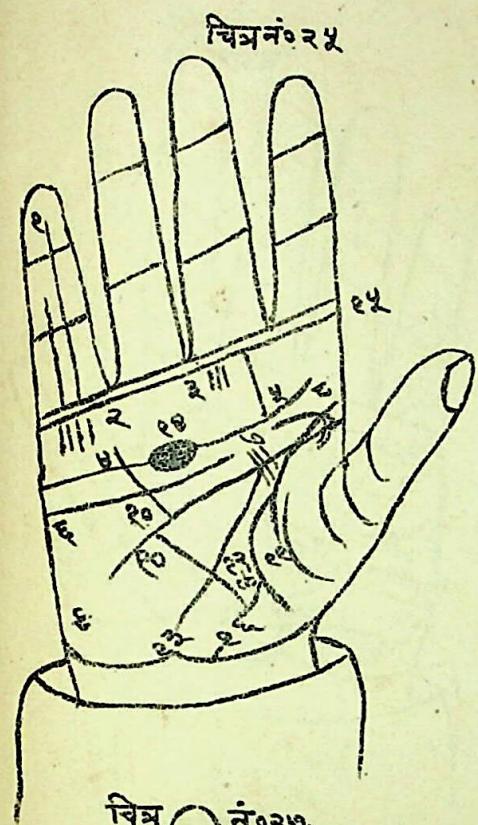


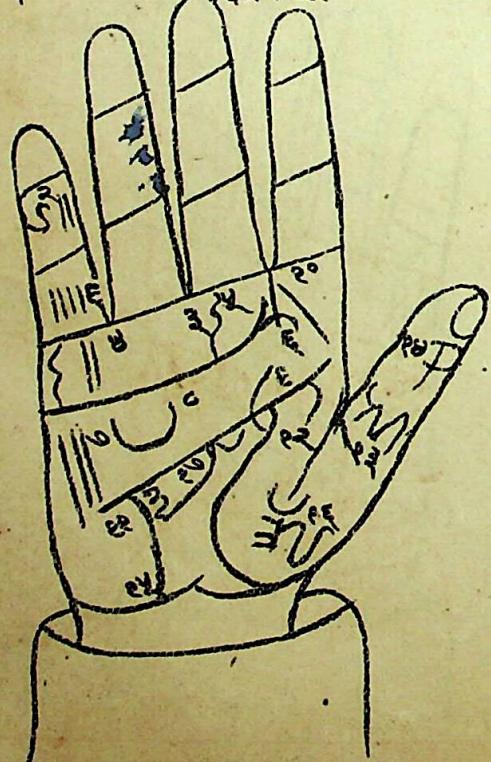
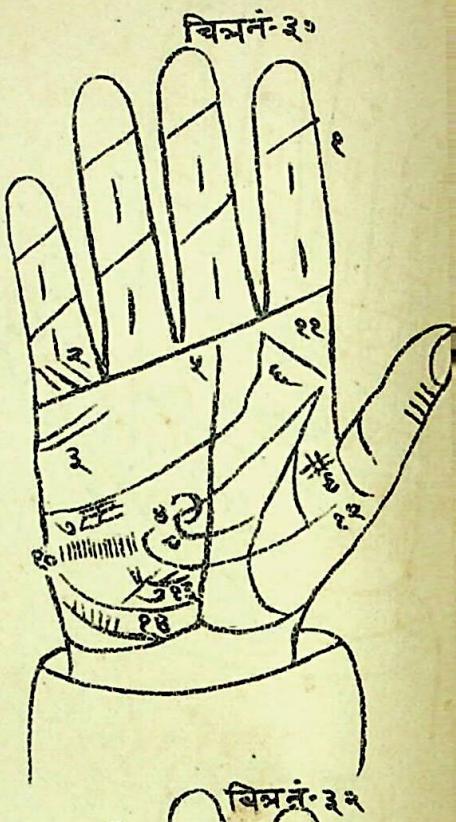
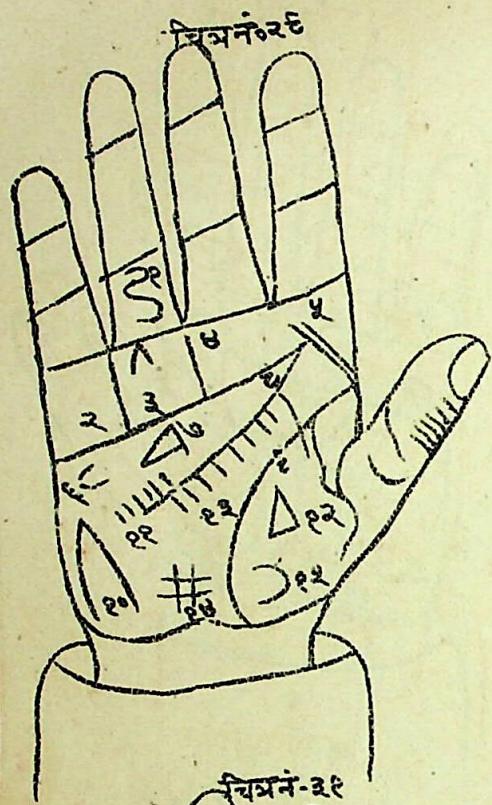
चित्रनं०२३

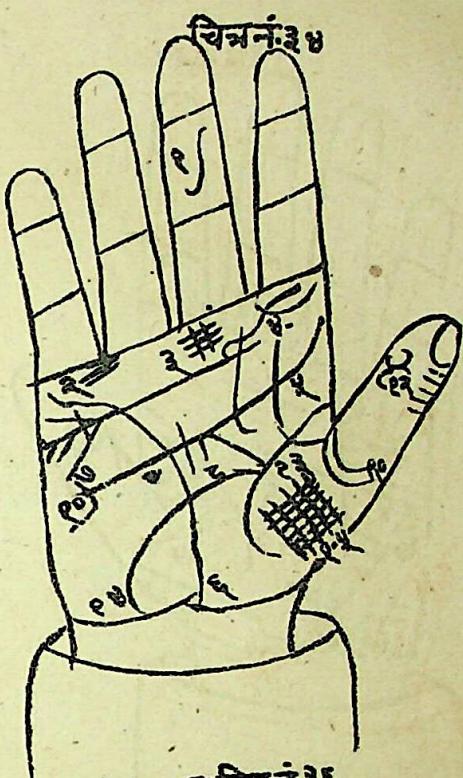
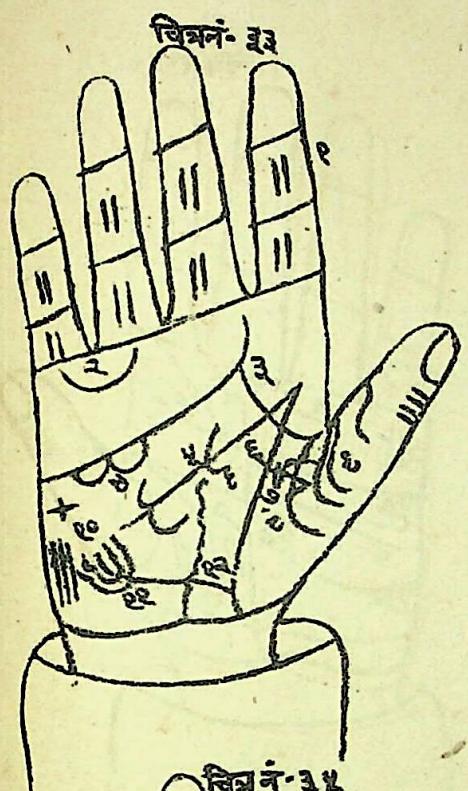


चित्रनं०२४

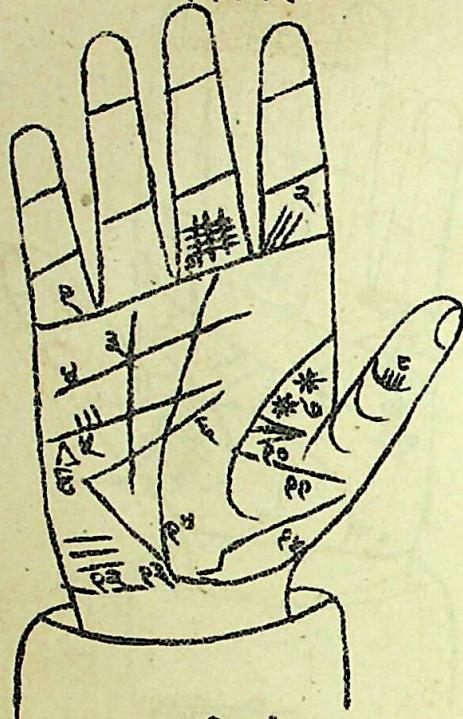




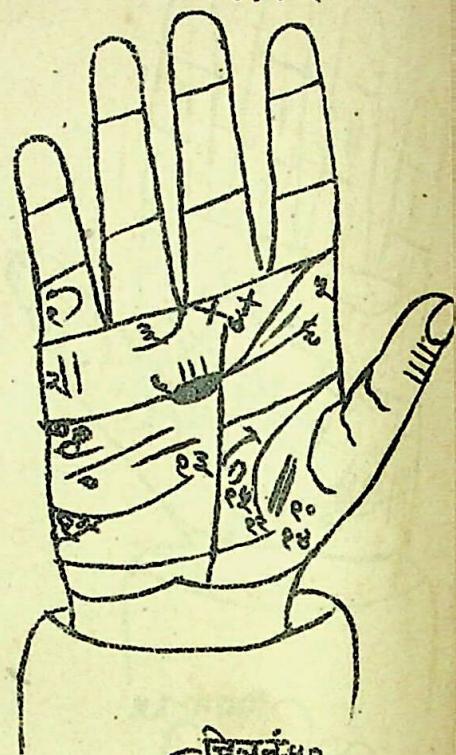




विभन्न कंडू



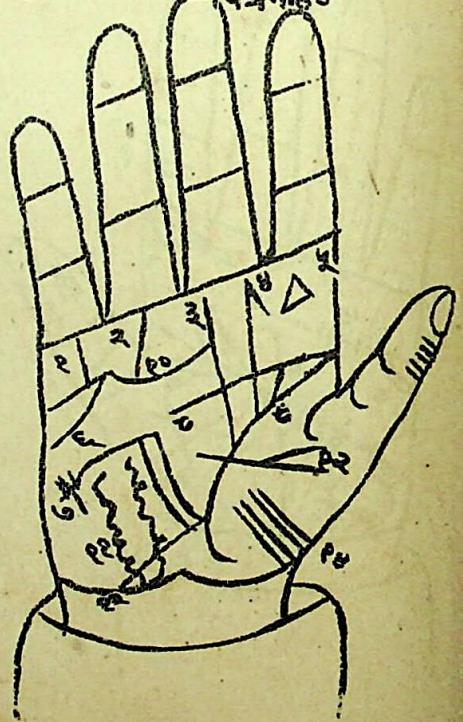
विभन्न कंडू

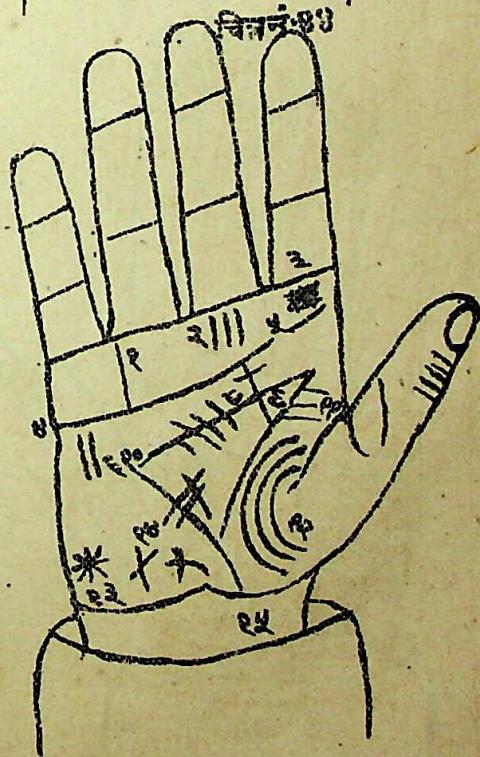
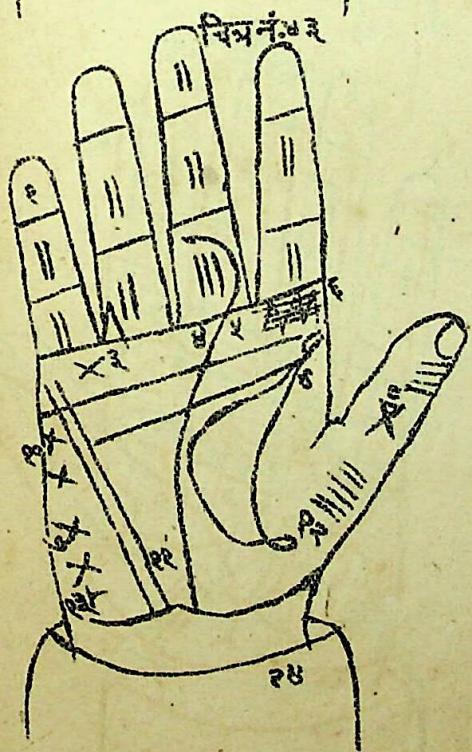
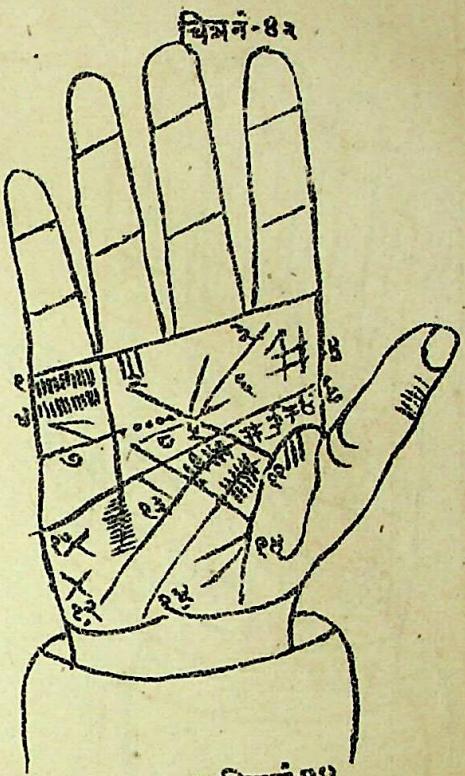
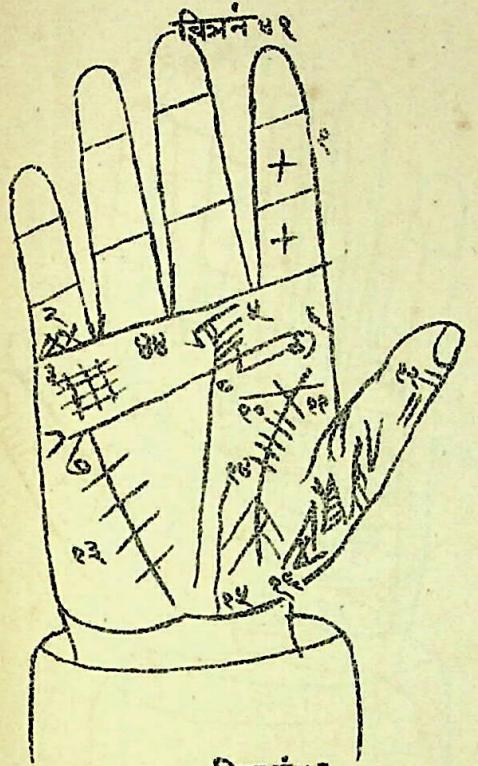


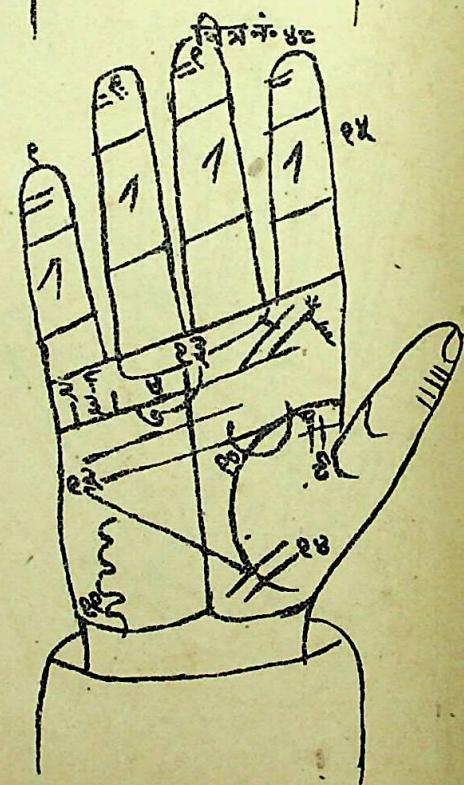
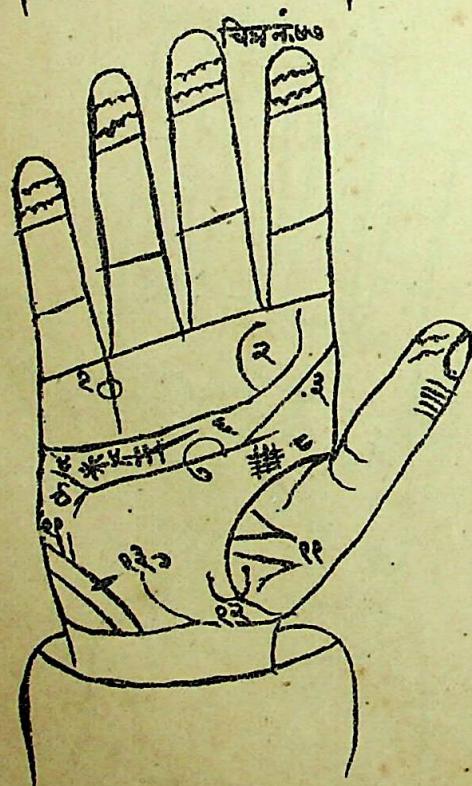
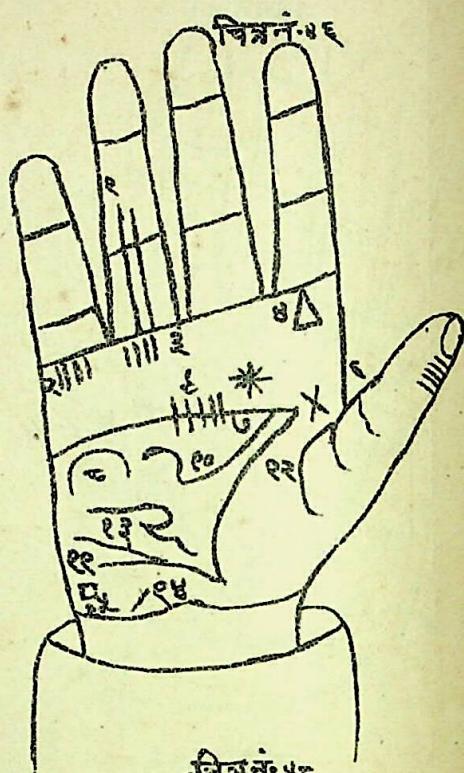
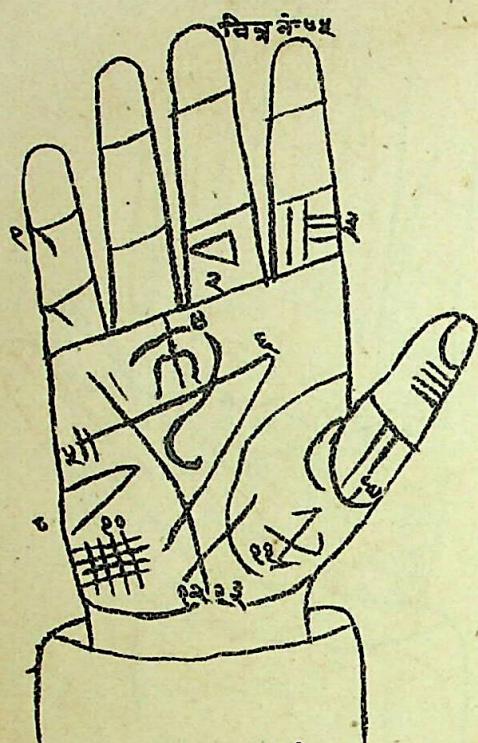
विभन्न कंडू

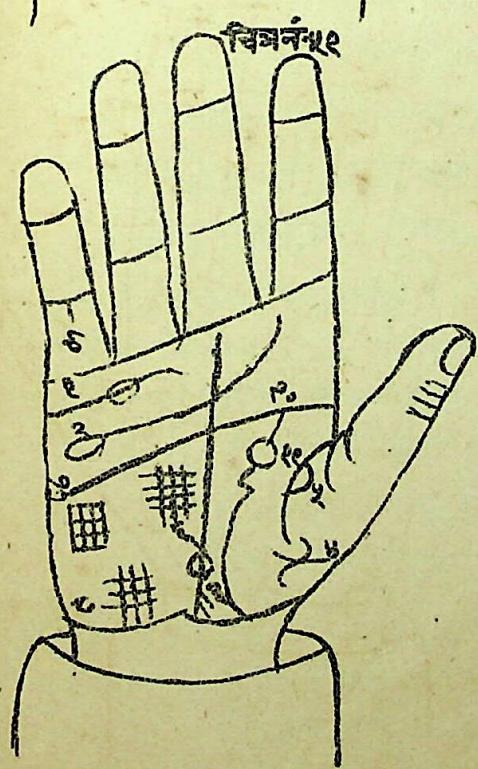
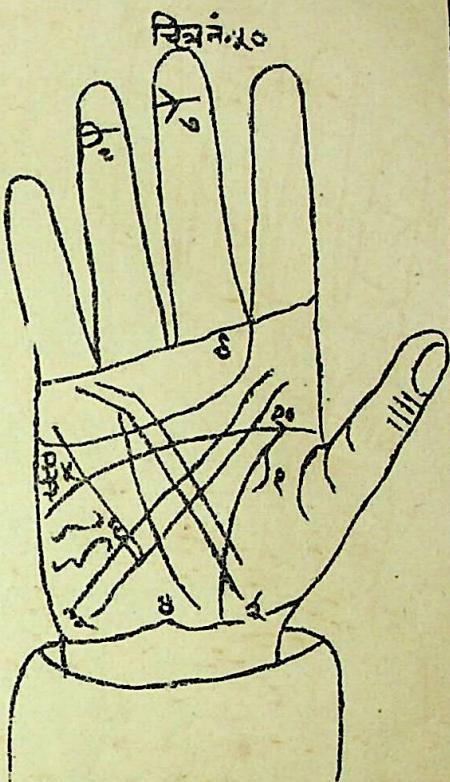
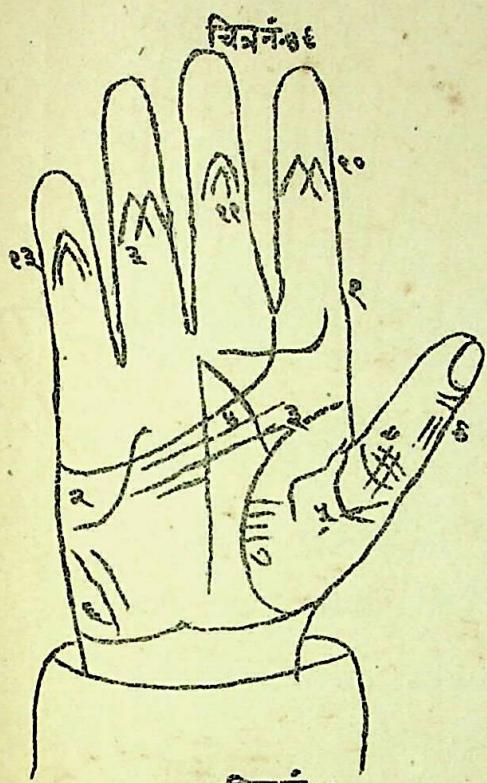


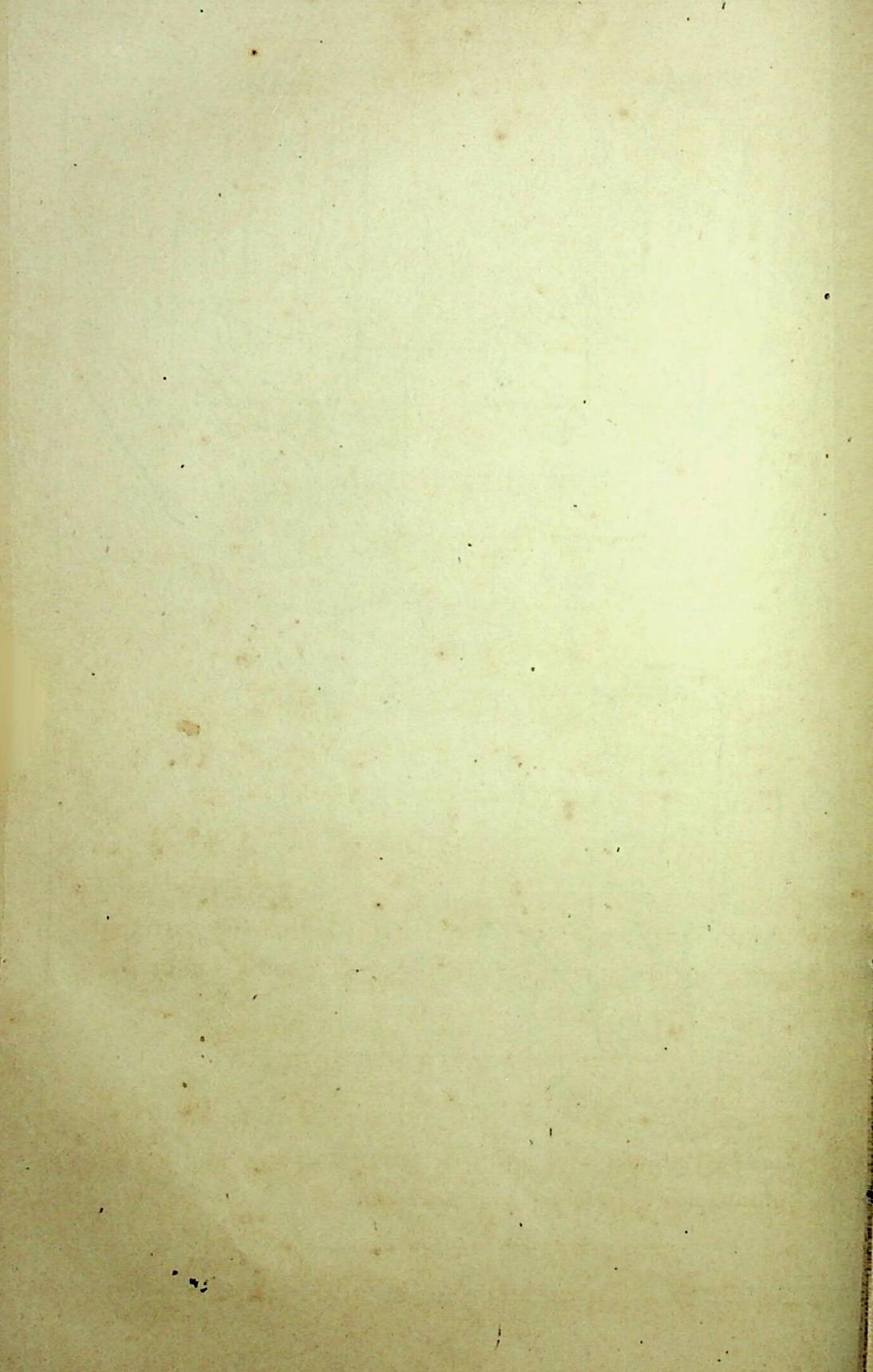
विभन्न कंडू













अथ सामुद्रिकशास्त्रस्य पूर्वार्द्धे हस्तेखालक्षणम् सोदाहरणं द्वितीयाङ्कमाह ॥

मङ्गलाचरणम् ॥

शान्तं शान्तिकरं सदा सुखकरं सर्वाधिपं शर्मदं
कान्तं कान्तिकरं कलाधरधरं धर्म्य धरेशं परस् ।
नित्यानन्दकरं महाभयहरं सौन्दर्यरत्नाकरं
वन्देऽहं सकलेश्वरं सुखवं सर्वार्थसिद्ध्यै शिवम् ॥ १ ॥

शान्तरूपी, शान्तिकारी, सदासुखकारी, सबों के नायक, कल्याणदायक, कमनीय-
रूपधारी, कान्तिकारी, कलाधरधारी, धर्मी, धरेश, परेश, नित्यानन्दकारी, महाभयहारी,
मुन्द्रता के रत्नाकर, कलाओं समेत जनों के ईश्वर, देवताओं में प्रधान भगवान् शिवजी
मी मैं सर्वार्थसिद्धि के लिये बन्दना करता हूँ ॥ १ ॥

आदौ पाणतलव्याख्या भग्यते मुनिसंमता ।

श्रूयतां देवि, देवेशि ! समाधाय मनोमलम् ॥ २ ॥

पहले पाणितल की व्याख्या जोकि मुनियों के संमत है सो कही जाती है इसलिये
वहो देवि, देवेशि ! अपने अमल मनको सावधानकर सुनिये ॥ २ ॥

अथ तावत्करतले अङ्गुलिज्ञानमाह—

अङ्गुल्यः करशाखाः स्युः पुंस्यंगुष्ठः प्रदेशिनी ।

मध्यमानामिका चापि कनिष्ठा चेतिताः क्रमात् ॥ ३ ॥

अँगुलियां हाथों की शाखायें होती हैं उनमें अँगुष्ठ (अँगूठा) जोकि पुंलिङ्ग में रहता है व पहली अँगुली जानना चाहिये दूसरी प्रदेशिनी यानी तर्जनी अँगुली कहाती है व मध्य तीसरी अँगुली कहाती है व अनामिका चौथी अँगुली होती है और कनिष्ठा पाँचवीं अँगुली कहाती है इस क्रम से उन पाँचों अँगुलियों को जानना चाहिये ॥ ३ ॥ (देखो चित्र नं०

० लूप
१ भद्र
२ भेषज
३ तुप
४ वृक्षसति
५ वृक्ष
६ शटि

करतलग्रहस्थितिज्ञानमाह—

कनिष्ठामूलगः सौम्यो ह्यनामामूलगो रविः ।
मध्यमामूलगो मन्दस्तर्जनीमूलगो गुरुः ॥ ४ ॥
मातृपित्रोरुपर्यारः शुक्रो ह्यंगुष्ठमूलगः ।
मातृपित्रोरुपश्चन्द्रो ज्येया खेटस्थितिः क्रमात् ॥ ५ ॥

कनिष्ठा की मूल (जड़) में बुध रहता है व अनामा की मूल में सूर्य रहते हैं व मध्य की मूल में शनैश्चर रहता है व तर्जनी की मूल में वृहस्पति रहते हैं व माता पिता की रेत के ऊपर व मध्य में मङ्गल रहता है व अँगूठा की मूल में शुक्र रहते हैं और माता पिता की रेता के नीचे चन्द्रमा रहता है इस क्रम से ग्रहों के उच्चों की स्थिति (स्थान) जानना चाहिये ॥ ४ । ५ ॥ (देखो चित्र नं० २)

अथ ग्रहाणां चिह्नान्याह—

वृत्ताकारं ० रवेश्चिह्नं चन्द्रस्याप्यर्द्धचन्द्रकम् ॥ १ ॥
एतादृशं ॥ कुजस्यैव बुधस्या ॥ पीदृशंमतम् ॥ ६ ॥
गुरोश्चा ॥ पीदृशं ज्येयं भृगोश्चा ॥ पीदृशं स्मृतम् ।
शनैश्चा ॥ पीदृशं प्रोक्तं विद्धिवेदपारगैः ॥ ७ ॥

वृत्ताकार ० सूर्यका चिह्न होता है व चन्द्रमा का अर्ध चन्द्राकार ॥ १ ॥ ऐसा चिह्न मङ्गलका होता है व बुध का चिह्न ॥ ६ ॥ ऐसा मानागया है और वृहस्पति का ॥ ७ ॥ ऐसा चिह्न जानना चाहिये व शुक्र का भी ॥ १ ॥ ऐसा चिह्न मानागया है और शनैश्चर का ॥ २ ॥ ऐसा चिह्न वेदपारगामी क्रिदानों को जानना चाहिये ॥ ६ । ७ ॥ (देखो चित्र नं० ३)

१—इलाएङ्गीय सामुद्रिकचेतुणां मते दुधस्य मर्करी संज्ञा, सूर्यस्य सनसंज्ञा, शनैश्चरस्य संज्ञा, गुरोज्ञपिटरसंज्ञा, मंगलस्य मासंसंज्ञा, शुक्रस्य वीनसंज्ञा, चन्द्रस्य मूनसंज्ञा कथितों

पूर्वाञ्चेऽ द्वितीयाङ्कः ।

करतलद्रादशराशिस्थितिज्ञानमाह —

अद्गुलीपु च सर्वासु पर्वत्रयमुदाहृतम् ।
 तर्जनीपर्वके चाद्ये मेषस्तिष्ठति सर्वदा ॥ ८ ॥
 द्वितीये च वृषो ज्ञेयस्तृतीये मिथुनं स्मृतम् ।
 अनामापर्वके चाद्ये सदा तिष्ठति कर्कटः ॥ ९ ॥
 द्वितीये सिंहको ज्ञेयस्तृतीये कन्यका स्थिता ।
 कनिष्ठापर्वके चाद्ये तुला ज्ञेया मनीषिभिः ॥ १० ॥
 द्वितीये वृश्चिको ज्ञेयस्तृतीये धनुरुच्यते ।
 मध्यमापर्वके मुख्ये मृगस्तिष्ठति सर्वदा ॥ ११ ॥
 द्वितीये कुम्भको ज्ञेयस्तृतीये मीनको मतः ।
 एवं द्वादशराशीनां स्थितिः प्रोक्ता मया प्रिये ॥ १२ ॥

अहो प्रिये ! समस्त अँगुलियोंके बीच तीन २ पर्वैं कही हैं उनमें तर्जनी की पहली पर्व में मेष सदैव रहता है व दूसरी पर्व में वृष जानना चाहिये व तीसरी पर्व में मिथुन कहा जाता है व अनामिका की पहली पर्व में हमेशा कर्क रहता है व दूसरी पर्व में सिंह जानना चाहिये व तीसरी पर्व में कन्या स्थित रहती है व कनिष्ठा की पहली पर्व में विद्वानों को तुला जानना चाहिये व दूसरी पर्व में वृश्चिक को जानना चाहिये व तीसरी पर्व में धन कहा जाता है व मध्यमा की पहली पर्व में मकर सर्वदा टिका रहता है व दूसरी पर्व में कुम्भ जानना चाहिये और तीसरी पर्व में मीन माना जाता है इस प्रकार बारह राशियों का स्थितिक्रम मैंने कहा ॥ ८ । १२ ॥ (देखो चित्र नं० ४)

मेषादिनामान्याह—

मेषाजविश्वक्रियतुम्बुराद्या वृषोक्षगोतावुरगोकुलानि ।
 द्वन्द्वं नृयुग्मं जुतुमं यमं च युगं तृतीयं मिथुनं वदन्ति ॥ १३ ॥

मेष, अज, विश्व, क्रिय, तुम्बुर और आद्य ये मेषराशि के नाम हैं वृष, उक्षा, गो, नातुर और गोकुल ये वृषराशि के नाम हैं-द्वन्द्व, नृयुग्म, जुतुम, यम, युग, तृतीय और मिथुन ये मिथुनराशि के नाम आचार्यों ने कहे हैं ॥ १३ ॥

कुलीरकर्कटककर्कटाख्याः करणीरवः सिंहमृगेन्द्रलोयाः ।

पाथोनकन्यारमणीतरण्यस्तौलीवणिकजूकतुलाधटाश्च ॥ १४ ॥

कुलीर, कर्कटक और कर्कट ये कर्कराशि के नाम हैं, करणीरव, सिंह मृगेन्द्र और ये सिंहराशि के नाम हैं, पाथोन, कन्या, रमणी और तरणी ये कन्याराशि के नाम तौलि, वणिक, जूक, तुला और धट ये तुलाराशि के नाम हैं ॥ १४ ॥

अल्पष्टभं वृथिककौर्पिकीया धन्वी धनुश्चापशरासनानि ।

मृगो मृगास्यो मकरश्च नक्षः कुम्भो घटस्तोयधराभिधानः ॥ १५ ॥

अल्पष्टभ, वृथिक, कौर्पि और कीट ये वृथिकराशि के नाम हैं, धन्वी, धनु, चाप शरासन ये धनराशि के नाम हैं मृग, मृगास्य, मकर और नक्ष ये मकरराशि के नाम हैं कुम्भ और तोयधर ये कुम्भराशि के नाम हैं ॥ १५ ॥

मीनालिमत्स्यपृथुरोमभषा वदन्ति
दस्तादिकर्षनवपादयुताः क्रियाद्याः ।

चक्रस्थितादिविचरादिननाथसंख्या

क्षेत्रक्षराशिभवनानि भसंस्थितानि ॥ १६ ॥

मीन, अलि, मत्स्य, पृथुरोम और भष ये मीनराशि के नाम आचार्यों ने कहे हैं अशिवन्यादि नक्षत्रों के नव चरणों से संयुत व आकाश में चलनेवाले व चक्र में हुए मेषादिक वारह राशियाँ होती हैं व राशियों में भलीभाँति टिके हुए क्षेत्र, ऋक्ष, रवि व भवन ये स्थानों के नाम होते हैं ॥ १६ ॥

✓ कालाङ्गे मेषादीनां वासमाह—

कालात्मकस्य च शिरो मुखदेशबाहु

हत्कुक्षिभागकटिवस्तिरहस्यदेशः ।

ऊरु च जानुयुगलं परतस्तु जघ्ने

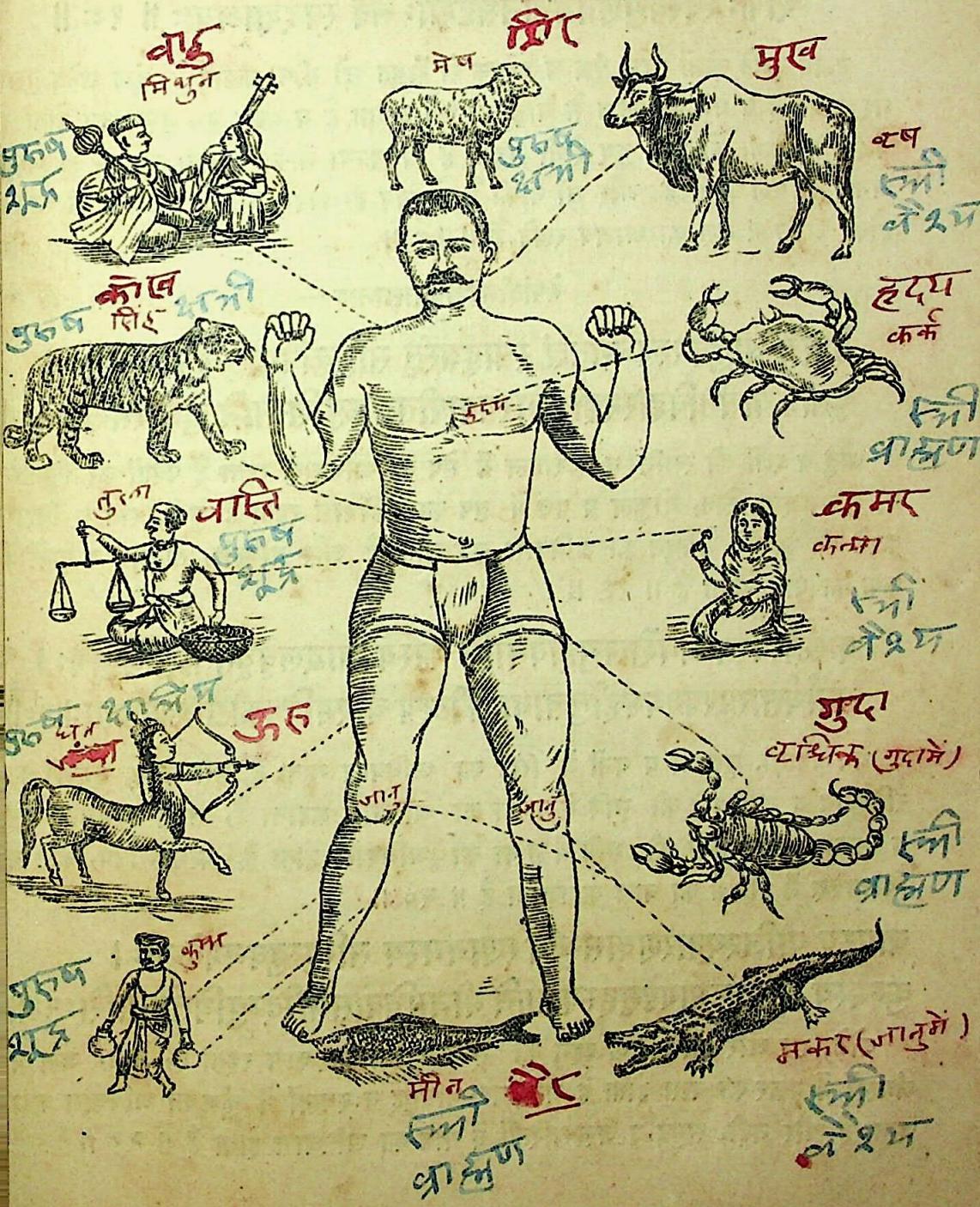
पादद्वयं क्रियमुखावयवाः क्रमेण ॥ १७ ॥

पूर्वार्द्धे द्वितीयाङ्कः ।

५

कालात्मा के शीश में मेष रहता है व मुखदेश में दृप रहता है व वाहुओं में मिथुन
व हृदय में कर्के व कोखियों में सिंह व कमर में कन्या व वस्तिदेश में तुला व गुदा में
वृथिक व ऊरुओं में धन व जानुओं में मकर व जंघाओं में कुम्भ व पैरों में मीन रहता है
ये क्रम से मेषादिकों के अवयव कहाते हैं ॥ २७ ॥

उदाहरणमाह—



मीनादिस्वरूपाण्याह—

व्यत्यस्तोभयपुच्छमस्तकयुतौ मीनौ सकुंभो नर-
स्तौलीचापधरस्तुरंगजघनो नक्रो मृगास्यो भवेत् ।
वीणाब्दं सगदं नृयुग्ममबला नौस्था ससस्थानला
शेषाः स्वस्वगुणाभिधानसदृशाः सर्वे स्वदेशाश्रयाः ॥ १८ ॥

*उलटे पलटे दोनों तरफ पूँछ व मस्तक से संयुत दो मीन कहाते हैं कुंभ समेत तु नर कहाते हैं व धन जघनदेश से घोड़े का रूप धारता है व मकर मृग मुखबाला होता व मिथुन वीणा को धारे हुए रोगी रहता है व कन्या नौका में बैठी हुई धान्य स
अनल से पूर्ण रहती है और जो बाकी है वे सब ही अपने २ गुण व नाम के सम
होकर अपने २ देश का आश्रय रखते हैं ॥ १८ ॥*

मेषादीनामधिवासानाह—

*मेषस्य धातुकररत्नधरातलं स्यादुक्षस्तु सानुकृष्णिगोकुलकाननानि ।
द्यूतक्रियारतिविहारमहीयुगस्यवापीतटकपुलिनानि कुलीरराशेः॥१९॥*

*धातु व रक्तों की खानि व धरातल में मेष का अधिवास रहता है पर्वतों का किन्ना
या सम भूभाग, खेत, गोकुल व बन में दृष्ट का अधिवास रहता है जुत्ताँ, रति व विह
करने की भूमि में मिथुन का अधिवास कहाजाता है और बावली, तालाब व पुलों
कर्क का वास रहता है ॥ १९ ॥*

करठीरवस्य धनशैलगुहावनानि षष्ठ्य शाढ़लवधूरतिशिल्पभूमिः ।
सर्वार्थसारपुरपरयमहीतुलायाःकीटस्य चाश्मविषकीटबिलप्रवेशाः॥२०॥

*धने पहाड़ों, गुहाओं व वनों में सिंह का अधिवास रहता है, हरी धास, वहुआँ व
रतिस्थान व कारीगरी की भूमि में कन्या का अधिवास कहाता है, समग्र अर्थसार, उ
व बाजार या दूकानों की भूमि में तुला का अधिवास होता है, पत्थर, विष, कीट
बिलप्रवेश में दृश्यक का वास कहाजाता है ॥ २० ॥*

वापस्य वाजिरथवारणवासभूमिरेणाननस्य सरिदम्बुवनप्रदेशाः ।
कुम्भस्य तोयघटभाण्डगृहस्थलानि मीनाधिवाससरिदम्बुधितोयराशिः॥२१॥

*घोड़े, रथ और हाथियों के रहने की भूमि में धन का वास रहता है, नदी, जल
जंगलों में मकर का वास होता है जल, घट, भाण्डगृह व स्थलों में कुंभ का अधिवास
जाता है और नदी, समुद्र व जलराशियों में मीन का अधिवास होता है ॥ २१ ॥*

मेषादीनां हस्वादिसंज्ञान्याह—

हस्वागोजघटास्समाघृगनृयुक्तचापान्त्यकर्कटका
दीर्घावृश्चिककन्यकाहरितुलामेषादिपुंयोषितौ ।
प्रागादिक्रियगोनृयुक्टकभान्येतानि कोणान्विता
न्याहुः क्रूरशुभौ चरस्थिरतरद्वन्द्वानि तानि क्रमात् ॥ २२ ॥

वृष, मेष, कुम्भ ये हस्व संज्ञक हैं, मकर, मिथुन, धन, मीन और कर्क ये समसंज्ञक हैं, वृश्चिक, कन्या, सिंह और तुला ये दीर्घसंज्ञक हैं और मेषादिक राशियां पुरुष व स्त्रीसंज्ञक कहाती हैं यानी मेष पुरुष, वृष स्त्री, मिथुन पुरुष, कर्क स्त्री, सिंह पुरुष, कन्या स्त्री, तुला पुरुष, वृश्चिक स्त्री, धन पुरुष, मकर स्त्री, कुम्भ पुरुष, मीन स्त्री संज्ञक कहाती है और मेष वृष, मिथुन व कर्क ये चार २ पूर्वादि दिशाओं में रहती हैं यानी मेष पूर्व में रहता है व वृष दक्षिण में व मिथुन पश्चिम में व कर्क उत्तर में रहता है और सिंह पूर्व में व कन्या दक्षिण में व तुला पश्चिम में व वृश्चिक उत्तर में बसता है एवं धन पूर्व में व मकर दक्षिण में व कुम्भ पश्चिम में व मीन उत्तर में बसता है और मेषादिक बारह राशियाँ कूर व सौम्य संज्ञक होती हैं यानी मेष कूर, वृष शुभ कहाता है मिथुन कूर, कर्क सौम्य, सिंह कूर, कन्या सौम्य,, तुला कूर व वृश्चिक सौम्य व धन कूर, मकर सौम्य. व कुम्भ कूर व मीन सौम्य कहाजाता है और मेषादिक बारह राशियाँ चर, स्थिर, द्विस्वभावसंज्ञक कहाती हैं यानी मेष. चर, वृष. स्थिर, मिथुन. द्विस्वभाव, कर्क. चर, सिंह. स्थिर व कन्या. द्विस्वभाव, तुला. चर, वृश्चिक. स्थिर, धन. द्विस्वभाव, मकर. चर, कुम्भ. स्थिर और मीन. द्विस्वभावसंज्ञक कहाजाता है ॥ २२ ॥

पृष्ठोदयादिसंज्ञान्याह—

वीर्योपेतानिशिवृषनृयुक्तकर्कचापाजनका
हित्वा युग्मं भवनमपरे पृष्ठपूर्वोदयाश्च ।
शेषाः शीर्षोदयेदिनबला श्रेष्ठता राशयस्ते
मीनाकारद्वयमुभयतः काललग्नं समेति ॥ २३ ॥

वृष, मिथुन, कर्क, धन, मेष और मकर ये राशियाँ रात्रिमें बलवान् कहाती हैं इनमें मेथुनराशि को छोड़कर अन्य राशियाँ पृष्ठोदयसंज्ञक होती हैं और सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक व कुम्भ ये राशियाँ दिनमें बली व श्रेष्ठ होकर शीर्षोदय कहाती हैं और मीन-राशि दिन व राति में बलवान् व उभयोदयी होकर काललग्न को प्राप्त होता है ॥ २३ ॥

१—सौम्याधिलग्ने यदिवा स्ववर्गे शीर्षोदये सिद्धिमुपैति कार्यम् । अतो विपर्यस्तमसिद्धे रेतुं कुच्छ्वेण संसिद्धिकरं विमिश्रम् ॥ १ ॥

मीनालिकर्कटमृगः सलिलाभिधानास्तोयाश्रयाघटवधूयुगगोपसंज्ञाः ।
निस्तोयभूतलचराः क्रियचापतौलिकण्ठीखाश्च बहवः प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥

मीन, वृश्चिक, कर्क और मकर ये जलसंज्ञक कहाते हैं, कुम्भ, कन्या, मिथुन और ये जलका आश्रय रखते हैं और मेष, धन, तुला और सिंह ये निर्जल भूतल में चरते ऐसा बहुत से सन्तलोग कहते हैं ॥ २४ ॥

चतुष्पदादिसंज्ञान्याह—

चापापरार्धहरिगोमकरादिमेषा मीनास्थिता वलयुताश्च चतुष्पदाख्याः ।
कन्यानृयुग्मघट्टौलिशरासनाद्यालग्नान्वितायादिनराद्विपदावलाख्याः ॥२५॥

धनका परार्ध, सिंह, वृप, मकर का पूर्वार्ध, मेष और मीन ये वलवान् होते हुए चापद संज्ञावाले होकर टिकते हैं और कन्या, मिथुन, कुम्भ और धनका पूर्वार्ध ये नरवधारी द्विपद कहाते हैं और यदि लग्न में टिके हों तो वलवान् कहे जाते हैं ॥ २५ ॥

मृगापरार्धन्त्यकुलीरसंज्ञा जलाभिधाना वलिनश्चतुर्थे ।

जलाश्रयो वृश्चिकनामधेयः ससप्तमस्थानगतो वली स्थात ॥ २६ ॥

मकर का परार्ध, मीन और कर्क ये जलचर कहाते हैं यदि चौथे घरमें टिके हों वलवान् कहे जाते हैं और वृश्चिक जलाश्रयी कहाता है यदि वह सतये घरमें बैठा हो वलवान् होता है ॥ २६ ॥

दिवारात्रिवलमाह—

केन्द्रं गतोहि द्विपदो वलाख्यश्चतुष्पदाः केन्द्रगता रजन्याम् ॥

कीयस्तु सर्वे यदि कण्ठकस्थाः सन्धिद्ये वीर्ययुता भवन्ति ॥ २७ ॥

दिन के समय केन्द्र में बैठाहुआ द्विपद वलवान् होता है व रात्रिके समय केन्द्र में दिन हुए चतुष्पद वलवान् होते हैं और समस्त कीटसंज्ञक यदि केन्द्र में टिके हों तो दोनों स्थियों में वलवान् होते हैं ॥ २७ ॥

धातुमूलजीवचिन्ताज्ञानमाह—

धातुर्मूलं जीवमित्याद्वर्ण्या मेषादीनामोजयुग्मे तथैव ।

स्वर्णच्छातुर्मृत्तिकान्तं तृणान्तं वृक्षान्मूलं जीवकूटः सजीवः ॥ २८ ॥

मेषादिकों के सम व विषम में धातु, मूल और जीव इन चिन्ताओं को आयों ने का है वहाँ सोने से लेकर मृत्तिकार्पणत धातु कहाती है व वृक्ष से लेकर तिनुकार्पण मूल कहाता है और जो जीव समुदाय देखा जाता है वह जीव कहाजाता है ॥ २८ ॥

मेषादिभ्यश्चिन्ताज्ञानमाह—

मेषे च द्विपदां चिन्ता वृषे चिन्ता चतुष्पदाम् ।

मिथुने गर्भचिन्ता च व्यवसायस्य कर्कटे ॥ २६ ॥

सिंहे च जीवचिन्ता स्यात् कन्यायां च द्वियास्तथा ।

तुले च धनचिन्ता च व्याधिचिन्ता च वृश्चिके ॥ ३० ॥

चापे च धनचिन्ता स्यान्मकरे शत्रुचिन्तनम् ।

कुम्भे स्थानस्य चिन्ता स्यान्मीने चिन्ता च दैविकी ॥ ३१ ॥

मेष में द्विपदों की चिन्ता होती है, वृष में चौपायों की चिन्ता, मिथुन में गर्भचिन्ता, कर्क में रोजगार की चिन्ता, सिंह में जीवों की चिन्ता, कन्या में लुगाइयों की चिन्ता, तुला में धनचिन्ता, वृश्चिक में व्याधिचिन्ता, धन में धनचिन्ता, मकर में शत्रुचिन्ता, कुम्भ में स्थानचिन्ता और मीन में दैवीचिन्ता जानना चाहिये ॥ २६ । ३१ ॥

वर्णज्ञानमाह—

मीनालिकर्कटा विप्राश्चापाजहरयो नृपाः ।

कुम्भयुग्मतुलाः शूद्रा वैश्या वृषभगङ्गनाः ॥ ३२ ॥

मीन, वृश्चिक और कर्क ये ब्राह्मण कहाते हैं; धन, मेष और सिंह ये क्षत्रिय कहाते हैं; कुम्भ, मिथुन और तुला ये शूद्रवर्ण होते हैं तथा वृष, मकर और कन्या ये वैश्यवर्ण कहे जाते हैं ॥ ३२ ॥

अन्यविधिरादेज्ञानमाह—

महानिशान्धाः क्रियगेम्भोशा मध्यंदिने कर्कटयुग्मकन्याः ।

पूर्वाङ्काले बधिरौ तुलाली धन्वी मृगाख्यश्च तथापराङ्गे ॥ ३३ ॥

मेष, वृष, मकर ये महानिशा में अन्ये रहते हैं; कर्क, मिथुन और कन्या ये मध्याह्न में मन्थे कहाते हैं; तुला, वृश्चिक ये पूर्वाह्न में बहिरे होते हैं तथा धन और मकर ये अपराह्न में बहिरे होते हैं ॥ ३३ ॥

मृगाननश्चापधरश्च पञ्च सन्धिद्वये नाशकरौ भवेताम् ।

स्याद्वक्षसन्धिः कट्कालिमीनभान्तं प्रगण्डान्तमिति प्रसिद्धम् ॥ ३४ ॥

मकर व धन ये पंगुसंज्ञक कहाते हैं जोकि दोनों सन्धियों में नाशकारक होते हैं; कर्क,

वृथिक और मीन पर्वत ऋक्षसन्धि कहाती है जोकि भान्त व प्रगण्डान्त इस नाम
विख्यात है ॥ ३४ ॥

रक्षादिवर्णज्ञानमाह—

रक्षगौरशुककान्तिपाट्लाः पाण्डुचित्रस्त्रिलकाङ्गनाः ।

पिङ्गलः शबलवभुपाण्डुरास्तूवरादिभवनेषु कल्पिताः ॥ ३५ ॥

मेष रक्ष, दृष्टि गौर, मिथुन हरित, कर्क श्वेतरक्ष, सिंह पाण्डु, कन्या विष्णु, उत्तरा, वृथिक सुवर्णसहश, धन पिंगल, मकर कर्वुर, कुम्भ वभु और मीन स्वच्छ
कहाता है ये मेषादि वारह राशियों में कल्पित होते हैं ॥ ३५ ॥

द्रव्याएयाह—

वस्त्राद्यं शालिमुख्यं वनफलनिचयः कन्दलीमुख्यधान्यं

त्वक्सारं मुद्रपूर्वं तिलवसनमुखं त्विक्षुलोहादिकं च ।

शस्त्राश्वं काङ्गनाद्यं जलजनिकुसुमं तोयजातं समस्तं

द्रव्यारयाहुः क्रियादिष्वबलवलयुतेष्वत्पताधिक्यभांजि ॥ ३६ ॥

वस्त्रादि मेष की द्रव्य है, शालि मुख्य दृष्टि की व वन्यफलों का समुदाय मिथुन
कन्दली मुख्यधान्य कर्क की व त्वक्सार सिंह की व सूंग आदि कन्या की, तिल
तुला की, इक्षु लोहादि वृथिक की व शस्त्राश्व धन की व सुवर्ण आदि मकर की व
जातपुष्प कुम्भ की व जल से उपजी समस्त द्रव्य मीन की है और यदि मेषादिक
व अबली हों तो पूर्वोक्त द्रव्य कम या अधिक होती हैं ॥ ३६ ॥

करतले मेषादिचिह्नान्याह—

मेषस्यैतादृशं चिह्नं वृपस्यापीदृशं मतम् ।

द्वन्द्वस्यैतादृशं ज्ञेयं कर्कस्यापीदृशं स्मृतम् ॥ ३७ ॥

सिंहस्यैतादृशं ख्यातं कन्यायाश्चेदृशं मतम् ।

धटस्यापीदृशं व्यक्तं वृश्चिकस्य ततःपरम् ॥ ३८ ॥

चापस्यैतादृशं गीतं मृगस्यापीदृशं मतम् ।

कुम्भस्यैतादृशं प्रोक्तं मीनस्यैतादृशं बुधैः ॥ ३९ ॥

मेष राशि का ऐसा चिह्न होता है व दृष्टि का ऐसा निशान माना
मिथुन का ऐसा निशान जानना चाहिये और कर्क का ऐसा निशान का
सिंहराशि का ऐसा निशान विख्यात है व कन्या का ऐसा निशान मा-

व तुलाका [] ऐसा निशान कहाता है तदनन्तर वृश्चिक का [] ऐसा निशान कहा जाता है व घन का [] ऐसा निशान कहाता है व मकर का [] ऐसा निशान माना है व कुम्भ का [] ऐसा निशान कहा है और मीन का [] ऐसा निशान सामुद्रिक वित्तागण परिषदों ने कहा है ॥ ३७ । ३६ ॥ (देखो चित्र नं० ५)

मेषाधीशानाह—

धराजशुक्रज्ञशशीनसौम्यसितारजीवार्कजमन्दजीवाः ।

क्रमेण मेषादिषु राशिनाथास्तदंशपाश्वेति वदन्ति सन्तः ॥ ४० ॥

मेष राशि का स्वामी मङ्गल, वृष का शुक्र, मिथुन का बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह का सूर्य, कन्या का बुध, हुला का शुक्र, वृश्चिक का मङ्गल, घन का गुरु, मकर व कुम्भ का शनैश्चर और मीन का अथिपति व अंशप वृहस्पति होते हैं ऐसा सन्तों ने कहा है ॥ ४० ॥

ग्रहाणां शरीरविभागमाह—

ग्रहाणां मण्डलं चैव शृणु वक्ष्यामि पार्वति ।

नादचक्रे स्थितः सूर्यो विन्दुचक्रे च चन्द्रमाः ॥ ४१ ॥

लोचने मङ्गलः प्रोक्ष्यो हृदि सोमसुतस्तथा ।

उदरे च गुरुश्चैव शुक्रे शुक्रस्तथैव च ॥ ४२ ॥

नाभिस्थितोथ मन्दो वै सुखे राहुस्तथा स्थितः ।

पादे पाणौ च केतुश्च शरीरे ग्रहमण्डलम् ॥ ४३ ॥

अहो पार्वतीजी ! मैं ग्रहों का मण्डल कहूंगा उसको सुनिये कि सूर्य नादचक्रमें वैठा है व चन्द्रमा विन्दुचक्र में विराजता है व मङ्गल लोचनों में रहता है व बुध हृदय में टिका है व वृहस्पति उदरमें रहते हैं व शुक्र शुक्र (बीज) में रहता है व शनैश्चर नाभि (तोंदी) में टिका रहता है व राहु सुख में राजता है और केतु हाथ व पैरों में वसता है यह शरीर में ग्रहमण्डल कहाता है ॥ ४१ । ४३ ॥

कालात्मादिज्ञानमाह—

कालस्यात्मा भास्करश्चित्तमिन्दुः सत्त्वं भौमः स्याद्वच्छन्दसूनुः ।

देवाचार्यः सौख्यविज्ञानसारः कामः शुक्रो दुःखमेवार्कसूनुः ॥ ४४ ॥

सूर्य कालका आत्मा है, चन्द्रमा काल का चित्त (दिल) है, मङ्गल बल है, बुध चन है, वृहस्पति सौख्य व विज्ञान का सार है, शुक्र कामदेव है और शनैश्चर दुःख-रूप कहाता है ॥ ४४ ॥

राजादिवानमाह—

दिनेशचन्द्रौ राजानौ सचिवौ जीवभार्गवौ ।

कुमारो वित्कुजो नेता प्रेष्यस्तपननन्दनः ॥ ४५ ॥

सूर्य व चन्द्रमा ये राजा कहाते हैं यानी सूर्य राजा व चन्द्रमा रानी कहाती है, बृहस्पति व शुक्र मन्त्री कहाते हैं, बुध कुमार व मङ्गल नेता (लेजानेवाला या सिखलानेवाला) कहाता है और शनैश्चर दास या धावन कहलाता है ॥ ४५ ॥

सूर्यादीनां नामान्याह—

हेतिः सूर्यस्तपनदिनकृद्धातुपूषारुणार्काः

सोमः शीतद्युतिरुद्धुपतिगलौ मृगाङ्केन्दुचन्द्राः ।

आरो वक्रक्षितिजरुधिराङ्गारककूरनेत्राः

सौम्यस्तारातनयबुधविद्वोधनश्वेन्दुपुत्रः ॥ ४६ ॥

हेति, सूर्य, तपन, दिनकृत, भानु, पूषा, अरुण और अर्क ये सूर्य के नाम हैं- सीतद्युति, उद्धुपति, गलौ, मृगाङ्क, इन्दु और चन्द्र ये चन्द्रमा के नाम कहाते हैं; आर, क्षितिज, रुधिर, अङ्गारक और कूरनेत्र ये मङ्गल के नाम कहाते हैं और सौम्य, तारान बुध, वित्त, वोधन और इन्दुपुत्र ये बुध के नाम कहेजाते हैं ॥ ४६ ॥

मन्त्री वाचस्पतिगुरुसुराचार्यदेवेज्यजीवाः

शुक्रः काव्यः सितभृगुसुताच्छ्वास्फुजिहानवेज्याः ।

ब्रायामूनुस्तरणितनयः कोणशन्यार्किमन्दा

राहुससर्पासुरकणितमः सैंहिकेयागवश्च ॥ ४७ ॥

मन्त्री, वाचस्पति, गुरु, सुराचार्य, देवेज्य और जीव ये बृहस्पति के नाम हैं; शुक्र, सित, भृगुसुत, अच्छ्व, आस्फुजित् और दानवेज्य ये शुक्र के नाम हैं; ब्रायाम, तरणितनय, कोण, शनि, आर्क और मन्द ये शनैश्चर के नाम हैं और राहु, सर्प, अङ्गारी, वम, सैंहिकेय और अग्नि ये राहु के नाम कहाते हैं ॥ ४७ ॥

ध्वजः शिखीकैतुरिति प्रसिद्धा वदन्ति तज्ज्ञा गुलिकश्च मानिदः ।

उपग्रहा भानुमुखग्रहांशाः कालादयः कष्टफलप्रदाः स्युः ॥ ४८ ॥

क्रमशः कालपरिधिधूमार्ज्जप्रहराह्याः ।

यमकरुद्धककोदगृहपान्दृपातोपकेतवः ॥ ४९ ॥

ध्वज, शिखी, केतु, गुलिक और मान्दि ये केतु के नाम हैं ऐसा प्रसिद्ध पण्डितों ने कहा है और रव्यादि ग्रहों के अंश कालादिक उपग्रह कहाते हैं जोकि कष्टकारी फल के देनेवाले होते हैं उनको क्रम से कहते हैं कि, काल, परिधि, धूम, अर्थप्रहर, यमकटक, कोदण्ड, मान्दि, पात और उपकेतु ये उपग्रहों के नाम कहेजाते हैं ॥ ४८ ॥ ४६ ॥

वर्णज्ञानमाह—

भानुः श्यामललोहितद्युतितनुशचन्द्रसिताङ्गो युवा
दूर्वाश्यामलकान्तिरिन्दुतनयः संरक्षगौरः कुजः ।
मन्त्री गौरकलेवरः सिततनुः शुक्रोसिताङ्गः शनि-
श्चानीलाङ्गतिदेहवानहिपतिः केतुर्विचित्रद्युतिः ॥ ५० ॥

सूर्य श्याम व लाल वर्णवाला होता है व चन्द्रमा सफेद अङ्गवाला होकर जवान रहता है व बुध दूर्वा के समान श्याम अङ्गवाला कहाता है व मङ्गल लाल व गोरा कहा जाता है, बृहस्पति गोरे रंगवाला होता है व शुक्र सफेद अङ्गवाला, शनैश्चर काला व राहु नीला और केतु विचित्र वर्णवाला कहलाता है ॥ ५० ॥

प्रकाशकादिज्ञानमाह—

प्रकाशकौ शीतकरप्रभाकरौ तारा ग्रहाः पञ्च धरासुतादयः ।
तमःस्वरूपौ शिखिसिंहिकासुतौ शुभाः शशिज्ञामस्वन्द्यभार्गवाः ॥ ५१ ॥

चन्द्रमा व सूर्य ये प्रकाशक कहाते हैं व मङ्गल आदि पांच ग्रह तारा कहाते हैं व राहु, केतु ये दोनों तमोरूपी कहेजाते हैं चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति और शुक्र ये शुभग्रह कहलाते हैं ॥ ५१ ॥

पापादिज्ञानमाह—

शुभग्रह

क्षीणेन्दुमन्दरविशदुशिखिक्षमाजाः पापास्तु पापयुतचन्द्रसुतश्च पापः । पापग्रह
तेषामतीव शुभदौ गुरुदानवेज्यौ क्रूरौ दिवाकरसुतक्षितिजौ भवेताम् ॥ ५२ ॥

क्षीणचन्द्रमा, शनैश्चर, सूर्य, राहु, केतु और मङ्गल ये पापग्रह कहाते हैं व पापग्रहों समेत बुध पापी कहाता है उनके बीच में बृहस्पति और शुक्र अत्यन्त शुभदायक होते हैं और शनैश्चर, मङ्गल ये दोनों कूरग्रह कहलाते हैं ॥ ५२ ॥

चन्द्रस्य वलावलमाह—

शुक्रादिकानि दशकेहनिमध्यवीर्य-

१ मासस्य शुक्रप्रतिपत्प्रवृत्तेः पूर्वं शशी मध्यबलो दशाहे । श्रेष्ठो द्वितीयेष्यबलस्तृतीये
स्त्रौस्यैस्तु इष्टो वलवान्त्वैव ॥ १ ॥

शाली द्वितीयदशकेतिशुभप्रदोऽसौ ।

चन्द्रस्तृतीयदशके बलवर्जितस्तु

सौम्येक्षणादिसहितो यदि शोभनः स्यात् ॥ ५३ ॥

शुद्धपक्ष की परेवा से लेकर दशमीतक चन्द्रमा मध्यम वीर्यवाला रहता है दशमी लेकर कृष्णपक्ष की पञ्चमी पर्यन्त यह चन्द्रमा शुभदायक होता है और पञ्चमी से लेकर अमावस्या पर्यन्त चन्द्रमा क्षीण वलवाला कहाता है यदि शुभग्रहों से वृष्टि व संयुत हो शुभदायक होजाता है ॥ ५३ ॥

पृष्ठोदयादिज्ञानमाह—

रव्यारराहुमन्दाश्च पृष्ठेनोद्यन्ति सर्वदा ।

शिरसा शुक्रचन्द्रज्ञा जीवस्तुभयतो ब्रजेत् ॥ ५४ ॥

सूर्य, मङ्गल, राहु और शनैश्चर ये ग्रह सदैव पीठ से उदय करते हैं व शुक्र, चन्द्र और बुध ये शीश से उदय करते हैं और वृहस्पति दोनों से उदय करते हैं ॥ ५४ ॥

विहगादिस्वरूपाण्याह—

दिवाकरज्ञौ विहगस्वरूपौ सरीसृपाकारयुतः शशाङ्कः ।

पुरन्दराचार्यसितौ द्विपादौ चतुष्पदौ भानुसुतक्षमाजौ ॥ ५५ ॥

सूर्य व बुध ये दोनों पक्षीरूप कहाते हैं व चन्द्रमा सरीसृपरूपी होता है, वृहस्पति शुक्र ये दोनों द्विपद कहाते हैं और शनैश्चर व मङ्गल ये दोनों चतुष्पदसंज्ञक होते हैं ॥ ५५ ॥

बालाच्यवस्थानिर्णयमाह—

बालो धराजः शशिजः कुमारक्षिंशद्गुरुः षोडशवत्सरः सितः ।

पञ्चाशदकों विधुरबदससतिः शताब्दसंख्याः शनिराहुकेतवः ॥ ५६ ॥

मङ्गल बालक, बुध कुमार, बृहस्पति तीस वर्षवाला, शुक्र सोलह वर्षवाला, पचास वर्षवाला, चन्द्रमा सत्तरि वर्षवाला कहाता है और शनैश्चर, राहु व केतु ये वर्षवाले होते हैं ॥ ५६ ॥

जलाशयादिवासानाह—

जलाशयौ चन्द्रसुरारिवन्द्यौ बुधालयग्रामचरौ गुरुज्ञौ ।

कुजाहिमन्दध्वजवासरेशा भवन्ति शैलाटविसंचरन्तः ॥ ५७ ॥

चन्द्रमा व शुक्र ये जलाशयों में वास करते हैं; वृहस्पति व बुध ये परिदृतों के वा-